رہبر ملت

منظور عالمؒ

کے چند کارہائے نمایاں

رِیاست بنام جمہوریت

محمود عالم طارق

रहबर ए मिल्लत

मन्ज़ूर आलम र.अ.

के चंद कारहा ए नुमायां

या रब दिल ए मुस्लिम को वो ज़िन्दा तमन्ना दे
जो क़ल्ब को गर्मा दे और रूह को तड़पा दे

रियासत बनाम जमहूरियत

महमूद आलम तारिक़

जुमला हुक़ूक़ बहक़ नाशिर महफ़ूज़

तफ़सीलात ए कुतुब

नाम किताब

रहबर–ए–मिल्लत **मन्ज़ूर आलम** रियासत बनाम जमहूरीयत

मुसन्निफ़– महमूद आलम तारिक़

कम्पोज़िंग– महमूद आलम तारिक़

ताबे– गणेश आर्ट प्रिंटर्स बाईस गोदाम जयपुर

सन इशाअत– अक्तूबर २०१४

तादाद– १०००

इ.मेल– matariq01@yahoo.com

मिलने का पता–बैतुल मन्ज़ूर । १०६४ राम नगर शास्त्री नगर जयपुर

इंतिसाब

हमारी

अम्मी

जिन की आँखों से भाई मियां की जुदाई का ग़म आज भी झलकता है

लेकिन अपने नवासे नवासियों ए पोते पोतियों को फलता फूलता देख कर

उन के चेहरे पर आई खुशी की चमक ख़ामोश लबों का तबस्सुम

और दिल से निकलती हज़ारों दुआएं हमारी ज़िंदगी का सरमाया हैं।

अल्लाह इन का शफ़क़त भरा साया हमारे सरों पर कायम रखे

उन को तंदरुस्त और सेहतयाब रखे

और हमें उन की ज़्यादा से ज़्यादा ख़िदमत करने की तौफ़ीक़ अता करे।

आमीन

हदया ए तशक्कुर

में इंतिहाई मशकूर व ममनून और शुक्र गुज़ार हूँ

डाक्टर सैय्यद जफ़र महमूद साहिब का जिन्होंने इस किताब की जुमला व इमला की इस्लाह की और मुक़दमा तहरीर फ़रमाया ।

आपाबी, महबूब चचा,सईद चचा,सुहेल भाई,अज़रा बाजी और अपने अज़ीज़ दोस्त ख़ालिद उबेदी का जिन्हों ने मेरी याददाश्त को ताज़गी बख़शी और वाक़यात को तर्तीब देने में मदद फ़रमाई।

नाज़रा बाजी का जिनकी भाई मियां पर तहक़ीक़ी तख़लीक़ ने मुझे भी अपनी याददाश्त के असासे को क़लमबंद करने के लिए मुतहर्रिक किया और तसनीफ़ व तालीफ़ में मदद की ।

मसूद भाई का जिन के बुक रीडर के तोहफ़े पर सैकड़ों किताबें डाउन लोड करके मैंने पढ़ीं कुछ लिखने की तरग़ीब मिली और शऊर पैदा हुआ।

रफीक़ ए हयात सारा का जिन की फ़राहम करदा सहूलतों के बाइस मुझे इस किताब की तसनीफ़ का वक़्त मिला और छोटी बहनों उमामा निगार ग़िज़ाला समीना और दीबा का जिन्हों ने इस किताब की इशाअत में मदद की भतीजी ऐमन आलम नाज़की का जिन्हों ने ब्रिटिश लाइब्रेरी लंदन से मुफ़ीद मालूमात फ़राहम कीं और अपने बच्चों निदा हिबा और बुरूज का जिन्हों ने कम्पयूटर के मुख्तलिफ़ प्रोग्राम मुझे समझाए और मुताल्लिक़ा उलझनों को रफ़ा किया और अपने दादा अब्बू की तसावीर जमा करने में मेरे मुआविन रहे ।

उन सभी ख़वातीन व हज़रात का जिन्हों ने बहुत से मुक़ामात और मरहलों पर मेरी मदद फ़रमाई।

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

मुक़दमा–	7
पेश लफ़्ज़–	11
तारीख़ी पसमन्ज़र–	23
रियासत बनाम जमहूरीयत–	31
ब्रिटिश लाइब्रेरी लंदन में महफ़ूज़ दस्तावेज़–	77
मज़हब ए इस्लाम और फ़ौजदारी मुआमलात–	78
रहबर ए मिल्लत मन्ज़ूर आलम–	86
वालिदा की सरपरस्ती और बहन भाईयों की ख़िदमात–	90
लाऊड स्पीकर साहिब–	96
जमहूरी नवाब–	100

मुक़दमा

जनाब महमूद आलम तारिक़ साहिब ने वालिद ए माजिद मन्ज़ूर आलम साहब की ज़िंदगी के मुतआदिद पहलुओं पर इस किताब में जो मालूमात अफ़्ज़ा रोशनी डाली है वो हम सब अराकीन आलम ख़ानदान के लिए सरमाया हयात है। बचपन से ही तारिक़ मियां की तहरीरी तबा आज़माई ख़ुसूसन माहनामा नूर में अदवियात पर इन का मज़मून अब सितमहाए रोजगार से ज़रा सी फ़ुर्सत मिलते ही मौजूदा किताब लिखने की उन की आमादगी का मसदर बख़ूबी बयान कर देती है। रहबर ए मिल्लत ने मुसन्निफ़ को कच्ची उम्र में ही जो सबक़ दिया कि उनके नाम का ताल्लुक़ दुनिया के कामयाब तरीन अनक़ाबी व सरगर्म मिल्ली कारकुन तारिक़ बिन ज़ियाद से किया है उस की मोअस्सर झलक ये किताब लिखने की फिक्रो तहरीक में साफ़ नुमायां है।

किताब की इफ़ादीयत जितनी अहल ए ख़ानदान के लिए है इस से ज़्यादा इस में दर्ज मन्ज़ूर आलम साहिब की मुतहर्रिक शख़्सियत के गौना गों पहलू मिल्लत ए इस्लामीया हिन्द के लिए मशाल राह हैं जिस के ज़रीय वह जान सकते हैं कि इन में अल्लाह ने ज़ुल्म व ज़्यादती के ख़िलाफ़ जद्वोजहद करने की बे पनाह क़ुव्वत व सलाहीयत रखी है। मुसन्निफ़ ने मन्ज़ूर साहिब के ज़रीये इन कोशिशों का जिक्र किया है जो उन्होने अहल ए टोंक में ख़ुद एतिमादी ख़ुद निगहदारी और ख़ुद वसोक़ी पैदा करने के लिए कीं और इस तरह उन्हों ने अवाम की सोच और ज़हनीयत को बदल दिया। मन्ज़ूर साहिब ने लोगों को समझाया कि किस तरह ज़िंदगी में अमली तदबीर के ज़रीय तक़दीर को को तबदील कर के उसे बेहतर दर्जे में लाया जा सकता है। मौसूफ़ ख़ुद हमेशा शेरवानी व टोपी पहने तने हुए सीने के साथ साफ़ आवाज़ में कलाम करते थे जो

क़ाबलीयत और मुतावाज़ी बेहस पर मबनी होता था। कुरआनो करीम के तसव्वुरात पर उन्हें उबूर था और वह अल्लामा इक़बाल के अशआर से अपने नुक्तों को मुज़य्यन करते थे। इस ख़ुश उसलूबी से उन्होंने मिल्लत में अमन पसंद तहरीक को जन्म दिया और नवाब के दरबार में ख़ुदग़र्ज़ मसाहिबीन के मंसूबों से अवामी मुफ़ाद को ख़राश आने से महफ़ूज़ भी रखा।

किताब का नाम रियासत बनाम जमहूरीयत ख़ुद बहुत कार आमद पैग़ाम देता है जिस से काफ़ी अक्कासी हो जाती है कि मन्ज़ूर साहिब ने किस तरह मिल्लत की फ़लाह व बहबूद के लिए ज़मीनी सतह की तग व दो को अपनी ज़िंदगी का नसबुल ऐन बना रखा था। इस पसमंजर में ग़ौर करने पर एहसास के दरीचे गुदगुदी करते हैं कि मन्ज़ूर साहिब का लक़ब रहबर ए मिल्लत किताब के बतन तहरीर से बेहद हम आहंग है। बीसवीं सदी के निस्फ़ अव्वल के दौरान रियासत टोंक में नवाबी ख़ानवादा के ज़रीया अवामी इस्तिहसाल के ख़िलाफ़ मन्ज़ूर आलम साहिब के ज़रीय इदारा साज़ और कामयाब एहतिजाज और इस के लिए ज़ाती आलम ए शबाब की बेलौस नज़रो नियाज़ की शानदार मिसाल दुनिया में यकीनन उनक़ा है। इसी लिए अल्लामा इक़बाल ने हमें आप को सलाह दी कि अगर मुल्क व मिल्लत से अपनी मुहब्बत को फ़रोग़ देने के लिए उन की अहम हक़ीक़तों से हमें अपने को ताज़ा दम रखना है तो हम उन से मुताल्लिक़ मशहूर इदारों और अफ़राद की दास्तानों को वक़तन फ़वक़तन पढ़ते रहा करें

ताज़ ख़वाबी दाशतन गर दाग़ हाय सीना रा
गाहे गाहे बाज़ ख़वाँ ईं क़िस्सा पारीना रा

इक़बाल का ये शेअर मन्ज़ूर साहिब ने अपने क़लम से अपनी बेटी और मेरी निस्फ़ बेहतर डाक्टर नाज़रा महमूद की किताब मन्ज़ूर आलम

हयात व ख़िदमात के मुसव्वदे पर अपने क़लम से तहरीर किया था इस किताब का इजरा टोंक में उन की हवेली पर उन के इंतिक़ाल पुर मलाल की पहली बरसी के मौक़े पर २००९ ईः में अमल में आया । मौजूदा किताब जो इस सिलसिला की दूसरी ख़ूबसूरत कड़ी है में टोंक का तारीख़ी पसमंजर शुरू होता है १८१८ ईः में अमीर खां के ज़रीय राजस्थान में कामरानी की पर्चम कुशाई से । लेकिन यकीनन क़ारईन सूबा में इस से पहले के हालात ए मिल्लत मालूम करने के भी ख़वाहिशमंद होंगे। खुदा करे कि मुसन्निफ़ ने गुज़िशता दौर की तफ़सील के लिए एक और किताब लिखने का इरादा कर रखा हो। ताहम उन्हों ने जिस महारत के साथ उन्नीसवीं सदी के अवाइल से शुरू करके बीसवीं सदी के वस्त में पहूंच कर क़ौमी जमहूरी उमंगों पर मबनी आज़ादी की लड़ाई में मन्ज़ूर साहिब की कारकर्दगी को पैवस्त किया है वह मुसन्निफ़ का तुर्रह ए इमतियाज़ है। किताब के ज़रीय हम जान गए कि जवानी में मजिस्ट्रेट के तौर पर तईनाती और बाद में हाईकोर्ट जज की कुर्सी क़बूल करने के बजाय मेहनत के ज़रीय अपनी पहचान ख़ुद बनाने के इसरार और अज़म के ज़रीय मन्ज़ूर साहिब ने मिल्लत को क्या रूह अफ़्ज़ा पैग़ाम दिया कि

जचते नहीं बख़्शे हुए फ़िर्दोस नज़र में
जन्नत तेरी पिनहा है तेरे ख़ून जिगर में
अए पेकर ए गुल कोशिश ए पैहम की जज़ा देख

गाहे बगाहे अंदाज़ बयान में तर्ज़ क़िस्सा गोई और पुर कशिश मंज़र कशी इख़तियार कर के किताब में क़ारईन की दिलचस्पी में इज़ाफ़ा किया गया है। मुसन्निफ़ से में दरखास्त करूंगा कि इस का अंग्रेज़ी व हिन्दी में तर्जुमा भी जल्द कर डालें ताकि अगली नसलों के ग़ैर उर्दू दां तबक़े के लिए इस का पूरी तरह समझना य क़ीनी हो जाये। तारिक़ मियां को और

हम सब को बल्कि पूरी मिल्लत को इस किताब की इशाअत मुबारक हो. आमीन।

भाई मियां के साथ मेरी ख़ूब ख़ूब बैठकें होती थीं। उन के साथ मेरी तीस बरस की बेश क़ीमत हमनशीनी ने मुझे मेरे अब्बा जान की महरूमी का एहसास बिलकुल नहीं होने दिया। अल्लामा इक़बाल की इस्तिलाह में मेरे लिए भाई मियां वो बुलबुल थे जिस के नवा पैरो तरन्नुम ने मेरे तन ए नाज़ुक में शाहीन का जिगर पैदा कर दिया। मैं अपनी तरफ़ से रहबर ए मिल्लत मन्ज़ूर आलम साहिब को ज़ाती खिराज ए अक़ीदत अल्लामा के इन अलफ़ाज़ में देता हूँ

वो शम्मा ए बारगह ए ख़ानदान ए मुरतज़वी
रहेगा मिसल ए हरम जिस का आस्तां मुझ को
नफ़स से जिस के खिली मेरी आरज़ू की कली
बनाया जिस की मुर्र्वत ने नुक्ता दां मुझ को

सैय्यद जफ़र महमूद

सदर ज़कात फाउंडेशन आफ़ इंडिया
साबिक चीफ़ कमिशनर व अफ़्सर बकार ख़ास
वज़ीर ए आजम की आला सतहइ कमेटी बराए मुसलमानान ए हिंद
बानी सदर ज़कात फ़ाउंडेशन आफ़ इंडिया
नई दिल्ली अक्तूबर २०१४ ईः

पैश लफ़ज़

हमारे वालिद जन्नत मकानी मरहूम जनाब मन्ज़ूर आलम साहिब के नाम जिन की तालीम व तर्बीयत की बदौलत ओर दुआओ की फ़ज़ीलत से आज हम एक कामयाब और ख़ुशहाल ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं। जनाब मंज़ूर आलम साहिब की ज़िंदगी अवाम के लिए वक़्फ़ थी । अवाम की तालीम व तरक़्क़ी और ख़ुशहाली ही उनकी ज़िंदगी का मक़सद और कारकर्दगी का मरकज़ रहा। उन्होंने जदीद तालीम के मराकज़ लड़कों के लिए दारुलमुतआला और लड़कीयों के लिए बनातुल मुस्लिमीन क़ायम किए और नौजवां नसल की बेहतर तालीम व तर्बीयत के लिए माहिर ए तालीम जनाब नसीब अली ख़ान साहब और मुहतरमा गुलशन बी साहिबा को बस्ती ;यूपीद्ध से लाया गया। इन स्कूलों के बेशुमार तालिब ए इल्मों ने अमली ज़िंदगी में बड़ी कामयाबियां हासिल कीं। उन का क़ौल था कि तालीम ही तरक़्क़ी और ख़ुशहाली की बुनियाद है। इंसान अषरफ़ुल मख़्लूक़ इस लिए है कि अल्लाह ने उसे ज़हीन व फ़हीम बनाया है। हर इंसान खुदा की बख़शी हुई ज़हानत की दौलत को बरुए कार ला कर अपनी मेहनत व मशक़्क़त से बेशुमार सलाहीयतें हासिल कर सकता है। इस दौलत में इज़ाफ़े का वाहिद ज़रीया तालीम है।

नहीं है ना उम्मीद इक़बाल अपनी कश्त ए वीरां से
ज़रा नम हो तो ये मिट्टी बहुत ज़रख़ेज़ है साक़ी

जनाब मन्ज़ूर आलम साहिब बच्चों ए बुज़ुर्गों और जवानों सभी के लिए मशाल ए राह थे। सब की रहनुमाई और रहबरी के लिए हर वक़्त तै्यार और हर जगह मौजूद रहते थे। क़ौम के लिए वह हक़ीक़त में रहबर–ए–मिल्लत थे।

लेकिन बहन भाईयों और औलाद की तालीम व तर्बीयत से वह कभी ग़ाफ़िल नहीं रहे। वालिद साहिब को हम सब भाई मियां कहते हैं। भाई मियां ने अपने भाईयों और औलाद की ख़वाहिशात के मुताबिक़ ही उन्हें तालीम दिलवाई । छोटे भाई महबूब आलम साहिब को वकील सईद आलिम साहिब को फ़िज़ीकल इंस्ट्रक्टर अपने बेटों मसरूर आलम सुहेल को तिब्बी डाक्टर मसऊद आलम को इलम ए कीमिया का डाक्टर बनाया। अपनी छोटी बहनों ,अपनी रफीक़े हयात और बेटीयों को भी अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी से आला तालीम दिलवाई। लेकिन मुझ नाक़िस इन्सान को न जाने क्यों वकील बनाने का फ़ैसला किया। शायद इस लिए कि जब में तीसरी जमात में पढ़ता था तब स्कूल से आकर भाई मियां के पास अदालत चला जाता। उस वक़्त सैशन कोर्ट घंटाघर के पास जिस इमारत में क़ायम थी इस में आज भी अदालतें क़ायम हैं। में अदालत का इजलास देखता मुवक्किलों से बातचीत करता और वुकला के बार की कैंटीन के समोसे,कचैरी और बर्फी की दावत उड़ा कर वापिस आ जाता। भाई मियां खुश होते कि नाशते के बहाने ही सही बरख़ुरदार अदालत में दिलचस्पी तो रखते हैं। इसी दरमियान गर्मीयों की एक दोपहर जब वालिद साहिब अदालत से आकर आराम फ़र्मा रहे थे तब मैंने एक मुवक्किल से उन को जगा कर उठाने और मिलवाने के पाँच रुपय मेहनताने के तौर पर वसूल कर लिए थे।

भाई मियां मुझे वकील बनाना चाहते थे। मैंने बी.ए. और एलएल.बी की तालीम अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी से हासिल की । खेल कूद में बचपन से ही दिलचस्पी थी,अलीगढ़ में भी ये सिलसिला जारी रहा। मेरे स्पोर्टस में बढ़ते रुहजान के बाइस भाई मियां कुछ फ़िक्रमंद रहते लेकिन जब मैंने बी.ए. फस्ट डिवीजन से पास किया तो वह मुतमइन हो गए। मैं यूनीवर्सिटी में बास्केट बाल का कैप्टेन रहा और

यूनीवर्सिटी के स्पोर्टस का सब से बड़ा एज़ाज़ कलर यानी वह बिलेज़र ;कोटद्ध जो यूनीवर्सिटी के पर्चम के रंगों का होता है हासिल किया। तब मेरे दोस्त मुझे कप्तान कह कर ही बुलाने लगे। वालदैन की दुआओं से मुझे अमली ज़िंदगी में भी पुलिस की कप्तानी नसीब हुई। मुझे पहली बार पुलिस वर्दी में देख कर मेरे अज़ीज़ मरहूम दोस्त जावेद इकबाल ने जो फ़िलबदीहा बरजस्ता अशआर कहा करते थेए अपने जज़बात का यूं इज़हार किया था .

वालिदा ए वालिद की दुआओं की तासीर तो देख
कहकशां आज उतर आई है तेरे शानों पर

हम सब भाईयों ने पांचवीं जमात तक तालीम दारुलमुतआला में और बहनों ने दसवीं जमात तक तालीम बनातुल मुस्लिमीन में हासिल की । मसऊद भाई और मैं ने छटी से आठवीं जमात की तालीम कोहना मिडल स्कूल में हासिल की । ये स्कूल हमारे घर के नज़दीक था और इस का रास्ता घर के पीछे वाक़्य तालाब के पास से हो कर जाता था। इस तालाब पर धोबी कपड़े धोते थे और बारबरदारी करने वाले उनके गधे तालाब के किनारे चरते थे। हम इन गधों को ख़ामोशी से हाँक कर अपने घर ले आते और उन की पीठ पर तकिये बांध कर बाहर सेहन में घुड़सवारी का लुत्फ़ उठाते। तालाब में तैरना और गुलेल से निशाने बाज़ी महबूब मशग़ले थै जो बाद में अमली ज़िंदगी में मुफ़ीद और सूदमंद रहै।

भाई मियां ने अपने बहन भाईयों और औलाद की तालीम का इंतिज़ाम निहायत मुनज़्ज़म तरीके से किया था। तालीम की इब्तिदा क़ुरआन व हदीस से तीन साल की उम्र में घर पर मौलवी साहिब के ज़रीय होती। इस तक़रीब को बिसमिल्लाह कहते हैं। एक साल में ही क़ुरआन शरीफ को रवानी से पढ़ने लगते और नाज़रा ख़्वाँ हो जाते। पाँच छः साल की उम्र में उसे पूरा पढ़ कर ख़त्म कर लिया जाता था। इस

तक़रीब को नशरह कहते हैं। यानी अल्लाह ने सीने को इलम से कुशादा कर दिया। इसी उम्र में स्कूल में दाख़िला हो जाता था। लेकिन मौलवी साहिब के ज़रीया तालीम बदस्तूर पांचवीं जमात तक जारी रहती। छटी जमात से दो उस्ताद घर पर पढ़ाने आते। एक सिर्फ अंग्रेज़ी पढ़ाते और दूसरे बाक़ी सभी मजामीन। ये सिलसिला दसवीं जमात तक जारी रहता था।

लेकिन तालीम के इस नज़्म व नस्क़ की कामयाबी की बुनियाद तो हमारी अम्मी के ज़रीय बारीक बीनी से की गई निगरानी और निगहदाशत थी। हम जहां बैठ कर पढ़ते थे इसके इर्दगिर्द उन की गशत जारी रहती। कभी कमरे की खिड़की से कान लगा कर सुनतीं कभी दरवाजा की झिर्री से आँख लगा कर अंदर के मंज़र का जायज़ा लेतीं। खेल घंटी यानी स्कूल में वक़्फ़े के दौरान हम अक्सर स्कूल छोड़ कर आ जाते और तालाब किनारे खेलते रहते । उस वक़्त अम्मी की गशत घर की छत पर रहती । हमें देखते ही वो किसी को भेज कर पकड़वा कर दुबारा स्कूल भेज देतीं। सर्दी हो गर्मी हो या बारिश हमारी निगरानी और निगहदाशत में अम्मी कभी कोई कोताही नहीं करती थीं।

वालदैन की तालीम व तर्बीयत के बाइस ही में आर.पी.एस. के लिए मुंतख़ब हुआ। मुख्तलिफ़ क़वानीन और ज़वाबित पर भाई मियां की दरस व तदरीस और बचपन के मशग़लों ने पुलिस अकादमी की तर्बीयत को सहल बना दिया। अकादमी के तर्बीयती परेड ग्रांऊड के पास ही एक मंदिर था। अल सादिक़ परेड ग्रांऊड में दाख़िल होने से पहले मेरे हिंदू साथी मंदिर के सामने चंद लम्हे रुक कर हाथ जोड़ कर इबादत करते थे उसी वक़्त नज़दीक किसी मस्जिद से फ़ज्र की अज़ान भी सुनाई देती थी। परेड के मुआइना के दौरान हमें काफ़ी देर तक ख़ामोश व साकित इलतिफ़ात की हालत में खड़ा रहना होता था। उस वक़्त में भी परेड ग्रांऊड पर खड़े

खड़े ही फ़ज्र की नमाज़ अदा कर लेता थाए बड़ा सुकून मिलता,यूं लगता जैसे हालत ए इलतिफ़ात में पूरी पलटन नमाज़ की नीयत बांधे खड़ी है ।

आ गया ऐन लड़ाई में अगर वक़्त ए नमाज़
क़िबला रु होके ज़मीं बोस हुई क़ौम ए हिजाज़

दौराने तर्बीयत बेहतरीन कारकर्दगी के मुज़ाहिरे के लिए वज़ीर ए आला राजस्थान ने १९८८ ईः में मुझे शमशीर से लैस करते हुए सोर्ड आफ़ ऑनर के एज़ाज़ से और इस के बीस साल बाद यानी २००८ ईः में बेदाग़ ए काबिल ए तारीफ़ और आला ख़िदमात के लिए सदर ए जमहूरीया हिन्द ने पुलिस मैडल के एज़ाज़ से सरफ़राज़ किया।

१९४२ ईः में भाई मियां ने टौंक में वकालत शुरू की । उस दौर में टोंक में ज़्यादा तर मकान कच्चे कवेलु पोश होते थे। जब मकान ही पुख़्ता न थे तो घर के आंगन की क्या बिसात वह भी कच्चे ही होते थे। लेकिन उमरा की हवेलीयों में भी आंगन कच्चे ही रखे जाते थे और आंगन में नीम के दरख़्त लगाए जाते थे। उस की वजह शदीद गर्मी से राहत हासिल करना था। लेकिन बारिश में कच्चा आंगन तकलीफ़देह होता था। बारिश के मौसम में एक बार भाई मियां के वालिद ने जिन्हें सब दादाभाई कहते थे हमारी दादी से कहा कि ख़ुदा करे मन्ज़ूर को ऐसा घर मिले जिस का आंगन पुख़्ता हो बारिश हो और सारा आंगन धुल कर साफ़ शफ़्ाफ़ हो जाये। बादअज़ां भाई मियां ने वह हवेली खरीदी जो हमारा मौजूदा मकान है। इस हवेली का आंगन भी कच्चा ही था और इस में भी बहुत से छोटे बड़े दरख़्त लगे हुए थे जो शदीद गर्मी से नजात पाने के लिए ही रखे गए थे। लेकिन भाई मियां ने आराम व सुकून की परवाह न की और अपने मरहूम वालिद की ख़वाहिश का एहतराम करते हुए इस हवेली के पूरे आंगन के फ़र्श को पुख़्ता करवा दिया।

हवेली में उन्हों ने एक ख़ूबसूरत बाग़ लगवाया जिस में सफ़री यानी अमरूद अरंड ककड़ी यानी पपीता ए इंजीरए फ़ालसाए अनारए अंगूरए नारंगी और संतरे के बेशुमार दरख़्त थे। हमारे आबा व अजदाद का ताल्लुक़ इलहाबाद से था इस लिए अमरूद के पेड़ इलहाबाद से ही मंगवाए गए थे ताकि वतन की मिठास क़ायम रहे और उस की ख़ुशबू से हवेली महकती रहे। वो बाग़ हमारे लिए किसी जन्नत से कम न था। हमारे सुबह व शाम उसी बाग़ में गुज़रते थे। फल पूरी तरह पकते भी ना थे कि हम दरख़्तों की शाख़ों पर चढ़ चढ़ कर उन्हें खाना शुरू कर देते। हमारा एक ग्रुप था जिस में मसऊद भाई एफूपी जाद भाई नजीबए मामूं इकबाल और मेरे अज़ीज़ दोस्त ख़ालिद उबेदी और विक़ार शामिल थे। उस वक़्त हमारी शरारतें उरूज पर थीं। अहसान भाई एक बड़े काशत कार थे लेकिन थे बड़े सख़्त मिज़ाज। उन पर कई फ़ौजदारी मुक़द्दमे चल रहे थे हमारे बाग़ के बाग़बान भी वही थे। कच्चे फल तोड़ने पर क़मची से पिटाई करते थे। किसी जासूस की तरह हर वक़त हमारी टोह में रहते। लेकिन हम लोग भी उन्हें चकमा दे कर कोई ना कोई कच्चा पक्का फल तोड़ ही लाते थे। मेरी छोटी बहनों का भी एक अलग ग्रुप था । जब अहसान भाई हमारे तआक़ुब में होते तो वह मौक़े का फ़ायदा उठाने से नहीं चूकती थीं।

सालाना इमतिहानात के बाद मई जून में स्कूल की छुटयां हो जातीं और हम सब शरारतों के लिए पूरी तरह आज़ाद होते। एहसान भाई भी वक़्त की नज़ाकत को समझते हुए अपनी खेती बाड़ी की निगहदाशत के बहाने बाग़बानी के फ़राइज़ से सुबुकदोश हो कर अपने गांव चले जाते और हमारी तो जैसे ईद हो जाती। एक बार गर्मीयों की छुट्टीयों में सुहेल भाई ने बाग़बानी का ज़िम्मा सँभालने का फ़ैसला किया। हम सब को साथ लेकर पूरे बाग़ का मुआइना किया और हमारे ज़रीय ही पेड़ों पर

निशानात डलवाए और उन पर लगे हुए कच्चे पक्के फलों का शुमार करवाया गया । हुकूमत की मर्दुम शुमारी में भी इतनी मेहनत नहीं होती जितनी पेड़ों और फलों की गिनती करने में हम लोगों को करनी पड़ी। बड़ी मुश्किल से ख़ुदा ख़ुदा करके ये काम मुकम्मल हुआ। बाग़ में दाख़ाला और उस की सफ़ाई से लेकर पेड़ों में पानी देने और परिन्दों को उड़ाने तक मुख़तलिफ़ कामों को हम लोगों में बांटा गया इस के दिन और औक़ात मुक़र्रर किए गए जवाब देही और ज़िम्मेदारी क़ायम की गई। सख़्त क़ाएदे क़ानून वज़ा किए गए। बगैर इजाज़त फल तोड़ने की पहली ग़लती की सज़ा मुट्ठी भर नीम की पत्तियां चबा कर खानी थीं। क़ाएदे क़ानून के नाफ़िज़ होने के कुछ ही देर बाद मसऊद भाई ने एक कच्चा अमरूद तोड़ कर खा लिया। चोरी पकड़ी गई शिकायत हुई सब को जमा किया गया मसऊद भाई को मुट्ठी भर नीम की पत्तियां खाने को दी गईं जिसे उन्होंने इत्मीनान से चबा चबा कर निगल लिया। सुहेल भाई ने कुछ देर सोचा और फिर बाग़बान के ओहदे से इस्तीफ़े का ऐलान कर दिया। वो बाग़ हमारे खेल कूदए हमारी आंख मिचैली के लिए एक बाज़ीचा ए इतफाल था।

आता है याद मुझको गुजरा हुआ ज़माना
वो बाग़ की बहारें वो सब का चह चहाना
वह प्यारी प्यारी सूरत वह कामिनी सी मूरत
आबाद जिस के दम से था मेरा आशियाना

भाई मियां को अंग्रेज़ी का अख़बार स्टेट्स मैन उर्दू के दावत, अलजमीअत, रिसाला मआरिफ़ बहुत पसंद थे। घर पर हर उम्र के लिए कुछ रिसाले पाबंदी से आया करते थे। नौनिहालों के लिए नूर, नौ उम्र के लिए खिलौना लड़कीयों के लिए बानो और बाक़ी के लिए ख़ातून ए मशरिक, शबिस्तां, हुमां, बीसवीं सदी और पाकीज़ह आंचल वग़ैरा । उन्हें

फ़िल्मी रिसालों और ताश के पत्तों से बेहद नफ़रत थी। हाथ लगते ही फाड़ कर नज़रे आतिश कर देते थे।

पहले टोंक के क़ुरब व जुवार में आमदो रफ़्त के ज़राए बहुत महदूद थे। मुवक्किल पेशीयों पर आते तो कई दिन तक घर पर रहा करते थे। उन के लिए लिहाफ़ गद्दों का अलग एहतिमाम था। वो बाटियां सैंक कर हरीएलाल मिर्च की चटनी के साथ खाते जो बहुत लज़ीज़ होती थीं और हम सब बहुत शौक़ से खाते थे। एक दफा किसी मुवक्किल से हमें ताश की गड्डी मिल गई । भाई मियां ने देखा तो हम से लेकर नज़रे आतिश कर दी। अगले ही दिन उन्होंने हमारे हाथ पर ताश की गड्डी लाकर रख दी। सभी हैरत ज़दह थे। खोल कर देखा तो वह तालीमी ताश थे।
टोंक में रेडीयो की नशरियात शुरू हुईं उस वक़्त रेडीयो एक शान व शौकत का सामान समझा जाता था क्योंकि उसे ख़रीदने के लिए हुकूमत से बाक़ायदा इजाज़त नामा यानी लाइसेंस लेना होता था। तब भाई मियां ने ख़बरें सुनने के लिए मरफ़ी कंपनी का रेडीयो ख़रीदा। कमज़ोर रेडीयो सिगनल की वजह से छत पर एक लंबे बांस पर एरीयल नस्ब करना पड़ता था। पतंग बाज़ी की रुत में अक्सर कोई इस बांस को पतंग लूटने के लिए इस्तिमाल कर लेता और रेडीयो की नशरियात गड़बड़ा जातीं। रेडीयो के बाद ट्रान्सज़िस्टर और फिर टेलीवीज़न आया लेकिन भाई मियां रात आठ बजे बीबी सी लंदन पर ख़बरें तब से अपनी ज़िंदगी के आख़िरी अय्याम तक बिला नाग़ा सुनते रहे । उस ज़माने में हर इतवार की दोपहर रेडियो पर किसी फिल्म की कहानी अदाकारों के मुकालमात के साथ नश्र की जाती थी जिसे साऊँड ट्रैक कहते थे। भाई मियां से छुप कर बड़ी ख़ामोशी के साथ हमारे चचा फूपीए ख़ाला और बड़े भाई बहन उस रेडियो के कान लगा कर साऊँड ट्रैक सुना करते थे।जब टेलीविज़न की नशरियात शुरू हुईं तो हर इतवार की शाम इस पर फ़िल्म दिखाई जाती तब घर के

बाहर मौहल्ले के सैकड़ों औरतें और बच्चे जमा हो जाते । भाई मियां को फिल्म से सख़्त नफ़रत थी लेकिन वह मौहल्ले की औरतों व बच्चों को टी.वी. दिखाने घर के अंदर ले आते थे।

भाई मियां को हम ने हमेशा तवाना और तंदरुस्त देखा। उन्हें डाकटरी दवाओं और परहेज़ी खाने से ही परहेज़ था वह परहेज़ पर फ़ाक़े को तर्जीह देते थे। यानी रोज़े की इफ़ादियत को बहुत अहम समझते थे। मुख़तलिफ़ क़िस्म की माजून, जवारिश और ख़मीरे उन की अलमारी की ज़ीनत थे। जब में पाँच सात साल का था तो एक दिन उन जवारिशात पर तबे आज़माई की और मिठाई की तरह जी भर कर खाया नतीजन सख़्त बीमार हुआ । इस वाक़य की सबक़ आमोज़ कहानी अपनी फूपी आपा बी की मदद से ख़मीरह के उनवान से लिखी कि बग़ैर इजाज़त अदवियात इस्तिमाल नहीं करनी चाहीए । कहानी रिसाला नूर में शाये हुई और मुझे इनाम भी मिला। उम्र के इसी हिस्से में मुझे एक बात की ज़हनी उलझन थी कि मेरे बड़े भाई साहिब सुहेल भाई के नाम पर बनास नदी के पास एक गांव सुहेला है और मसऊद भाई के नाम पर एक दाल यानी मसूर की दाल है। लेकिन मेरे नाम पर कुछ भी नहीं है। मैंने इस उलझन का जिक्र वालिद साहिब से किया तो वो मुस्कुराए और मेरे सामने एक बड़ी किताब जो ऐटलस था खोली। मुझे स्पेन का नक़्शा दिखाया और जज़ीरा ए जिबरालटा पर उंगली रख कर बताया कि इस जज़ीरे का असल नाम जबल्लुतारिक़ है। उस वक़्त मुझे ये जान कर बहुत ख़ुशी हुई कि मेरे नाम पर एक जज़ीरा है। वालिद साहिब ने फिर मुझे स्पेन और तारिक़ बिन ज़ियाद के पूरे वाक़यात सुनाए।

दश्त तो दश्त हैंए दरिया भी ना छोड़े हम ने
बहर ए ज़ुलमात में दौड़ा दिए घोड़े हम ने

पुलिस फोर्स में आने के बाद एक दिन ये क़िस्सा मैंने अपने अज़ीज़ मरहूम दोस्त जनाब जावेद इकबाल को सुनाया। मरहूम ने वहां एक काग़ज़ पर जो पुलिस की केस डायरी थी मुंदरजा अशआर लिख दिए पुलिस केस डायरी का वह काग़ज़ आज भी मेरे पास महफ़ूज़ है।

नाम तारिक़ जो तेरा रखा है तो कुछ सोच के रखा होगा
तू हो मारूफ़ ज़माने में ये सोच के रखा होगा
अपने इस नाम की तासीर दिखानी है तुझे
कश्तियां अग़यार के साहिल पे जलानी है तुझे

२२ अकतूबर २००९ ईः को भाई मियां की पहली बरसी के माक़े पर उन की ज़िंदगीए ख़िदमात और ख़ानदानी हालात पर मेरी हमशीरा डाक्टर नाज़रा महमूद की तसनीफ़ करदा किताब मन्ज़ूर आलम हयात व ख़िदमात का इजरा टोंक में हुआ था। मेरी ये तहरीर भी इसी सिलसिला की कड़ी और इसी के एक हिस्सा की तफ़सील व तफ़सीर है। इन किताबों का मक़सद मेहज़ वालिद साहिब की ज़िंदगी के हालात से रोशनास कराना नहीं है। दरअसल इन का मक़सद तो क़ौम और अवाम ख़ुसूसन नई नौजवां नसल को ये समझाना है कि वसाइल और ज़राए की क़िल्लत और तंगी के बावजूद बेवा वालिदा और कम उम्र बहनों भाईयों की जिम्मेदारी के भारी बोझ के साथ सिर्फ अल्लाह के भरोसे उस की बख़्शी हुई ज़हानत की बुनियाद पर अपनी मेहनत व मशक़्क़त से हासिल की गई तालीम अपनी क़ाबलीयतए सलाहिय्यत और ख़ुद एतिमादी के बलबूते एक आम इंसान ने १९४२ ईः से २००८ ईः तक लगातार ६५ साल के लंबे अर्से में अवाम और क़ौम की बेलोस ख़िदमतएरहबरी और नुमाइंदगी किस तरह की। उस इंसान ने अपने मक़ासिद के रास्तों में किसी महरूमी किसी महकूमी किसी नाइन्साफी और किसी तफ़रीक़ को कभी रुकावट बन्ने

नहीं दिया।मायूसी और नाउम्मीदी उनसे कोसों दूर थी। ये अलफ़ाज़ तो उन की ज़िंदगी की लुग़त में थे ही नहीं ।

ना हो नौमीद नौमीदी ज़वाल ए इलमो इरफ़ां है
उम्मीद मर्द ए मोमिन है ख़ुदा के राज़दानों में

हिंदूस्तान में आज़ादी और जमहूरीयत की जंग के आग़ाज़ के साथ ही रियास्तों और रजवाड़ों का ज़वाल भी शुरू हो गया था। अंग्रेज़ हुकूमत के निज़ाम में रियासत और रजवाड़े मेहज़ उन कारिंदों के मानिंद थे जो हुकूमत के दबाओ में अपने ही मुलक की दौलत समेट कर इंग्लिस्तान के आक़ाओं के ख़ज़ाने भर रहे थे। रियासत टोंक में आज़ादी और जमहूरीयत की जंग का आग़ाज़ दो नौजवान वकीलों जनाब मन्ज़ूर आलम साहिब और जनाब हबीबुद्दीन ख़ान साहब के ज़रीय हुआ जब उन्होंने टोंक की ग़रीब और मुफ़लिस अवाम की फ़लाह व बहबूद के लिए अपनी आवाज़ बुलंद की। और तब शुरू हुआ अंग्रेज़ हुकूमत के निज़ाम के मातेहत रियासत टोंक के नवाब और इस के ओहदेदारों के साथ उनका तसादुम और टकराओ। दर हक़ीक़त ये तसादुम ये टकराओ अंग्रेज़ हुकूमत के निज़ाम के साथ ही था। इस तरह टोंक में जमहूरीयत ने दस्तक दी।

रहबर ए मिल्लत की ज़िंदगी पर जो कुछ दर्ज कर रहा हूँ वो इन क़िस्सों और वाक़यात पर मबनी है जो ख़ुद उन्होंने हमें सुनाए या हम ने अपनी दादी मोहतरमा महमूदा बी ए वालिदा मोहतरमा बदरुन्निसां फूपी मोहतरमा उम्मे सलमा चचा साहिबान जनाब महबूब आलम और जनाब सईद आलिम से सुने थे। बेग़र्ज़ मुहिम से भरपूर इन दिलचस्प वाक़यात को मैंने भी भाई मियां से गाहे बगाहे इसरार कर के बार बार सुना था । इसके अलावा ब्रिटिश लाइब्रेरी लंदन से ऐमन आलम नाज़की के ज़रीय फ़राहम किए गए दस्तावेज़ात हैं।

मेरी तरक़्क़ी आईण्पीण्एसण् में होने पर में पुलिस सुर्पिरिन्टेंडेंट बूंदी के ओहदे पर तैअनात हुआ। इस से क़ब्ल में बूंदी भाई मियां के साथ एक क़त्ल के मुक़दमे की पैरवी के सिलसिला में आया था। बूंदी में आज भी उन के बेशुमार मद्दाह हैं। तालीम की वजह से बच्चे और अहलिया जयपुर ही रहे। एक लंबे अर्से से वालिद साहिब पर कुछ लिखने का ज़हन में था। बूंदी की तन्हाइयों में यादों के दरीचे ख़ुद बख़ुद खुलने लगे। हाफ़िज़े में महफ़ूज़ वाक़यात को ज़हन के एक गोशे में जमा कर आरास्ता करने लगा। ख़ुश क़िसमती से बूंदी से तबादला होने पर जयपुर आगया। उर्दू में कम्पयूटर टाइप करना थोड़ा बहुत सीख गया था बस जो कुछ याद आता गया खुद ही टाइप करता चला गया। और सिर्फ एक हफ्ते में ही हाफ़िज़े में महफ़ूज़ अपनी यादाशत का असासा कम्पयूटर पर मुन्तक़िल कर दिया। जुमला और इमला की बहुत सी गलतियों की इस्लाह करने वाक़यात को तर्तीब देने मुसव्वदे को सजाने संवारने और यादाशत के असासे की नोक पलक दुरुस्त करने में ज़रूर कुछ वक़्त लगा।

भाई मियां की अज़ीम शख़्सियत और उन की मुक़द्दस व मुतबर्रिक तहरीक की सरीह व मसबत अक्कासी के लिए इस किताब में अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी के तराने के चंद अशआर के इलावा तमाम अशआर अल्लामा डाक्टर सर मुहम्मद इक़बाल के इस्तामाल किए गए हैं।

आज भाई मियां की यौम ए पैदाइश पर मैं इस किताब को मुकम्मल कर रहा हूँ।

महमूद आलम तारिक़

आइ.पी.एस.

सुर्परिन्टेंडेन्ट आफ़ पुलिस जयपुर राजस्थान

२३ मार्च २०१४ ईः

तारीख़ी पसमन्ज़र

अमीर ख़ां ने अपने लश्कर के साथ राजस्थान में फ़तह और कामरानी के जो पर्चम बुलंद किए इस में उनकी दिलेरी और हौसले के साथ एक नेक बुज़ुर्ग सूफ़ी की शुजाअत ओर उन की दुआएं भी शामिल थीं। ये थे अल्लामा हज़रत अहमद शहीद र.अ. जो अपने हजारों जांनिसारों और रफ़क़ा के साथ अंग्रेज़ और ज़ालिमों के ख़िलाफ़ हर जंग को अमीर ख़ां के शाना बशाना जिहाद मान कर लड़ते रहे। १८१८ ईः में टोंक रियासत अमीर ख़ां और अंग्रेज़ों के दरमयान एक समझौता के तहत क़ायम हुई। अमीर ख़ां और अंग्रेज़ों के दरमयान रियासत के क़याम के लिए हो रहे समझौता से हज़रत अहमद शहीद र.अ. मुत्तफ़िक़ नहीं थे। वह अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ अपना जिहाद जारी रखना चाहते थे और अंग्रेज़ों से समझौता अमीर ख़ां की मजबूरी थी। अंग्रेज़ों ने रियासत व हुकूमत के सबज़ बाग़ और ऐश व आराम की ज़िंदगी के ख़वाब दिखा कर अमीर ख़ां के कई सालारों को अपना हमनवा बना लिया था। ख़ुद अमीर ख़ां को शक था कि उन के सालार उन्हें अंग्रेज़ों के हवाले न कर दें। रियासत के क़याम के बाद हज़रत अहमद शहीद र.अ. टोंक छोड़कर अपने वतन राय बरेली चले गए।

कुछ अर्सा बाद उन्हें ये इत्तिलाआत मिलीं कि पंजाब और सूबा सरहद के हुक्मराँ वहां के अवाम पर बे इंतिहा मज़ालिम कर रहे हैं । उन्होंने ज़ालिमों के ख़िलाफ़ जिहाद करने का फ़ैसला किया और अपने जांनिसारों के साथ पंजाब की तरफ़ कूच किया। मुख़्तलिफ़ मुक़ामात से होते हुए वह क़रौली पहुंचे। क़रौली की राजपूत रियासत दिल्ली की सलतनत के वक़्त वजूद में आई थी। क़रौली को तोपखाना और रिसाला सलतनत ने दिया था। इस रिसाला के मोहतमिम रिसलदार कहलाते थे।

जनाब मन्ज़ूर आलम साहिब के खुसर जनाब नसीर मौहम्मद ख़ां के आबा व अजदाद क़रौली के रिसलदार थे। अल्लामा हज़रत अहमद शहीद र०अ० ने क़रौली में नदी किनारे वाक़्य रिसलदारों की हवेली में क़याम किया था। इस हवेली के अभी भी कुछ निशान बाक़ी हैं जिसमें कुम्हारों का ख़ानदान जो उनके यहां चाकरी करते थे आज भी आबाद है। हवेली का बाक़ी हिस्सा एक मौहल्ले में तबदील हो चुका है। क़रौली का एक क़स्बा माचलपूर है जहां पान की काशत आज भी होती है। माचलपूर के पान टोंक में बहुत मशहूर हैं। क़रौली से भी बहुत से लोग हज़रत के साथ राहे खुदा में चल पड़े थे । क़रौली से वह टोंक पहुंचे।

टोंक के नवाब अमीर ख़ां ने उन्हें हर तरह की फ़ौजी और दीगर इमदाद की पेशकश की लेकिन अल्लामा हज़रत अहमद शहीद र.अ. ने उन्हें ये कह कर लेने से इनकार कर दिया कि ये राहे खुदा में लड़ी जाने वाली जंग है इस में हर शख़्स अपनी मर्जी और अपने असबाब के साथ ही शरीक हो सकता है। हजारों मील का सफ़र तै करके वह पंजाब पहुंचे जहां छोटे बड़े कई मेअरके हुए कभी फ़तह हासिल हुई तो कभी शिकस्त और १८३२ ईः में ऐसे ही एक मेअरके में बाला कोट पर उन्होंने अपने सैकड़ों जांनिसारों और रफ़क़ा के साथ जामे शहादत नोश फ़रमाया।

इन शहीदों में जनाब मन्ज़ूर आलम साहिब के आबा व अजदाद भी शामिल थे। ये ख़बर जब टोंक पहुंची तो नवाब वंज़ीरुद्‌वोला ने एक वफ़द भेज कर उन के बचे हुए जांनिसारों को जो बहुत पुरसाने हाल थे टोंक बुलवा लिया। सैकड़ों अफ़राद पर मुश्तमिल ये क़ाफ़ला जब टोंक पहुंचा तो उसे शहर के नज़दीक जिस मुक़ाम पर ठहराया गया वो इलाक़ा आज भी मौहल्ला क़ाफ़ला के नाम से मशहूर है और क़ाफ़ले की जामा मस्जिद को शहर टोंक की सब से मुमताज़ मस्जिद होने का मर्तबा हासिल है। अल्लामा हज़रत अहमद शहीद र.अ. की सोहबत में उन के जांनिसारों और

रफ़क़ा ने जहां फ़न ए सिपाह गिरी में महारत हासिल की वहीं उन की दीन व इलम की क़ाबिलीयत और दरस व तदरीस की सलाहीयत भी बुलंद पाया की हो गईं थीं। लंबे अर्से तक पंजाब और सूबा सरहद में रहने पर इन जांनिसारों ने वहां के पठानों से अजवाज़ी रिश्ते भी उस्तवार किए।

जनाब मन्ज़ूर आलम साहिब के आबा व अजदाद भी हज़रत अहमद शहीद र.अ. के साथ इलहाबाद से हिजरत करके राहे खुदा में निकल पड़े थे इन में शहीद जनाब अबदुल्लाह साहिब भी थे जिन के वाली जनाब अबदुल हकीम साहिब थे । उन के चार फ़रज़न्दों में सब से बड़े जनाब मुहम्मद यहया साहिब और उन से छोटे जनाब मुहम्मद तहा साहिब थे। मुहम्मद यहया साहिब के सब से बड़े फ़रज़न्द जनाब मुहम्मद यूसुफ साहिब का निकाह मुहम्मद तहा साहिब की दुख़तर मोहतरमा महमूदा बी से हुआ था। उन्हीं के सब से बड़े फ़रज़न्द रहबर ए मिल्लत जनाब मन्ज़ूर आलम साहिब थे। उन्हें बचपन से ही इलम से मुहब्बत और तालीम हासिल करने का जुनून था। उन्हों ने पांचवीं जमात तक इबतिदाई तालीम रियासत टोंक के परगना निम्बाहड़ा में हासिल की जहां उन के वालिद उन दिनों मय अहल व अयाल क़याम पज़ीर थे । अपने फ़रज़न्द के तालीम हासिल करने के शौक़ और रुहजान को देखते हुए उन के वालिद ने उन्हें टोंक भेज दिया जहां उन्हों ने अपने वालिद की नानी के पास रह कर तालीम हासिल की। १९३१ ईः से १९३६ ईः तक छटी से दसवीं जमात की तालीम दरबार स्कूल टोंक में हासिल कीए जो आज भी उसी इमारत में उसी नाम से क़ायम है। उस वक़्त अवाम के बच्चे फ़र्श पर बैठते और साहबज़ादगान के लिए चंद कुर्सियां रखी जातीं जो उमूमन ख़ाली ही रहती थीं। टोंक से मैट्रिक यानी दसवीं क्लास पास करने के बाद उन्हों ने १९३६ ईः से १९४० ईः तक गवर्नमेंट कॉलिज अजमेर से एफ़.ए.

और बी.ए. इमतियाज़ी नंबरों से पास की इस के बाद १९४० ईः से १९४२ ईः तक अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी से एल.एल.बी. किया।
मैट्रिक पास करने के बाद एक दिन टोंक में वह किसी मुक़ाम से गुजर रहे थे जहां रियासत के एस०पी० साहबज़ादा अबदुल क़ादिर ख़ान साहब अपने मसाहिबीन के साथ तशरीफ़ फ़र्मा थे जिन्हों ने आवाज़ दे कर उन्हें बुलवाया और पूछा. मियां कौन सी क्लास का इमतिहान दिया है । कहा. मैट्रिक इमतियाज़ी नंबरों से पास किया है । तब ख़ानसाहब अपने मसाहिबीन को मुख़ातिब करके बोले. इमतिहान तो एफ़.ए. का होता है और अपने दोनों हाथों के दरमियान क़रीब एक फ़ुट का फ़ासला रख कर कहा ये मोटी मोटी किताबें होती हैं और कहीं से भी खोल कर कह देते हैं पढ़ो । इस पर मसाहिबीन ने हैरत व ताज्जुब से कहा. ओख़ोह। गोया एक मोटी किताब को कहीं से खोल कर पढ़ना मसाहिबीन के नज़दीक बहुत मुश्किल काम था।

जनाब मंज़ूर आलम साहिब अख़ाबारात पाबंदी से पढ़ा करते थे ख़ुसूसन अंग्रेज़ी का अख़ाबार। मिलने आने वालों को भी वह अख़ाबार पढ़ने के लिए देते और ख़ास ख़ास खबरें ख़ाुद पढ़ कर सुनाते। जब वह दसवीं क्लास में पढ़ रहे थे तब एक दिन रेल में सफ़र के दौरान वह अंग्रेज़ी का अख़ाबार निकाल कर पढ़ने लगे सामने सीट पर बैठे साहिब ने जो पढ़े लिखे थे मुस्करा कर तन्ज़िया अंदाज़ में उन से कहा. साहबज़ादे ये अख़ाबार अंग्रेज़ी का है। लेकिन जब मन्ज़ूर साहिब ने वो अख़ाबार पढ़ कर उन्हें सुनाया और ख़ाबरों के मानी भी समझाए तो उन साहिब को बड़ी हैरत हुई और ख़ुश होकर उन की पीठ थपथपाई।

१९३९ ईः से १९४७ ईः ये हिंदूस्तान की जंग ए आज़ादी का फ़ैसला कुन दौर था। इस अर्से में दूसरी जंग ए अज़ीम शुरू हुई एजर्मनी के ख़िलाफ़ इस जंग को हुकूमत ए बर्तानिया के पहलू ब पहलू लड़ने के लिए

वायसराए हिंद ने हिंदूस्तान की शमूलीयत का भी ऐलान कर दिया। कांग्रेस ने उस की पुरज़ोर मुख़ालिफ़त की। मुस्लिम लीग ने अलयहदा मुलक पाकिस्तान का मुतालिबा शुरू कर दिया। वायसराए हिंद ने चंद सूदमंद मुराआत के साथ एक मुआहिदे की पेशकश की जिस पर अमल आवरी जंग के बाद की जानी थी। ये पेशकश माह अगस्त में की गई थी इस लिए ये अगस्त ऑफ़र के नाम से मशहूर हुई। कांग्रेस ने इस पेशकश को मुस्तरद कर दिया और सत्यागिरह यानी तहरीक ए मुक़ावमत शुरू करदी।

इसी दौरान सुभाष चन्द्र बोस अंग्रेज़ों की कैद से फ़रार हो कर बर्लिन जा पहुंचे और आज़ाद हिंद फ़ौज क़ायम की। हुकूमत ए बर्तानिया ने सर क्रिप्स की सदारत में एक सिफ़ारत हिंदूस्तान भेजी। इस सिफ़ारत ने जंग ए अज़ीम में इमदाद और तआवुन के ऐवज़ में जंग के बाद ख़ुद मुख़तार हुकूमत की पेशकश की जिसे कांग्रेस और मुस्लिम लीग दोनों ने मुस्तरद कर दिया। और अंग्रेज़ों को मुल्क से बाहर निकालने के लिए जारिहाना अंदाज़ में हिंदूस्तान छोड़ो तहरीक शुरू की गई। इस पर हुकूमत ए बर्तानिया के वज़ीरों की रहनुमाई में कैबिनेट मिशन के नाम से मारूफ़ जो सिफ़ारत भेजी गई इस ने बैनुलमुदत्ती यानी उबूरी हुकूमत और दस्तूर साज़ मजलिस के क़याम का ख़ाका तैयार किया।

जनाब मन्ज़ूर आलम साहिब ने अजमेर और अलीगढ़ में जेरे तालीम रहते हुए इन तमाम तहरीकात को बहुत क़रीब से देखा और समझा । १९४२ ईः में एलएल॰बीॱ कर के टोंक आने और वकालत शुरू करने के बाद भी उन्हों ने इन तहरीकों का मुताअला जारी रखा।

टोंक रियासत में उस वक़्त हाईकोर्ट हुआ करती थी लेकिन कोई भी वकील ला ग्रैजुएट यानी एलएल॰बीॱ नहीं था। टोंक के वह पहले ला ग्रैजूएट वकील थे। उस वक़्त के मशहूर वकीलों में अच्छन ख़ां साहिब भी

थे जो बहीर में रहा करते थे जिन का मकान अंदर से पुख़्ता लेकिन बाहर से कच्चा कवेलू पोश था। बाहर से मकान पुख़्ता न बनवाने का सबब अच्छन ख़ां साहिब ने उन्हें ये बताया कि. नवाब की सवारी अक्सर इधर से गुजरती है पुख़्ता मकान देख कर वह नाराज़ हो सकते हैं।

वकालत के पेशे में क़दम रखे उन्हें अभी चंद माह ही हुए थे कि मजिस्ट्रेट का एक ओहदा ख़ाली हो गया । टोंक के जज साहिब ने उन्हें बुलाया और कहा कि वह अर्जी दे दें ताकि मजिस्ट्रेट के ओहदे पर उन का तक़र्रुर कर दिया जाये। इस पर उन्हों ने कहा कि वह मजिस्ट्रेट नहीं बनना चाहते वकालत करना चाहते हैं। जज ने पूछा कि क्या वकालत बहुत अच्छी चल रही है । तब उन्हों ने बताया कि अभी तक उन के पास एक भी मुक़दमा नहीं है । इस पर जज उन्हें हैरत से देखता रह गया।

उन के इरादे बुलंद और मुस्तहकम थे। उन्हें अल्लाह की ज़ात पर कामिल यक़ीन और ख़ुद पर एतिमाद था। बहुत जल्द उन्हों ने अपनी वकालत का लोहा मनवाया और दुनिया ज़माने में ख़ुद को एक क़ाबिल, लायक़, ज़हीन और बासलाहीयत वकील की हैसियत से रोशनास कराया। आज़ादी के कुछ अर्सा बाद ही उन्हें राजस्थान हाईकोर्ट के जज की पेशकश की गई थी जिसे भी उन्हों ने मुस्तरद कर दिया।

टोंक में वकालत शुरू करने के बाद वह महीनों बग़ैर किसी मुक़दमे के पाबंदी के साथ अदालत जाते रहे और वहां अपना वक़्त क़ानून के मुताअला में गुज़ारते रहे। कोई उन की तरफ़ तवज्जह भी न देता था। लेकिन कौन जानता था कि आने वाले दौर में बड़े बड़े सीनीयर वुकला अदालत के कमरे में इसी वकील की सिर्फ बेहस सुनने के लिए उन के पीछे घंटों खड़े रहेंगे। उन्हें जो पहला मुक़दमा मिला उस का मेहनताना महज़ पाँच रुपय था। १९४४ ईः में उन की वालिदा और छोटे बहन भाई उन के साथ रहने के लिए टोंक आगए।

३ मई १९४५ ईः को एक मुक़दमे के सिलसिला में वह सिरोंज गए । सिरोंज रियासत टोंक का परगना था वहां जाना जुए शीर का ही लाना था। ख़स्ता शिकस्ता हाल बसों ओर छुक छुक करती रेलगाड़ी से लेकर बैलगाड़ी तक में सफ़र करना पड़ता था। उन के वालिद उन दिनों लटीरी में कस्टम ऑफीसर थे। सिरोंज में उन्हें इत्तिला मिली कि उन के वालिद की तबीयत नासाज़ है। अपना काम बीच में छोड़कर वह ७ मई को लटीरी पहुंचे तो उन्हें ये दिल सोज़ और क़यामत ख़ेज़ ख़बर मिली कि चंद लम्हा क़ब्ल उन के वालिद का इन्तिक़ाल हो गया है। आख़िरी वक़्त में उन के वालिद उन्हें ही याद कर रहे थे। कोई अज़ीज़ व अक़ारिब पास न था। वालिदा और भाई बहन बहुत दूर टोंक में थे। फिर भी बहुत हिम्मत और मजबूती से दिल पर पत्थर रख कर उन्हों ने अपने वालिद की तकफीन व तदफ़ीन की। टोंक वापिस आकर किसी तरह अपनी वालिदा को बेवा होने और दो छोटे भाईयों और चार छोटी बहनों जिन में सब से छोटी बहन जिस की उम्र महज़ तीन साल थी को यतीम होने की ख़बर सुनाई। उस वक़्त तक उन की सिर्फ एक छोटी बहन की शादी हुई थी और मन्ज़ूर साहिब खुद ग़ैर शादीशुदा थे।

लेकिन ये नौजवां इन्सान जिस की उम्र उस वक़्त सिर्फ २६ साल थी और जिसे अमली ज़िंदगी में क़दम रखे महज़ तीन साल ही हुए थे अपने काँधों पर बेवा वालिदा और कम उम्र बहन भाईयों की भारी जिम्मेदारी के साथ टोंक के ग़रीब और मुफ़लिस अवाम की फ़लाह व बहबूद के लिए अंग्रेज़ हुकूमत और उस के निज़ाम के तहत रियासत टोंक के नवाब और उस के ओहदेदारों के सामने सीना सुपर हो गया। क्या ख़ूब कहा अल्लामा ने.

उक़ाबी रूह जब बेदार होती है जवानों में
नज़र आती है उस को अपनी मंजिल आसमानों में

उन के वकालत शुरू करने के कुछ अर्सा बाद ही जनाब हबीबुद्दीन ख़ां साहिब भी अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी से एलएलण्बीण करके आगए। अब टोंक में दो नौजवां वकील ला ग्रैजुएट थे । अवाम की फ़लाह व बहबूद ए तालीम व तर्बीयत के लिए दोनों हज़रात की ख़िदमात बेमिसाल हैं। मजाज़ के लिखे हुए अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी के तराने के ये अशआर दोनों हज़रात के लिए निहायत मौज़ू हैं।

जो अब्र यहां से उठेगा वो सारे जहां पर बरसेगा
ख़ुद अपने चमन पर बरसेगा ग़ैरों के चमन पर बरसेगा
हर शहर ए तरब पर गरजेगा हर क़सर ए तरब पर कड़केगा
ये अब्र हमेशा बरसा है ये अब्र हमेशा बर सेगा

रियासत बनाम जमहूरियत

१९४५ ईः बरसात का मौसम था। टोंक में कई रोज़ से रुक रुक कर मूसलाधार बारिश हो रही थी। लेकिन उस रोज़ तो क़हर बरपा था। बारिश रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी। सारा दिन और सारी रात बारिश होती रही लगता था गोया आसमान में सुराख़ हो गया हो। अगले दिन सुबह बारिश का दौर थमा। कुछ देर के लिए धूप निकल आई। हर तरफ़ जल थल था। शहर की गलीयों और बस्तीयों में घुटनों घुटनों पानी था। इतने पानी की निकासी का कोई इंतेज़ाम न था।

मन्ज़ूर आलम साहिब और हबीबुद्दीन ख़ान साहब शहर के हालात देखने के लिए घर से निकले। पाएजामा के पाइंचों को मोड़ कर घुटनों के ऊपर चढ़ाया एजूते हाथ में लिए और पुरानी टोंक से घंटा घर पाँच बत्ती क़ाफ़ला बाज़ार कचहेरी होते हुए नौशा मियां के पुल तक पहुंचे। क़ाफ़ला बाज़ार की होटलों और बिसातियों की दुकानों के तख़्त आम रास्तों में कश्तीयों के मानिंद तैर रहे थे। पूरे शहर में सन्नाटा था। मज़ीद हालात जानने के लिए वो आम रास्ते से हट कर बस्तीयों की तरफ़ गए।

मौहल्लों और बस्तीयों के हालात बहुत ख़राब थे। तेज़ रफ़तार बहते हुए बारिश के पानी ने कच्चे मकानों की दीवारों को इस तरह काटा था जैसे तेज़ धार चाकू से ख़रबूज़े की क़ाशें काटी गई हूँ। हर तरफ़ अफ़रातफ़री का आलम था। सैंकड़ों मकान ज़मीन बोस हो कर मलबे का ढेर बिन चुके थे। बचे हुए मकान भी गिरने के लिए ख़ाली जगह तलाश रहे थे बेपनाह शोर था चीख़म पुकार मची थी। औरतें अपने नौज़ाइद बच्चों को छाती से चिपकाए गिरी हुई दीवारों के ऊपर टिके हुए टूटे फूटे

कवेलू पोश छप्परों पर बैठी हसरत भरी निगाहों से अपने असासे को गंदे पानी और कीचड़ में पड़ा देख रही थीं। क्या बुजुर्ग और क्या जवान हर मर्द और औरत कीचड़ के पानी में अपना सामान ढूंढ रहा था। किसी को कोई कपड़ा या बर्तन हाथ लग जाता तो गंदे पानी से ही धो कर किसी ऊंचे मुक़ाम पर रख देता। जिस के घर के नज़दीक कोई दरख़्त था उस ने उस पर ही रज़ाई गूदड़े और पलंग लटका दिए थे। दरख़्तों की निचली शाख़ें तक़रीबन ढक चुकी थीं। कुछ लड़के ऐसे दरख़्तों पर इस लिए चढ़े बैठे थे कि उन को जब कोई सामान पकड़ाता तो वो उस को किसी ऊंची शाख़ पर लटका देते।

इस बर्बादी से बेनियाज़ कुछ नंग धड़ंग कम उम्र बच्चे ऐसे भी थे जो इस बारिश को कुदरत की तरफ़ से मिला हुआ एक नया खेल तमाशा समझ कर इस का पूरा लुत्फ़ उठा रहे थे। वो किसी ऊंचे मलबे के ढेर या पेड़ पर चढ़ कर पानी में छलांगें लगा लगा कर नहा रहे थे। बच्चों के इस खेल से लोगों को सामान तलाश करने में मज़ीद परेशानी हो रही थी। ऐसे में कोई बच्चा किसी बड़े के हाथ लग जाता तो पिटे बगैर न रहता।

बस्तीयों की गलीयों से गुजरते हुए दोनों हज़रात ग़रीब महज़ून अवाम की बर्बादी का ये मंज़र देख रहे थे। कभी कोई सामान उन के पैरों में भी उलझ जाता तो वो उसे निकाल कर पास खड़े शख़्स को थमा देते। कोई बुजुर्ग पानी में गिर जाता तो उसे सहारा दे कर किसी ऊंची जगह बिठा देते। इसी काम में शाम हो गई सूरज गुरूब हो गया तो दोनों घर आकर सर जोड़ कर बैठ गए। टोंक के ग़रीब मुफ़लिस अवाम की तबाही और बर्बादी देख कर उन्हें गहरा सदमा पहुंचा था।

अगले दिन सुबह ही दोनों शहर की बस्तीयों में फिर निकल पड़े। अब बस्ती मौहल्लों के हालात और ज़्यादा ख़राब हो चुके थे। पानी अपना रास्ता ख़ुद ढूंढ लेता है। पानी की ख़ुद बख़ुद निकासी के साथ मकानों का

मलबा बह कर रास्तों पर आगया था। गलीयों में इतना कीचड़ था कि दो क़दम चलना मुश्किल हो रहा था। लोग अपने शिकस्ता छप्परों को बच्ची हुई लकड़ीयों और बल्लियों के सहारे ऊपर उठा कर बारिश से बचने की कोशिश में मसरूफ़ थे। दोनों सारा दिन ऐसे ही लोगों की मदद करते हुए बस्ती मौहल्लों में घूमते रहे। अब ये उन का रोज़ का मामूल था। बिलानाग़ा किसी बस्ती में पहुंच जाते और लोगों की इमदाद करते। तबाह व बर्बाद अवाम उन्हें पहचान्ने लगे थे कुछ नौजवान भी उन का हाथ बटाने लगे थे।

रियासत के मंसबदारों और साहब्ज़ादों ने अपनी हवेलीयों और आसूदा हाल लोगों ने अपने घरों में तबाह व बर्बाद ग़रीबों को पनाह दी । उन के खाने पीने और रहने का इंतिज़ाम किया। हवेलीयों में तो उन ग़ुरबा के रिश्तेदार समां गए जो उन हवेलीयों में नौकर थे। बाक़ी शहर में पुख़्ता मकानों को उंगलीयों पर गिना जा सकता था। लेकिन लोगों की कसीर तादाद ग़रीब व बेआसरा ही थी।

बाहमी इमदाद के लिए दोनों ने चंद नौजवानों की एक जमात बना ली थी। अब इमदाद का काम भी कुछ कुछ तर्तीब से किया जा रहा था। किस बस्ती के किस घर में कौन सी अशीया की अशद ज़रूरत है उस की फ़हरिस्त हर रोज़ तै्यार की जाती और मतलूबा सामान आसूदा हाल लोगों से मांग कर इकट्ठा किया जाता या बाज़ार से ख़रीदने के लिए चंदा किया जाता। लेकिन ये सब ना काफ़ी था।

इन्फ़िरादी तौर पर तो सभी बा हैसियत अफ़राद रियासत के ओहदेदार और साहिब ज़ादगान मदद कर रहे थे लेकिन अंग्रेज़ हुकूमत और रियासत की तरफ़ से मुफ़लिस अवाम को बारिश और बीमारी से बचानेए उन को फिर से बसानेए उन के मकानों को पुख़्ता बनवाने या मरम्मत करानेए उन के रहने खाने और ज़रीयाऐ मआश का इंतिज़ाम

करने के लिए ना तो कोई कोशिश की गई और ना ही अवाम की इजतिमाई इमदाद की कोई मंसूबा बंदी की गई।

हालात बद से बदतर होते गए। पीने के लिए साफ़ पानी और खाने के लिए ग़ल्ला दस्तयाब ना था । बीमारीयां फैलने लगीं। हर घर में कोई ना कोई बीमार था इन में बच्चों और बुज़ुर्गों की तादाद ज़्यादा थी। अब पानी और ग़ल्ले के साथ दवाओं की भी ज़रूरत थी। पेट की बीमारीयों और बुख़ार ने कमज़ोर व लाग़र इंसानों का रहा सहा ख़ून भी निचोड़ लिया। कई बुज़ुर्ग और बच्चे भूक और बीमारी की ताब ना ला कर इस दुनिया को ख़ैराबाद कह गए। कुओं पर भारी भीड़ रहती एक मटकी पानी भी घंटों बाद मयस्सर होता। रियासत के सआदत अस्पताल में जो डाक्टर थे उन का दीदार मुश्किल था। डाक्टर के घर तो अलसुबह किसी मंसबदार का ताँगा पहुंच जाता और वो सारा दिन उन की हवेली की डेवढ़ी में बैठा उस के मकीनों के ईलाज के साथ साथ तीमारदारी भी करता रहता।

मन्ज़ूर आलम साहब और हबीबुद्दीन साहब को अब कई मोर्चों पर काम करना पड़ रहा था। उन के कुछ साथी किसी हकीम या अत्तार से दवाओं की पुड़ीयां ले आते कुछ सरकारी दवाख़ाने के कम्पाऊंडरों से शीशियों में दवा भर लाते और शहर में बांट देते। कुछ ने सक़्क़ों और भिश्तियों से मश्क़ें ले कर घर घर जा कर पानी पिलाया। इन सब के बावजूद हालात एतिदाल पर नहीं आ रहे थे। ये महसूस किया गया कि चाहे जितने जतन कर लो सरकार और रियासत की इमदाद के बगैर हालात सुधरने वाले नहीं हैं। इमदाद के कामों को सरकार के ज़रीय मुनज़्ज़म तरीके से कराया जाना निहायत ज़रूरी था।

अब दोनों हज़रात ने अवाम की तबाही और बर्बादी के हालात और उन की फ़लाह के लिए ज़रूरी इक़्दामात को अर्जियों में लिख लिख कर

रियासत के ओहदेदारों की हवेलीयों और दफ़्तरों के चक्कर लगाने शुरू किए। ग़रीब मुफ़लिस अवाम के दो चार अफ़राद भी उन के हमराह चले जाते। रियासत के ओहदेदारों और मंसबदारों से मिलना आसान ना था। कई कई दिन के इंतिज़ार के बाद किसी मंसबदार का दिल चंद लम्हा रहम से पसीजता तो बस इतना कि मुलाक़ात हो जाती और कोई नौकर उन के हाथ से अर्जी लेकर मंसबदार को पेश कर देता। जिसे वो सरसरी निगाह से देख कर आगे बढ़ जाते। ज़बानी अर्ज़ दाश्त के लिए मुँह से अलफ़ाज़ निकलने शुरू होते इस से कब्ल ही मंसबदार निगाह से ओझल हो जाते। नौकर मुँह खोले चंद लम्हा उन की तरफ़ देखता रहता फिर वो भी चल देता। अर्जी दाख़िले दफ़तर हो जाती या कूड़ेदान की रौनक़ बढ़ा देती। बाहर आकर जब मुलाक़ात पर तबसरा होता तो उन के हमराह गए अफ़राद और उन की जमात के अरकान भी हैरत से मुँह खोले अंजान निगाहों से उन की तरफ़ देखते रहते।

अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी की रिवायती पोशाक शेरवानी है। हर तालिब ए इलम को एक काले रंग की शेरवानी बाज़ाबता तौर पर बनवानी होती है। इस शेरवानी के कालर पर यूनीवर्सिटी का निशान होता है जिस पर अल लमल इनसाना मअलम यअलम लिखा होता है। दोनों हज़रात हमेशा यूनीवर्सिटी की रिवायती पोशाक में ही रहते थे। मंसबदारों का बरताओ तो उन की उम्मीद के ऐन मुताबिक़ था लेकिन उन्हें अपने साथीयों का तर्ज ए अमल परेशान कर रहा था। इस पर ग़ौरो फ़िकर करने से चंद बातें उन की समझ में आईं। अव्वलए उन का पहनावा यानी शेरवानी, सर पर टोपी पैरों में मौज़े और पालिश किए हुए जूते । जबकि उन के साथ गए अफ़राद के तन पर सिर्फ कुरता पाएजामा या तहमद और पैरों में चप्पलें या जूते होते। दोयमए खड़े होने का अंदाज़ यानी सर उठा हुआ और सीना तना हुआ जबकि उन के साथी रुकु और सजदे के

बीच झूलते रहते। सोयम बात करने का सलीक़ा यानी मंसबदार को अवाम की इमदाद के इक़दामात और सरकार के फ़राइज़ बताना। जबकि उन के साथी तो ज़बां से कुछ ना कहते अलबत्ता हाथ के इशारे ज़रूर ऐसे होते जैसे भीक के लिए कटोरा हिला रहे हों।

रियासत व रजवाड़ों के ओहदेदारों को ये तीनों बातें सख़्त ना पसंद थीं । ऐसे लोगों को देखते ही वो मुश्तइल और बरअंगेख़्ता हो जाते थे । ग़रीब मुफ़लिस अवाम के वहमो गुमान में भी ना था कि वो रियासत के ओहदेदारों से अपना हक़ भी तलब कर सकते हैं। वो तो सदीयों से फ़र्यादी की तरह मांगते और जो मिल जाता उसे ख़ैरात समझ कर क़बूल करते चले आए थे। ओहदेदार भी उन को घुटनों के बल सर झुकाए हाथ फैलाए देखने के आदी हो चुके थे। और फिर ये फ़ैसला किया गया कि ओहदेदारों की बालादस्ती क़बूल नहीं की जाये उन के आगे सर नहीं झुकें और अवाम की सोच और ज़हनीयत को बदला जाये।

मन्ज़ूर आलम साहिब कोई भी काम अपने वालदैन की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ और उन की इजाज़त के बगैर नहीं करते थे। उन्हों ने तबाहो बर्बाद मुफ़लिस अवाम की इमदाद के लिए रियासत टोंक के ओहदेदारों से मुक़ाबले का फ़ैसला भी अपनी वालिदा की इजाज़त और दुआओं के साथ ही किया था।

ये फैज़ान ए नज़र था या कि मकतब की करामात थी
सिखाये किस ने इस्माईल को आदाब ए फ़रज़ंदगी

आफ़रीं उस बेवा ख़ातून पर जिस ने गोद में तीन साल की शीर ख़वार बेटी होने मज़ीद दो जवान होती बेटीयों की माँ होने और शौहर की वफ़ात की वजह से ख़ुद के अय्याम ए इद्दत में होने के बावजूद अपने उस जवान बेटे जिस की आला तालीमो तरबियत के लिए उन्हों ने अपना सारा सरमाया लगा दिया था और जो उन के ज़रीया ए मआश और

किफ़ालत का वाहिद वसीला था को राहे ख़ुदा में आगे बढ़ कर मुक़ाबला करने की ना सिर्फ इजाज़त दी बल्कि सरपरस्ती भी की और वसाइल व ज़राए की क़िल्लत के बावजूद उन्हें सहूलतें फ़राहम कीं ताकि उन की कोशिशों व काविशों में कोई कमी ना रहे। उन की बा हिम्मत बा सलाहीयत वालिदा की रगों में भी तो उनहीं बुज़ुर्गों का ख़ून दौड़ रहा था जिन्हों ने हज़रत अहमद शहीद रह० के साथ शहादत का दर्जा हासिल किया था।

मन्ज़ूर आलम साहिब के खजाने इल्म की दौलत से लबरेज़ थे। उन के पास मालूमात का एक बड़ा ज़ख़ीरा था। उन्हों ने क़ुरआन शरीफ़ की तफ़सीर और हदीसों का॰ इस्लामी तारीख़ और ख़ुलफ़ा ए राशिदीन की सवानेह हयात का और अल्लामा इक़बाल की शायरी का बहुत गहराई से मुतआला किया था। क़ुरआनो हदीस उन की रूह में और अल्लामा इक़बाल की शायरी का फ़लसफ़ा उन के दिलो दिमाग़ में तहलील हो चुका था। तारीख़ और जुग़राफ़िया उन के पसंदीदा मज़मून थे। इस्लामी तारीख्ख़ और ख़ुलफ़ा ए राशिदीन की सवानेह उन्हें याद थीं। यादाशत का ये आलम कि एक बार जिस किताब को पढ़ लेते पूरी हिफ़्ज़ हो जाती। किताब के मुसन्निफ़ के नाम से लेकर इशाअत का साल और किताब के किस सफ़हे पर किस मज़मून पर क्या लिखा है फ़ोरन बता दिया करते थे।

अपने इल्म को उन्हों ने अपने साथीयों में तक़सीम करना शुरू किया। उन को समझाया कि हुकूमत से वो अपना हक़ मांग रहे हैं ख़ैरात नहीं। इस्लामी तारीख़ की रोशनी में और ख़ुलफ़ा ए राशिदीन की सवानेह की मिसालें दे कर हुक़ूक़ की हुसूल याबी की जंग सर उठा कर लड़ने की तरग़ीब दी। उन के दिलो दिमाग़ में ये बात बिठा दी कि उन्हें अपने और अपने हम वतनों की ख़ुशहाली के लिए जुर्रत और बहादुरी के साथ जद्दो

जहद और मुदाफ़ेअत करनी है। उन्हों ने क़ौम व अवाम को मुत्ताहिद और मुस्तहकम रहनेए एक दूसरे के लिए ईसार और क़ुर्बानी और औलाद को जदीद तालीम दिलवाने की तबलीग़ की। उन के आमाल और तक़रीरों से मुतास्सिर हो कर सैकड़ों अफ़राद उन की जमात में शामिल हो गए। अल्लामा इक़बाल के फ़लसफ़ेए दीनो इलम से लबरेज़ उन की तक़रीरें सुन्ने वालें के दिलो दिमाग़ में मौलवी के वाज़ की तरह उतरती चली जातीं। लोग उन्हें मौलाना कह कर भी बुलाने लगे थे। अब बिलानाग़ा किसी ना किसी साथी के मकान के नज़दीक नशिस्तों का दौर शुरू हो गया जहां मौहल्ले के बहुत से अफ़राद जमा हो जाते। उन की हर मजलिस अल्लामा इक़बाल की नज़म. उठो ! मेरि दुनिया के ग़रीबों को जगा दोए से ही शुरू होती थी। अपनी जमात के अराकीन और अवाम को मुल्क के हालात से बाख़बर रखनेए इंसानी हुक़ूक़ से रोशनास करानेए और हुक़ूक़ की हुसूल याबी के लिए जद्दो जहद और मुदाफ़ेअत करनेए हुकमरानों के फ़राइज़ से वाक़फ़ीयत कराने की दोनों हज़रात के ज़रीया दी जा रही तर्बीयत रंग ला रही थी। अवाम में उन की मक़बूलियत बढ़ती जा रही थी । उन की कारकर्दगी अब तहरीक की शक्ल इख़तियार कर रही । इस तहरीक को आगे बढ़ाने के लिए १९४५ ईः में एक तन्ज़ीम की तशकील दी गई। इस तन्ज़ीम का नाम रखा गया अंजुमन रिआया टोंक जिसके जनरल सेक्रेटरी मन्ज़ूर आलम साहिब मुंतख़ब हुए और टोंक में जमहूरीयत की दस्तक सुनाई दी

गरमाओ ग़ुलामों का लहू सोज़े यक़ीं से
कुनजिशके फ़रोमाया को शाहीं से लड़ा दो
सुल्तानी जम्हूर का आता है ज़माना
जो नक़्शे कोहन तुम को नज़र आए मिटा दो

उस वक़्त टोंक के नवाब जनाब सआदत अली ख़ां थे जो एक नेक और रहम दिल हुक्मराँ थे। उन्हों ने अवाम की फ़लाह व बहबूद और ख़ुशहाली के लिए बहुत से काम किए थे। रियासत टोंक अंग्रेज़ रेज़ीडेन्ट के तसल्लुत में थी जो जयपुर रहा करता था। अजमेर में अंग्रेज़ स्यासी नुमाइंदा रहा करता था जिस का दफ्तर गर्मीयों में माउंट आबु चला जाता था।

टोंक में अवाम की फ़लाह व बहबूदए रियासत के नज़मो नस्क़ और दीगर बंदोबस्त के लिए एक मजलिस ए इन्तिज़ामिया क़ायम थी। जिस के सदर ख़ुद नवाब साहिब होते थे। नायब सदर का तक़र्रुर अंग्रेज़ रेज़ीडेन्ट स्यासी नुमाइंदे के मश्वरे से करता था। पुलिस के मंसबे आला का ओहदा आई जी का हुआ करता था। होम मैंबर और वज़ारत के दीगर ओहदों पर नवाब साहिब के मोतमिद और क़रीबी रिश्ते के साहिबज़ादगान को ख़ुद नवाब साहिब ही फ़ाइज़ किया करते थे। रियासत के नज़मो नस्क़ और दीगर बंदोबस्त के तमाम इख़्तियारात नायब सदर के पास थे। पुलिस और ख़ुफीया शोबा भी उसी के मातेहत थे। रियासत के हर शोबे के काम काज और ओहदेदारों पर उस की निगरानी और नज़ारत रहती । वो अंग्रेज़ अफ़सरान के इशारों पर काम किया करता था। नवाब साहिब के मुसाहिबीन और मुशीरों पर उस की बालादस्ती थी।

मजलिसे इन्तिज़ामिया के नायब सदर के ओहदे पर एस०एम०मीर फ़ाइज़ था। जो गंदी ज़हनीयत का नालायक़ए नाक़ाबिल और ना अहल इंसान था। टोंक और इस के हर परगने में बद अमनी और बद इंतिज़ामी थी। ११ नवंबर १९४५ ईः को गुलज़ार बाग़ में नवाब साहिब एस०एम०मीर आई०जी०पुलिस लिण्डन बूम और दरबार सेक्रेटरी हामिद अली बैग के दरमयान जो मीटिंग हुई इस में एस०एम० मीर ने जामा मस्जिद क़ाफ़ला में मन्ज़ूर आलम साहिब और हबीबुद्दीन साहिब की तक़रीरों का हवाला

दे कर उन्हें गिरफ़तार करने का दबाओ लिण्डन बूम पर बनाया और पुलिस पर अंजुमन के हिमायती होने का इलज़ाम लगाया। इस पर लिण्डन बूम ने उसी दिन एसण्एमण्मीर को एहतिजाजी ख़त लिखा जिस में सेलाब से तबाहो बर्बाद ग़रीब अवाम की पज़मर्दगी पर तशवीश ज़ाहिर की ओर उन के हक़ में की गई तक़रीरों को मोतदिल और मुतावस्सित बताया ।

२२ नवंबर १९४५ ईः को अंग्रेज़ रेज़ीडेन्ट राजपूताना जयपुर जॉर्ज जीलान के पुलिस सलाहकार ने उन्हें जो ख़त लिखा उस में एसण्एमण मीर के नाक़ाबिल नाएहल और राशि होनेए नवाब साहिब के भारी क़र्ज में डूबे होने उन्हें रियासत के ख़ज़ाने से ग़लत तरीक़े से रक़म मुहय्या करा कर एसण्एमण्मीर के नायब सदर के ओहदे पर क़ाबिज़ रहनेए सेलाब से तबाहो बरबाद ग़रीब अलम ज़दा अवाम की कोई इमदाद ना करने और ग़ल्ले की नाजायज़ दरआमद होने का ज़िक्र है।

अंजुमन की तशकील के साथ ही इस का सीधा तसादुम अंग्रेज़ हुकूमत के नुमाइंदों और रियासत के ओहदेदारों से शुरू हो गया। अंजुमन और रियासत के दरमियान एक सर्द जंग का आग़ाज़ हुआ। अफ़वाहों के बाज़ार गर्म होने लगे। ख़ुफिया शोबा और चापलूस मसाहिबीन उस सर्द जंग को हवा दे कर भड़का रहे थे। अंजुमन का दायरा बढ़ने लगा। हर मज़हबो मिल्लत के पैरोकार हर मौहल्ले और बस्ती के बाशिंदगान अंजुमन के साइबान तले जौक़ दर जौक़ चले आ रहे थे। अंजुमन का मुतालिबा महज़ इतना था कि बारिश से तबाहो बर्बाद ग़रीब मुफ़लिस अवाम के मकानों को या तो पुख़्ता बनाया जाये या मरम्मत कराई जाये उन के लिए ग़ल्ला फ़राहम किया जाये उन के ज़रीयाऐ मआश का बंदोबस्त किया जाये। लेकिन रियासत के ओहदेदार इन मुतालिबात को मानने के लिए राज़ी ना थे ।

अंग्रेज़ बुनियादी तौर पर साज़िशी फ़ित्रती ओर तख़रीबी ज़हनीयत का मालिक था। उसे ना तो अवाम की फ़लाह की फ़िक्र थी ना बहबूद की ख़्वाहिश । बज़ाहिर तो अंग्रेज़ उसूलों के पाबंद और इंसाफ़ पसंद नज़र आते लेकिन बातिन में वो बिलकुल मुख़्तलिफ़ थे। इन्हीं रेशा दवानियों के चलते मजलिसे इन्तिज़ामिया के नायब सदर मीर ने ख़ुफिया शोबे के अरकान की मदद से नवाब साहिब के मसाहिबीन और मुशीरों को बहला फुसला कर उकसाया और उन के ज़रीय नवाब साहिब को बदगुमान करना शुरू कर दिया। उन्हें यहां तक वरग़लाया गया कि दोनों नौजवान वकील अवाम की मदद से ख़ूँरेज बग़ावत करके रियासत का तख़्ता पलटने की साजिश कर रहे हैं। नवाब साहिब को हिंदूस्तान के हालात का बख़ूबी इल्म था। मुल्क की सूरते हाल अंग्रेज़ हुकूमत और उस की रियास्तों के हक़ में नहीं थी। पूरे मुलक में इंतिशार था। आज़ादी की जंग अपने उरूज पर थी। और टोंक में जंगे आज़ादी का पर्चम दो नौजवान वकील बुलंद कर रहे थे। नवाब साहिब ने भी सोचा कि अगर दोनों हज़रात पर लगाम नहीं कसी गई तो उन की रियासत और इक़तिदार खतरे में पड़ सकता है।

रियासत के हर शोबा में बद इंतज़ामी थी ओहदेदार रियासत के बाहर ग़ल्ले की नाजायज़ दरआमद करा कर ताजिरों से ज़ाती मुनाफा कमा रहे थे । अंग्रेज नायब सदर ओजियर के दौर में राशन के ज़रीय शुरू की गई ग़ल्ले की तक़सीम मौक़ूफ कर दी गई थी। मुफ़लिस अवाम बेहद परेशान थी। बेशुमार ग़रीब ऐसे भी थे जिन्हें एक वक़्त की रोटी भी मुश्किल से नसीब होती थी । कभी कभी तो पूरा दिन ही फ़ाक़े की नजर हो जाता था। मौसमे सरमा में अंजुमन के एक रुक्न के मौहल्ले में मजलिस का एहतिमाम था। जिस में इक़बाल की वही नज़म पढ़ी जा रही थी और जब ये शेअर पढ़ा गया कि–

जिस खेत से दहक़ां को मयस्सर नहीं रोज़ी
उस खेत के हर ख़ोशा ए गंदुम को जला दो

तब कुछ नौजवानों ने ये तजवीज़ रखी कि अनाज के सरकारी गोदामों पर क़बजा करके ग़ल्ला ग़ुरबा में तक़सीम कर दिया जाये। सरबराहे अंजुमन ने बहुत खुश उसलूबी से नौजवानों की इस तजवीज़ को मुस्तरद कर दिया । लेकिन उन्हें ये एहसास भी हो गया कि उन की दरसो तदरीस ने जो चिराग़ रोशन किए हैं वो उस चिंगारी के मानिंद हैं जो हवा के मामूली झोंके से शोला बन सकती है। और ये शोले आतिश फ़शां का रूप भी इख़तियार कर सकते हैं। अवाम के दिलो दिमाग़ में इस जोत को जलाए रखना और उन चराग़ों को रोशन रखना अगर ज़रुरी था तो इस ग़मो गुस्से का इख़राज भी निहायत ज़रूरी था। वो गांधी जी के अहिंसावादी आंदोलन की तर्ज पर अदम तशद्दुद के साथ एक अमन पसंद तहरीक चलाना चाहते थे। उन्हों ने नौजवानों को समझाया कि अमन पसंद अवामी तहरीक के ज़रीय हुकूमत को ग़ुरबा में ग़ल्ला तक़सीम करने के लिए मजबूर किया जाएगा। वो नहीं चाहते थे कि ग़रीब मासूम गिरफ्तार हों और जेल में डाल दिए जाएं। लेकिन अपने साथीयों के जज़बात का एहतराम भी ज़रूरी था। ग़रीब अवाम की नफ़सा नफ़सी के हालात नवाब साहिब और अंग्रेज़ हुकूमत तक पहुंचाने की कोशिश में वो सरगरदां रहे और इस जुगत में भी मसरूफ रहे कि किसी तरह हुकूमत को ग़रीब अवाम में ग़ल्ला तक़सीम करने के लिए मजबूर किया जाये।

ग़रीब मुफलिस अवाम के बहुत से रिश्तेदार अज़ीज़ो अक़ारिब नवाब साहिब के महल और रियासत के ओहदेदारों की हवेलीयों में चाकरी किया करते थे जिन के ज़रीय महलों और हवेलीयों की ख़बरें अवाम तक पहुंच जाया करतीं थीं। दोनों हज़रात को पता चला कि अंग्रेज़ स्यासी नुमाइंदा कर्नल जी०बी० विलियम सरकारी दौरे पर टोंक आए हुए हैं। दोनों हज़रात

उन से मिलने की मंसूबा बंदी करने लगे। लेकिन अंग्रेज़ अफ़्सर से मिलना इतना आसान ना था। जिस रियासत में मुक़ामी ओहदेदारों से मुलाक़ात ही मुहाल हो वहां स्यासी नुमाइंदे जैसे आला अफ़्सर से मुलाक़ात तो दूर उसे नज़र भर देखना भी उन की दस्तरस से बाहर था। महल नज़र बाग़ में चाकरी करने वाले एक शख़्स से उन्हें ये ख़बर मिली कि कर्नल विलियम को नवाब साहिब मुर्ग़ाबीयों के शिकार के लिए लेकर गए हैं। उस दौर से आज़ादी के कई साल बाद तक सर्दीयों के मौसम में टोंक के गर्दो नवाह में वाक़्य तालाबों पर दूसरे मुमालिक से नक्ले वतन करके आए आबी परिन्दोंए बतखों वग़ैरा के शिकार की बड़ी शौहरत और ग़लग़ला था। ख़ुसूसन गिरे गूज़ का शिकार। यानी भूरे ख़ाकस्तरी रंग की बत्तख़ जिसे टोंक में क़ाज़ कहते हैं। हर इतवार को किसी तालाब पर इस शिकार का एहतमाम किया जाता था। ख़ुसूसन टोंक से आठ मील के फ़ासले पर वाक़य चंदलाई के तालाब पर क्योंकि वहां उन आबी परिन्दों की तादाद बहुत ज़्यादा होती थी। ख़ुद नवाब साहिब उस शिकार में शिरकत करते थे।

दोनों हज़रात ने कर्नल विलियम और नवाब साहिब के शिकार से वापसी पर उनहें रास्ते में रोक कर मिलने का जुर्रत मंदाना फ़ैसला किया और अंजुमन के सैकड़ों अराकीन के साथ मिल कर नवाब साहिब की सवारी को रोक लिया। चंद लम्हों में वहां भारी भीड़ जमा हो गई। दोनों हज़रात ने ग़रीब मख़लूक़ की पज़मुर्दगी और पसमांदगी के हालात उन्हें बताए और राशन से ग़रीबों में ग़ल्ला तक़सीम कराने और एसण्एमण्मीर को बरतरफ़ करने का मुतालबा किया। जीण्बीण विलियम ने १० फरवरी १९४६ ईः के इस वाक़य का जिक्र अपने टोंक दौरे की रूदाद में किया है। उन के इस इक़दाम के कुछ ही दिन बाद नवाब साहिब ने टोंक के देहाती इलाक़ों का दौरा किया और बहुत से गांव के पंच पटेलों से मुलाक़ात की।

पंच पटेलों ने उन की पज़ीराई की और ख़ातिर तवाज़ो करनी चाही लेकिन नवाब साहिब ने कुछ नहीं खाया और पंच पटेलों से इस्तिदा की कि शहर की ग़रीब मख़लूक़ के लिए ग़ल्ला मोहय््या कराएं। उन के कहने पर पटेलों ने ग़ल्ला इकट्ठा करके टोंक शहर को भिजवाया जिसे शहर की मुख़्तलिफ़ हवेलीयों में रखवाया गया और ग़रीबों में तक़सीम कराया गया।

रियासत के ओहदेदारों में दोनों हज़रात के चर्चे आम हो गए थे। अंग्रेज़ हुकूमत को सब से बड़ा ख़तरा अवाम के मुत्तहिद होने से था। हिंदूस्तान में हर तरफ़ आज़ादी की जंग लड़ी जा रही थी। लेकिन टोंक के अवाम इस से बेख़बर ही थे। अवाम की पहुंच में ना अख़बार था ना ही रेडीयो। उन तक तो ख़बरें हफ़तों महीनों बाद क़िस्से कहानीयों की शक्ल में पहुंचती थी। उन दिनों अख़बार डाक से हफ़ता अशरा में आया करते थे। मन्ज़ूर आलम साहिब पाबंदी से अख़बार मंगा कर पढ़ते और अपने साथीयों को सुनाते। लेकिन उन अख़बारात में मुलक से मुताल्लिक़ ही ख़बरें होती थीं। रियासत और मुक़ामी ख़बरों को अवाम तक पहुंचाने का कोई ज़रीया ना था।

मन्ज़ूर आलम साहिब और हबीबुद्दीन साहिब के एक दोस्त जनाब उमर हयात ख़ां अलीगढ़ ;यूपीद्ध में उर्दू अख़बार हादी के ऐडीटर थे। टोंक के ग़रीब मुफ़लिस अवाम की नफ़सा नफ़सी से मुताल्लिक़ खबरें उन्हें भेजी जातीं जिन्हें वो अपने अख़बार में शाये करके उस की बहुत सी कापीयां टोंक भिजवा देते। जिन्हें अवाम में तक़सीम कर दिया जाता। डाक से ख़बरें भेजना और अख़बार मंगाना बहुत ख़तरनाक था इस लिए ख़बरें दस्ती भेजी जातीं और अख़बार भी दस्ती ही मंगाए जाते। अंग्रेज़ हुकूमत और रियासत के ख़िलाफ़ छपी ख़बरों के अख़बारात की तक़सीम में गिरफ्तारी का ख़तरा लाहक़ था। इस लिए उन अख़बारात को नमाज

के बाद मसाजिद के बाहर नमाज़ियों में एहतियात और ख़ामोशी से तक़सीम किया जाता था। दोनों हज़रात की कारकर्दगी की खबरें अब बस्ती मौहल्ले से निकल कर हवेलीयों और महलों तक पहुंचने लगी थीं। अंग्रेज़ सरकार और रियासत के ख़ुफ़या शोबे ने भी उन के मुताल्लिक़ मालूमात अख़ज़ कर के अपने हुकमरानों को देनी शुरू करदीं। और उन की नक़लो हरकत पर नज़र रखी जाने लगी। हादी अख़बार पर रियासत में पाबंदी आयद करदी गई। तब अख़बार का नाम हादी से बदल कर महादी करवाया गया और तक़सीम जारी रखी गई।

मजलिसे इन्तिज़ामिया के नायब सदर एस.एम.मीर ने अपने अंग्रेज़ आक़ाओं के इशारे पर ख़ुफ़या शोबे की मदद से रियासत के चापलूस मसाहिबीन और फ़ित्रती मुशीरों और मफ़ादपरस्त ओहदेदारों का एक गिरोह बना दिया और साजशिों के बाज़ार गर्म कर दिए। रियासत के ओहदेदारों के तहफ़्फ़ुज़ और दिफ़ा के लिए एक जांनिसार पार्टी बनाई गई जिस में ज़्यादा तर रियासत के मुलाज़िम और चंद मफ़ाद परस्त लोग शामिल थे। एसण्एमण्मीर के इस शर पसंद गिरोह के रुक्न जाफ़र और सादिक़ के मानिंद थे जिन के लिए अल्लामा इक़बाल ने फ़रमाया है।

जाफ़र अज़ बंगालो सादक़ि अज़ दकन
नंगे मिल्लत नंगे दीन नंगे वतन

एक दिन दोनों सरबराहाने अंजुमन को इत्तिला दी गई कि नवाब साहिब ने उन्हें मुलाक़ात के लिए तलब फ़रमाया है। मुलाक़ात का वक़्त और जगह भी बताई गई। दोनों हज़रात महल्ल नज़र बाग़ में मुक़र्रर मुक़ाम पर कब्ल अज़ वक़्त पहुंच गए। तवील इंतेज़ार के बाद नवाब साहिब तशरीफ़ लाए और आते ही पूछा. कहीए कैसे आए। जवाब दिया. आप ने बुलाया है इस लिए आए हैं। इस पर नवाब साहिब ने कहा. मैंने तो नहीं बुलवाया । दोनों हैरतो ताज्जुब से उन्हें चंद लम्हा देखते रहे और

फिर सलाम करके उठ कर चले आए। इस वाक़य की वजह शरपसंदों की ख़ुराफ़ात थी या तरसीलो मुरासले का ख़ला ये मालूम नहीं हो सका। लेकिन इस वाक़य के बाद रियासत और अंजुमन में कशीदगी मज़ीद बढ़ गई और साथ साथ अंजुमन की सरगर्मीयां भी। इसी दौरान दोनों हज़रात ने जयपुर जाकर रेज़ीडेंट आर आर बर्नेट से भी मुलाक़ात की और मुफ़लिस अवाम की इमदाद और एसण्एमण्मीर की बरतरफ़ी का मुतालिबा किया।

नायब सदर एस.एम. मीर ने नवाब साहिब को पूरी तरह अपनी गिरिफ़्त में ले लिया था। लेकिन रियासत के बिगड़ते हालात की वजह से अब नवाब साहिब भी मीर से नालां व नाखुश थे। रेज़ीडेंट आर आर बर्नेट ने १९ ता २१ जुलाई १९४६ ईः के टोंक दौरे की रूदाद में नवाब साहिब के मुहम्मद मीर को तबदील करने की दरख़ास्त और सरबराहाने अंजुमन से जयपुर में हुई मुलाक़ात का जिक्र है। इस पर मीर की जगह रहमान बख़्श क़ादरी को फ़ाइज़ किया गया। क़ादरी साहिब ने ये ओहदा माह अक्तूबर में सँभाला। आई जी लिंडन बूम मार्च में ही अपने ओहदे से सुबकदोश हो गए थे। उन के बाद शेख हमीदुल्लाह को आई जी बनाया गया। लेकिन मीर और इस का जाफ़र व सादिक़ गिरोह अंजुमन की अवामी तहरीक के ख़िलाफ़ पूरी तरह सरगर्म ए अमल रहा।

एक शाम दोनों हज़रात को घंटाघर के पास जनाब अच्छन ख़ांसाहब मिले और बड़े प्यार से कहा. अरे गुंडों यूं आज़ाद बेफ़िक्र कहाँ घूम रहे हो । जाओ जल्दी जाकर कहीं छुप जाओए क्या तुम्हें मालूम नहीं कि तुम दोनों की गिरफ़तारी के वारंट निकल गए हैं । उस दौर में गिरफ़तारी के ख़्याल से ही पसीना छूट जाता और लर्ज़ा तारी हो जाताथा। क्योंकि ऐसी गिरफ़तारी की ना समाअत थी ना दादरसी। लेकिन वो दिलेर बा हिम्मत

और बेबाक इंसान थे उन का हौसला बुलंद और क़ाबिले दीद था। उन्हों ने फ़रार होकर रुपोश हो जाने पर गिरफ़तारी को तर्जीह दी।

दोनों हज़रात ने अंजुमन के कुछ ख़ास अराकीन को बुलवाया और गिरफ़तारी के बाद के हालात पर ग़ौरो फ़िक्र शुरू हुआ। अंजुमन के अराकीन का मश्वरा था कि शहर में मुनादी कराई जाये और अवाम को जमा किया जायेए गिरफ़तारी की पुर ज़ोर मुख़ालिफ़त की जायेए अगर गिरफ्तारी हत्तमीए नागुज़ीर हो तो सैकड़ों अफ़राद एक साथ गिरफ़तारी दें। लेकिन सरबराहाने अंजुमन ने अपने जांनिसार की तजावीज़ को ये कह कर मुस्तरद कर दिया कि हो सकता है ये अफ़वाह सिर्फ अवाम में ख़ौफ़ो हिरास फैलाने असल मुतालिबात से तवज्जह हटाने और तहरीक को कमज़ोर करने की ग़र्ज़ से फैलाई गई हो और ये भी मुम्किन है कि हुकूमत अंजुमन के ख़ास ख़ास कारकुनों को क़ानून शिकनी के बहाने गिरफ़तार करके मुक़दमा क़ायम करने के मौक़े तलाश रही हो। उन्हों ने अंजुमन के कारकुनों को समझाया कि उन की गिरफ़तारी की सूरत में सब्र व तहम्मुल से काम लिया जायेए अदम तशद्दुद के साथ क़ानून के दायरे में साबित क़दम रहते हुए जोशो ख़रोश के साथ अंजुमन की तहरीक को आगे बढ़ाया जाये। और फ़िलहाल हुकूमत के अगले क़दम का इंतिज़ार किया जाये। अरकाने अंजुमन ने अपने सरबराहान की राय से इत्तिफाक़ किया। फिर भी वो उन के पास बहुत देर तक बैठे रहे। और काफ़ी समझाने के बाद ही रुख़स्त हुए ।

दोनों हज़रात जब अकेले रह गए तो तमाम हालात पर अज़ सरनो ग़ौर किया। किसी एहतिजाज के बग़ैर गिरफ़तारी स्यासी बिसात पर एक दूर अंदेशाना फ़ैसला था। गिरफ़तारी की शक्ल में उन्हें अवाम की हिमायत हासिल होना तो लाज़िम था लेकिन गिरफ़तार होने पर वो हुकूमत के ज़ुलमो तशद्दुत का शिकार भी होते। जो अपने वालदैन की

पिटाई तो दूर उन की डांट व सरज़निश से भी ना आशना थे उन्हों ने सिर्फ अवाम की फ़लाहो बहबूद की ख़ातिर उस दौरे हुकूमत में हर जुलमो ज़्याति बर्दाश्त करने का फ़ैसला करके मुस्तक़बिल क़रीब में पैदा होने वाले हालात का मुक़ाबला करने के लिए ख़ुद को तैय्यार कर लिया। और सभी अराकीने अंजुमन के रुख़सत होने के बाद दोनों हज़रात पुरानी टोंक के मकान जिस में उन दिनों मन्ज़ूर आलम साहिब रहा करते थे के पास एक बड़ के दरख़्त के नीचे बैठ गए और देर रात तक पुलिस का इंतेज़ार करते रहे। काफ़ी रात गुज़र जाने के बाद जब कोई ना आया तो अपने अपने घर चले गए। रात के आख़िरी पहर मंज़ूर आलम साहिब के घर का दाख़िली दरवाज़ा खटखटाया गया ए उन की आँख खुल गईए वो उठे वज़ू कियाए नमाज़ अदा की और शेरवानी पहनी फिर सोती हुई वालिदा के क़दमों के पास खड़े रह कर उन को देखते रहे और फिर आहिस्ता से सलाम करके बाहर आगए और दरवाजा खोल दिया। लेकिन सामने पुलिस के बजाय इक शनासा को देख कर उन्हें मुसर्रत के साथ मायूसी भी हुई।

लेकिन ये भी हक़ीक़त थी कि सरबराहाने अंजुमन की गिरफ़तारी की साज़िश रची जा चुकी थी। रियासत के ओहदेदार मौक़ा तलाश रहे थे। पुलिस पसोपेश में थी कि गिरफ़तारी किस तरह अमल में लाई जाये गिरफ़तारी के बाद हालात क्या रुख़ इख़तियार करेंगेए अंदाज़ा लगाना मुश्किल था । अंजुमन की सरगर्मीयां नशिस्तों और मजलिसों तक महदूद थीं। अब तक ना तो कोई अवामी जलसा मुनक़्क़िद हुआ था और ना ही एहतिजाज के लिए सरे आम मुज़ाहिरे किए गए थे । लेकिन मन्ज़ूर आलम साहिब की तक़रीरों और फ़लसफ़े से मुतास्सिर हो कर अवाम की फ़िक्र व सोच भी उन से हम आहंग हो गई थी और लोग ज़हनी तौर पर एक दूसरे से मुंसलिक हो गए थे। आख़िर एक दिन पुलिस ने हिम्मत

करके हबीबुद्दीन ख़ान साहब को गिरफ़तार कर लिया। गिरफ़तारी की ख़बर शहर में जंगल की आग की तरह फैल गई। शहर में सन्नाटा पसर गया। पुलिस गशत बढ़ा दी गई बाज़ार चैराहों पर पुलिस तैनात करदी गई।

अवाम के दिलों में ग़म और ग़ुस्सा था लेकिन कुछ मज़ीद अनहोनी का डर और ख़ौफ़ भी था। लोग अपने मौहल्लों और घरों में सिमट गए। लेकिन मर्दे मुजाहिद रहबर ए मिल्लत मन्ज़ूर आलम साहिब कहाँ रुकने वाले थे । शेरवानी पहनी और तन तनहा घर से निकल पड़े। पड़ोसी हमसाए हैरतो तजस्सुस लेकिन पुर उम्मीद नज़रों से उन की तरफ़ देख रहे थे। उन के हाथ उठा कर साथ आने का इशारा करने की ही देर थी कि लोग घरों के चबूतरों से उतर करए डेवढ़ियों की दहलीज़ फलांग कर उन के हमराह चल पड़े और कारवां बनता गया।

पुरानी टोंक से घंटा घर, पाँच बत्ती होता हुआ ये कारवां जब बाज़ार क़ाफ़ला पहुंचा तो अवाम की तादाद हज़ारों में पहुंच गई। चैराहों पर खड़ी पुलिस तमाशा देखती रही। वो मंज़र भी कुछ कुछ गांधी जी के डांडी मार्च जैसा ही था। बाज़ार क़ाफ़ला के मग़रिब में जहां मौहल्ला क़ाफ़ला आबाद है वहां पहले एक बड़ा मैदान था जो आबादी में इज़ाफ़े की वजह से अब छोटा हो गया है। आज भी मालनें वहां बैठ कर सब्ज़ी फ़रोख़त करती हैं। इस मैदान के सामने मरहूम व मग़फ़ूर जनाब हबीबुद्दीन ख़ान साहब का मकान है और इसी मकान से उन्हें गिरफ़तार किया गया था। बाज़ार क़ाफ़ला से ये कारवां इस मैदान में पहुंचा।

क्या हुसन ए इत्तिफ़ाक़ था कि क़रीब सौ साल पहले बनास नदी के किनारे आबाद शहर टोंक की जिस सर ज़मीं पर मन्ज़ूर आलम साहिब के पुरसाने हाल आबा व अजदाद ने एक क़ाफ़ले के साथ आकर डेरा डाला

थाए उसी सर ज़मीं के एक ख़ित्ते पर उन का जानशीं आज एक और क़ाफ़ला लिए खड़ा था।

ए आब रुदे गंगा वो दिन हैं याद तुझ को
उतरा तेरे किनारे जब कारवां हमारा

लेकिन वो क़ाफ़ला ! वो कारवां ! तो एक लश्कर के मानिन्द था जिस का सिपहसालार यलग़ार के लिए अपनी जमहूरी अफ़वाज की सफ़हों को तर्तीब दे रहा था। जिस के आबा व अजदाद हजारों मील दूर से सर पर कफ़न बांध कर राहे ख़ुदा में ज़ुलम के ख़िलाफ़ जंग करने निकल पड़े थे । उन के जानशीं और वाली के ख़ून ही में ज़ुलमो ज़्यादती के ख़िलाफ़ जद्दो जहद करने की बेपनाह क़ुव्वत और सलाहीयत थी। शहर की हर जानिब से जौक़ दर जौक़ मख़लूक़ उस मैदान में पहुंचने लगी। ये उन लोगों का हुजूम था जिन्हें किसी ने वहां मदऊ नहीं किया था।

अवाम को ख़िताब करने के लिए वो एक ऊंचे मुक़ाम पर खड़े हो गए। अब तक उन की तक़रीरें नशिस्तों और मजलिसों तक महदूद थीं। ये पहला मौक़ा था जब वो एक अवामी जलसे में तक़रीर कर है थे। सूरज ग़ुरूब हो चुका था। रोशनी के लिए एक शख़्स गैस का हण्डा अपनी हथेली पर लिए खड़ा था जोशो जुनूं का ये आलम था कि कब उस की हथेली गर्मी से झुलस गई उसे पता भी ना चला। हल्की हल्की बारिश हो रही थी। लेकिन इन सब से बे परवाह मौजूद हुजूम अपने हमदर्द, अपने रहबर, अपने रहनुमा, अपने क़ायद को सांस रोक कर सुन रहा था। उन की जोशीली तक़रीर दो घंटा से जारी थी। लोगों में जोश और वलवला था। और जब उन्हों ने अल्लामा इक़बाल का ये शेअर पढ़ा कि–

उठो मेरि दुनिया के ग़रीबों को जगा दो
कॉख़े उमरा के दरो दीवार हिला दो

तब वहां मौजूद हुजूम के सब्र का पैमाना छलक उठा और वो ज़ोर ज़ोर से चलाने लगे हिला दो नहीं. गिरा दो! गिरा दो !गिरा दो! । हुजूम में एक अजीब हलचल ए एक अजीब बेक़रारी थी वो अपने रहबर के उस इशारे के मुंतज़िर थे जिस पर उन्हें जेल की तरफ़ कूच करना था और कॉख़े उमरा के दरो दीवार गिराने थे। उन के रहबर भी कूच का इशारा करने ही वाले थे तभी वहां आई जी पुलिस आगए और ये इत्तिला दी कि जनाब हबीबुद्दीन ख़ान साहब को जेल से रिहा कर दिया गया है। और फिर वो हुजूम ख़ुशी से सरशार झूमता हुआ मन्ज़ूर आलम साहिब के साथ हबीबुद्दीन खां साहिब के इसतिक़बाल के लिए जेल की जानिब चला गया और उन्हें एक बड़े जुलूस के साथ कॉंधों पर बिठा कर घर लाया गया।

आज भी हो जो बराहीम का ईमां पैदा
आग कर सकती है अंदाज़े गुलिस्तां पैदा

हबीबुद्दीन ख़ान साहब की गिरफ्तारी से मुताल्लिक़ २७ सितंबर १९४६ ईः को आई जी पुलिस ने अंग्रेज़ रेज़ीडेंट और स्यासी नुमाइंदा को जो रिपोर्ट भेजी इस के मुताबिक़ १३ सितंबर १९४६ ईः को सुबह दस बजे हबीबुद्दीन ख़ान साहबए अहमद साहिबए अबदुल्लाह साहिब और ज़ेनुलआबदीन साहिब ने म्यूंनिसपल्टी के मुलाज़िम फ़य्याज़ बुलंद उर्फ़ काला के साथ झगड़ा किया। हबीबुद्दीन ख़ान साहब ने हाथों से उस की गर्दन पकड़ी और उन के साथीयों ने उस के साथ मारपीट की। काला ने अपने दिफा में अपने भतीजे हाजी से तलवार मंगवाईए तलवार के वार से अबदुल्लाह साहिब जख़मी हुए। इस पर हबीबुद्दीन ख़ान साहब और उन के साथीयों के ख़िलाफ़ दफा ३०७ ताज़ीराते हिंद यानी इरादतन क़ातिलाना हमले का मुक़दमा दर्ज किया गया और उन्हें और उन के साथीयों को उसी दिन गिरफ़तार किया गया और जेल भेज दिया गया। लेकिन उसी रात

ज़मानत पर रिहा कर दिया गया। उन की रिहाई के लिए मन्ज़ूर आलम वकील ने बहुत बड़ा एहतिजाजी जलसा किया और रिहाई पर बड़ा जलूस निकाला।

अराकीन ए अंजुमन के छोटे मोटे झगड़े एकहा सुनी वग़ैरा रियासत के मुलाज़िमों ख़ुसूसन जांनिसार पार्टी से ताल्लुक़ रखने वाले मुलाज़िमों से आए दिन होते रहते थे। ऐसे ही मामूली वाक़िया पर क़ातिलाना हमला का मुक़द्दमा दर्ज करके आनन फॉनन गिरफ़तारी और जिस शख़्स ने तलवार से हमला करके अरकाने अंजुमन को जख़मी क्या हो इस के ख़िलाफ़ कोई कार्रवाई ना करना ज़ाहिर करता है कि ये गिरफ़तारी एक साजशि का नतीजा थी । लेकिन मन्ज़ूर आलम साहिब की तकरीर से अवाम के ग़मो ग़ुस्से में आए जोशो उबाल ने हुकूमत को झुकने पर मजबूर किया और रातों रात ही सभी को रिहा करना पड़ा।

टोंक में अवाम और जमहूरीयत की ये पहली फ़तह थी। तबले जंग बज गया था एजमहूरीयत ने टोंक की सरज़मीं पर अपने क़दम मज़बूती के साथ रख दिए थे और अब आगे बढ़ने के लिए ज़मीन हमवार हो रही थी। हफ़ता अशरा में मुख़्तलिफ़ मुक़ामात पर अवामी जलसे मुनक़्क़िद किए जाने लगे। इस के लिए शहर में बाक़ायदा ऐलान कराया जाता। उस वक़्त लाऊड स्पीकर तो थे नहीं। ऐलान करने के लिए टीन की चादर का भोंपू बनवाया गया। जनाब मुहम्मद सैद उर्फ़ मछु ख़ान साहब जिन की आवाज़ बहुत बुलंद थी साईकल पर इस भोंपू को लेकर शहर में घूम घूम कर जलसे के वक़्त और मुक़ाम का ऐलान करते थे और जलसे में अल्लामा इक़बाल की नज़्में भी पढ़ा करते थे। अवामी जलसे अब खुले आम मुनक़्क़िद होने लगे। नाज़रीन और सामईन की तादाद हजारों में पहुंचने लगी । तक़रीर करने वालों की आवाज़ सामईन तक ना पहुंचने की वजह से जयपुर से लाऊड स्पीकर भी मंगवाए गए। २६ सितंबर १९४६

ईः को हबीबुद्दीन साहिब की नाजायज़ गिरफ़तारी पर एक बड़ा एहतिजाजी जलसा मुनक़क़िद किया गया और चीफ़ जस्टिसए एसण्पीण और आईण्जीण की बरतरफ़ी का मुतालिबा किया गया।

दूसरी तरफ़ नायब सदर एसण्एमण्मीर और उस का पूरा गिरोह अंजुमन की मुख़ालिफ़त में कमर बस्ता था। शहर के मुअज़्ज़िज़ हज़रात उलमा और शोरा पर दबाओ डाल कर अंजुमन की मुख़ालिफ़त करने उस को बदनाम करने की मुहिम चलाई गई । उन की अवामी तहरीक के ख़िलाफ़ २८ सितंबर १९४६ ईः को वकीलों की बारए और ९ अक्तूबर १९४६ ईः को अंजुमन तहफ़्फ़ुज़ हुक़ूक़ुल मुस्लिमीन से क़रारदाद मन्ज़ूर करा कर अंग्रेज़ रेज़ीडेंट और स्यासी नुमाइंदे को भिजवाई गईं। इसी अर्सा में हुकूमते बर्तानिया के ख़ुफीया शोबे दिल्ली के एक अफ़्सर टोंक आए । उन्हों ने १२ अक्तूबर १९४६ ईः को टोंक की अंधी बहरी सरकार के उनवान से ग़रीब मुफ़लिस अवाम की पज़मुर्दगी और पसमांदगी की रिपोर्ट मफ़ाद परस्त मुशीरों और अफ़सरान की फ़हरिस्त उन की बरतरफ़ी या तबादले के इलतिमास के साथ गवर्नर जर्नल और रेज़ीडनट को भेजी।

नवाबों के मुशीर हालाँकि मुक़ामी थे लेकिन उन का मफ़ाद भी अंग्रेज़ों से जुदा ना था। अक़्ले सलीम से आरी मुफ़ाद परस्त और ना तजर्बेकार मुसाहिबए मुशीर और ओहदेदार अंग्रेज़ हुकूमत के मातहेत नायब सदर और रियासत के ख़ुफीया शोबे के हाथों की कठपुतली थे । रियासत के नवाब नाक़िसों और फ़ासिक़ों के दरमियान इस तरह घिर गए थे कि चाह कर भी बाहर नहीं निकल सकते थे।

हबीबुद्दीन ख़ान साहब की गिरफ़तारी भी उन्हीं नाक़िसों के ख़ुराफ़ाती दिमाग़ का नतीजा थी। ये नहीं चाहते थे कि नवाब साहिब के

सरबराहे अंजुमन से सीधे मुज़ाकरात हों। इस लिए ऐसी हरकतें की जातीं कि दोनों के दरमियां दूरियां और कशीदगी बढ़े ।

सरबराहे अंजुमन के अहलो अयाल और अवाम को हैरानो परेशान और ख़ौफ़ज़दा करने के लिए तरह तरह की अफ़्वाहें फैलाई जातीं।

मन्ज़ूर आलम साहिब की वालिदा तक ये ख़बर ख़ुफ़या तरीक़े से पहुंचाई गई कि उन के घर की ख़ादिमा को नवाब ने रखवाया है ताकि मौक़ा मिलते ही उन्हें ज़हर दिया जा सके। महीनों इस ख़ादिमा की नक़लो हरकत पर नज़र रखी गई उस बेचारी की बनाई हुई खाने की चीज़ों को पहले बिल्ली या परिन्दों को खिला कर परखा जाता। जनाब नसीर मौहम्मद खां साहब जिन की दुख़तर बेगम बदरुन्निसां बाद अज़ां मन्ज़ूर आलम साहब की रफीक़े हयात हुईं ने घर आकर अपनी अहलिया और बेटीयों को बताया कि नवाब ने दिल्ली से मख़सूस राइफ़ल और कारतूस मंगवा लिए हैं जो बे आवाज़ हैं। अब इन दोनों नौजवां वकीलों का अल्लाह ही मालिक है। शहर में ऐसी अफ़वाहों के रोज़ नित नए टकसाली गज़्ट शाये होते रहते थे।

हिंदूस्तान में अंग्रेज़ हुकूमत बहुत कमज़ोर हो चुकी थी लेकिन उन की कीनापरवर फ़ित्रती ज़हनीयत अब भी हुकूमत क़ायम रखने में मसरूफ़ थी। अंग्रेज़ एक तरफ़ नवाबों और राजाओं के हाथ में तलवार दे देते तो दूसरी तरफ़ अवाम के हाथ में ढाल थमा देते। नवाब साहिब से अंजुमन को जो उम्मीदें थीं उन पर तो हबीबुद्दीन ख़ान साहब की गिरफ़तारी के बाद ओस पड़ गई थी। लेकिन उन की रिहाई के लिए मन्ज़ूर आलम साहिब की अवामी जलसे में की गई जोशीली तक़रीर ने अंजुमन और अवाम के हौसलों को आसमान पर पहुंचा दिया था।

हिकमते अमली तबदील की गई। मन्ज़ूर आलम साहिब को उर्दू ज़बान के साथ साथ फ़ारसी और अंग्रेज़ी पर भी उबूर हासिल था।

अलफ़ाज़ए जुमलों और फ़िक्रों की बंदिश शायराना थी और ख़त इतना खूबसूरत और पक्का कि प्रैस में छपा हुआ महसूस होता था। लोग उन की तहरीर को पढ़ने से पहले उन के ख़ुशख़त में ही खो जाते थे। अल्लाह ने उन्हें एक आला दिमाग़ बख़शा था और उन्हों ने इस का भरपूर फ़ायदा उठा कर अपनी मेहनत व लगन से बेशुमार सलाहीयतें हासिल कीं थीं।

नई हिकमते अमली के तहत उन्हों ने एक ख़त अंग्रेज़ रेज़ीडेंट एन आर बर्नेट को लिखा। जिस में बारिश से अवाम की तबाही व बर्बादी के हालात ए रियासत के ओहदेदारान के ग़ैर ज़िम्मेदाराना बरताओ ए फ़र्ज में कोताही और लापरवाही और मुफ़लिस अवाम के जायज़ मुतालिबात को ताक़त व तशद्दुद से कुचलने का ज़िक्र तफ़सील से किया। रेज़ीडेंट उन के ख़ाुशख़त और तर्ज़ो तहरीर से बहुत मुतास्सिर हुआ। इस ने अपने दौरों में टोंक को शामिल कर के सरबराहाने अंजुमन से मुलाक़ात की तारीख़ए वक़्त और मुक़ाम मुक़र्रर करके इत्तिला अंजुमन को भिजवा दी।

रेज़ीडेन्ट की तरफ़ से मुलाक़ात का दावतनामा टोंक पहुंचा तो शहर की अवाम में ये ख़बर गशत करने लगी कि उन के रहनुमाओं से मिलने रेज़ीडेन्ट बज़ात ख़ुद टोंक आ रहा हैए इस ख़बर से जहां अवाम में ख़ुशी की लहर दौड़ गई वहीं मीर के परवरदा गिरोह ए ख़ुफ़या शोबे और उन के हमनवा रियासत के ओहदेदारों और मुशीरों में मुरदनी और मायूसी छागई। लेकिन उन के शातिर दिमाग़ ने एक नई ख़ुराफ़ात करने का फ़ैसला किया और नवाब साहिब के मुशीरों के साथ मिल कर उन को गुमराह कर भड़काया और वरग़लाया । उन्हें ये एहसास दिलाया कि ये उन की बहुत बड़ी बे इज़्ज़ती है। इस तरह नवाब सआदत अली ख़ां जो अंजुमन के रहनुमाओं से सीधे मुज़ाकरात करना चाहते थे एक बार फिर उन की साजशि का शिकार हो गए ।

रेज़ीडेन्ट के टोंक आने का दिन रफ़्ता रफ़्ता नज़दीक आरहा था

और शहर के अवाम की बेचैनी बढ़ती जा रही थी। दूसरी तरफ़ मीर के परवरदा गिरोह ने ख़ुफ़या शोबे की मदद से रियासत के ओहदेदार और मुशीरों को बहका कर अंजुमन के रहनुमाओं के ख़िलाफ़ एक नया जाल बिछाने में मसरूफ थे। और अंजुमन के रहनुमा इन सब से बेनियाज़ रेज़ीडेन्ट के सामने रखे जाने वाली ग़रीब और मुफ़लिस अवाम की बदहाली की तस्वीर बनाने और उन की फ़लाह व बहबूद के लिए उठाए जाने वाले इक़दामात की फ़हरिस्त तैय्यार करने में मसरूफ़ थे। देर रात तक लंबे बेहस व मुबाहिसे होते और बर्बाद मुफ़लिसों की फ़हरिस्त और नुक़्सानात का तख़मीना तैय्यार किया जाता। लेकिन क़ब्ल अज़ वक़्त तमाम तैय्ॎयारियां मुकम्मल कर ली गईं।

फिर उस मख़सूस दिन का आफ़ताब भी तुलू हो गया जब अवाम के रहनुमाओं की मुलाक़ात अंग्रेज़ हुकूमत के एक आला ओहदेदार से होने वाली थी। रियासत की तरफ़ से रेज़ीडेन्ट के आमदो रफ़्त के रास्तों पर और बाजारों में ख़ास इंतिज़ामात किए गए थे। अवाम को उन की बस्ती मौहल्लों तक महिदूद रखा गया था। अवाम में एक ख़ामोश सुगबुगाहट थी लेकिन ज़ेरे ज़मीं तरसीलो मुरासला जारी था। मुक़र्रेरा वक़्त से कब्ल पहुंचने के लिय अवाम के दोनों रहनुमा रवाना हो गए। बस्ती मौहल्लों में अवाम अंगुशत बदनदां थे। रेज़ीडेन्ट से उन के रहनुमाओं की मुलाक़ात मौहल्ला मेहंदी बाग़ के पास पहाड़िया पर वाक़य कोठी नंबर तीन पर होनी थी जिस में आजकल तहसीलदार के तर्बीयती इदारे का होस्टल है।

दोनों रहनुमा कोठी नंबर तीन पर पहुंचे और वहां मौजूद अफ़सरों को रेज़ीडेन्ट की तरफ़ से भेजा गया दावत नामा दिखाया। उन्हें इज़्ज़त के साथ जहां बिठाया गया वहीं जनाब मुहम्मद अली उर्फ़ मौलवी नन्हे ख़ान साहब भी शहर टोंक की चंद मुमताज़ शख़्सियतों के साथ मौजूद थे जिन्हें सलाम करके दोनों बैठ गए। जामा मस्जिद क़ाफ़ला को उस वक़्त

से आज तक शहर की सब से मुमताज़ मस्जिद का मर्तबा हासिल रहा है और इस के इमाम को बहुत इज़्ज़त व अहतराम की निगाह से देखा जाता रहा है । लेकिन उस दौर में इमाम का ओहदा भी रियासत के मरहूनो मिन्नत था। उस वक़्त जनाब मौलवी नन्हे ख़ान साहब जामा मस्जिद क़ाफ़ला के इमाम थे जो इंतिहाई शरीफ़ और क़ाबिल इन्सान थे और उन की अवाम में बहुत इज़्ज़त थी। दोनों रहनुमाओं के चेहरे आफ़ताब की मानिंद चमक रहे थेए ख़ुद एतिमादी के साथ इन का सर बुलंद और सीना तना हुआ था। लेकिन जनाब मौलवी नन्हे ख़ान साहब और उन के हमराह बैठे शख़सों के चेहरों पर फ़िक्रो परेशानी की लकीरें नुमायां थीं। उस वक़्त नवाब साहिब पास वाले कमरे में रेज़ीडेन्ट की ज़ियाफ़त में मसरूफ़ थे।

इसी दरमयान अंजुमन के बहुत से अराकीन हिम्मत कर के अपने मौहल्लों से निकल कर मेहंदी बाग़ की पहाड़िया के दामन में पहुंच गए । उन की तक़लीद में अवाम भी निकल पड़े और हजारों की तादाद में टोंक की ग़रीब और मुफ़लिस लेकिन मुख़लिस मख़लूक़ ने पहाड़िया के दामन में पहुंच कर इस पर चढ़ना शुरू कर दिया। चंद मिनटों में ही कोठी नंबर तीन के चारों तरफ़ अवाम का ठाठें मारता समुंद्र नज़र आरहा था। जगह ना मिलने पर लोग ऊंची चट्टानों और दरख़्तों पर भी चढ़ गए थे। बड़ी तादाद में लोगों का पहाड़िया पर चढ़ कर कोठी नंबर तीन को घेर लेना किसी तयशुदा मंसूबे के तहत नहीं था ये तो अवाम के दिलो दिमाग़ में रवां जोश और गुस्से के बाइस हुआ था। इतने लोगों के आपस में बातचीत करने से काफ़ी शोर गुल हो रहा था। ग़ालिबन किसी ने इस की इत्तिला अंदर जाकर दी तो नवाब साहिब बाहर आगए और उन के पीछे पीछे ही रेज़ीडेन्ट भी चला आया। बाहर का मंज़र देख कर दोनों सकते में आगए। अंग्रेज़ अफ़सरों ने तो ऐसे मनाज़िर हिंदूस्तान में कहीं ना कहीं

देखे होंगे लेकिन टोंक के किसी नवाब ने ऐसा नज़ारा कभी ना देखा होगा। वहां मौजूद सभी हवास बाख़ता थे। लेकिन रेज़ीडेन्ट ने जल्द ही अपने हवासे ख़मसा को क़ाबू कर ख़ुद को सँभाल लिया और कड़क कर पूछा कि ये सब किया है। किसी अंग्रेज़ अफ़्सर ने उसे कुछ बताया । रेज़ीडेन्ट ने पूछा कौन है इन का लीडर। इस पर दोनों रहनुमा आगे बढ़ कर कुछ कहने ही वाले थे कि नवाब साहिब जो उस वक़्त रेज़ीडेन्ट के नज़दीक ही खड़े थै फ़ौरन जनाब मौलवी नन्हे ख़ान साहब और उन के हमराह शख़सों की तरफ़ इशारा करके बोले ये हैं अवाम के इस हुजूम के लीडर।

जहां उस वक़्त ये सब लोग खड़े थे इस के नज़दीक भी एक दरख़्त था जिस पर भी बहुत से लोग चढ़े हुए थे ओर उन की बातें सुन रहे थे। उन लोगों में एक निडर और बेबाक शख़्सियत के नौजवान जनाब सैय्यद मज़हर अली साहिब भी थे जिन्हों ने एक लम्हा ज़ाए किए बग़ैर उस दरख़्त से छलांग लगा कर नवाब साहिब और रेज़ीडेन्ट के नज़दीक जाकर हाथ से इशारा कर ज़ोर से चिल्ला कर कहा ये हैं हमारे लीडर मन्ज़ूर आलम और हबीबुद्दीनए इस पर नवाब साहिब इक दम तैश में आकर बोले नहीं ये लीडर नहीं ये तो गुंडे हैं। हजारों की तादाद में मौजूद हुजूम मुआमले की नौईयत समझने की कोशिश कर रहा था। तभी जनाब मज़हर अली साहिब ने मन्ज़ूर आलम हबीबुद्दीन ज़िंदाबाद का नारा बुलंद कर दिया। और उन के साथ हज़ारों आवाज़ें भी शामिल हो गईं। नारों का शोर इतना बुलंद था कि कान पड़ी आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी। फ़िज़ा में बुलंद होते नारों की गूंज के सिवा कुछ ना था। यूं लग रहा था जैसे–

आह जाती है फ़लक पर रहम लाने के लिए
बादलों हट जाओ दे दो राह जाने के लिए

रेज़ीडेन्ट ने अपने गुस्से का इज़हार करते हुए वहां मौजूद अफ़सरान और ओहदेदारों को अंग्रेज़ी में बहुत बुरा भला कहा और दोनों सरबराहे अंजुमन को साथ लेकर अंदर कमरे में चला गया और बहुत देर तक तफ़सील से उन की बात सुनी और उन की तजवीज़ों पर जल्द ही अमल दरआमद का यक़ीन दिलाया।

इस दौरान नवाब साहिब कमरे के बाहर कुर्सी पर मग़्मूम बैठे रहे। उन्हें अपने मसाहिबीन और मुशीरों पर रह रह कर गुस्सा आ रहा था जिन की नामाक़ूलीयत और नालायक़ी के बाइस उन्हें बे इज़्ज़त और शर्मिंदा होना पड़ा। और जो ना सिर्फ़ उन की बल्कि मौलवी नन्हेख़ान साहब की भी ज़िल्लतो रुसवाई का सबब थे। मौलवी साहिब भी बहुत नादिम थे।

इस जाफ़र व सादिक़ गिरोह की साज़िश ये थी कि वो सरबराहे अंजुमन को शरअंगेज़ फ़सादी और फ़ित्ना परदाज़ बता कर रेज़ीडेन्ट से सरसरी मुलाक़ात करा कर चलता कर देगें और मौलवी नन्हे ख़ान साहब और उन के साथ लाए गए शहर के मुअज़्ज़िज़ अश्ख़ास को अवाम का क़ाइद और नुमाइंदा बता कर पेश करेंगे जो अवाम की फ़लाहो बहबूद के लिए नवाब और रियासत के ओहदेदारों की जानिब से किए जा रहे इमदादी इक़्दामात के क़सीदे पढ़ेंगे।

लेकिन उलटी हो गईं सब तदबीरें कुछ ना दवा ने काम किया। अवाम की जुर्रत और दिलेरी ने उन के सारे मंसूबे ख़ाक में मिला दिए। फ़ासिक़ व नाक़िस अपने साज़िशी जाल में ख़ुद ही उलझ गए। सरबराहे अंजुमन की महीनों की कोशिशो काविशें और तर्बीयत रायगां नहीं गई । अवाम की जुर्रत और दिलेरी दर असल मन्ज़ूर आलम साहिब के ज़रीय नशिस्तों और मजलिसों में की गई दरसो तदरीस और अवामी जलसे में दी गई जोशीली तक़रीर का नतीजा थी.

तदबीर के दस्ते ज़रीं से तक़दीर दरख़शां होती है
कुदरत भी मदद फ़रमाती है जब कोशिशे इंसां होती है

रेज़ीडेन्ट से लंबे मुज़ाकरात के बाद दोनों सरबराहे अंजुमन बाहर आए और अवाम के पास गए। लोगों ने पेड़ों और चट्टानों से कूद कूद कर उन्हें घेर लिया। दोनों ने तफ़सील से सारे हालात अवाम को बताए कि रेज़ीडेन्ट ने उन के मश्वरे मान लिए हैं और जल्द ही अमल आवरी का वादा किया है। एक बार फिर नारा ए तहसीन बुलंद हुआ और लोगों ने दोनों को काँधों पर उठा लिया। नज़रो दिल में तो अवाम उन्हें पहले ही बसा चुके थे।

उठ के अब बज़्म ए जहां का और ही अंदाज़ है
मशरिक़ो मग़रिब में तेरे दौर का आग़ाज़ है

अंजुमन रिआया टोंक और इस के बानी मन्ज़ूर आलम साहिब और हबीबुद्दीन साहिब का चर्चा अब हर ख़ासो आम की ज़बान पर था। मन्ज़ूर आलम साहिब के दलाइल और सबूतों को पुज़ोर तरीक़े से पैश करने क़ानून पर उबूर हासिल होने और बेहस पर मग्ज़ होने की वजह से उन की वकालत भी ख़ूब चल पड़ी थी। रेज़ीडेन्ट ने आई॰जी॰पुलिस और दीगर ओहदेदारों की मज़म्मत की। ख़ुफया शोबे से भी जवाब तलब किए गए और उस की सरज़निश भी की गई। नवाब साहिब को भी हुकूमत के इंतिज़ामात में अवाम और उन के नुमाइंदों की शमूलीयत का मश्वरा दिया। इस शर अंगेज़ और फ़ित्ना पर्दाज़ गिरोह के कई जाफ़र और कई सादिक़ पहले ही मेअरके में अपने अंजाम को पहुंच गए।

जमहूरीयत के लिए ज़मीं हमवार हो चुकी थी। आगे बढ़ने के लिए राहें भी आरास्ता थीं । अंजुमन इस ज़मीं पर एक ऐसी फ़सल की ज़राअतो फ़लाहत के लिए मुस्तइद और मरबूत थी कि जिस से मुफ़लिस अवाम की तालीमीए अख़लाक़ीए मआशी और इक़तिसादी महाज़ और

मुतअद्दिद सतहों पर मुतवाज़ी तरक़्क़ी और इर्तिक़ा हो सके। लेकिन ये सब इतना आसां ना था। इस ज़मीं पर काशत करना बहुत मुश्किल था।

इस अज़ीम मुज़ाहिरे का इतना फ़ायदा ज़रूर हुआ कि टोंक म्यूनिस्पल्टी के पहली बार इंतिख़ाबात कराए गए। अवाम को वोट देने और अपना नुमाइंदा मुंतख़ब करने का मौक़ा मिला। अंजुमन के उम्मीदवारों को सभी नशिस्तों पर फ़तह हासिल हुई। मन्ज़ूर आलम साहिब टोंक के पहले चेयरमैन मुन्तख़ब हुए। अवाम की सहूलत के लिए पहला बस स्टैंड क़ायम हुआ। म्यूंनिस्पल्टी के पास इख़्तियारात बराए नाम ही थे। नवाब साहिब के मुशीर और मसाहिब अब उन के लिए काबिले एतिमाद ना थे। नवाब साहिब अंजुमन से सीधे मुज़ाकरात करके उन की मार्फ़त अवाम की इमदाद करना चाहते थे। लेकिन उन के लिए इस मूज़ी और फ़ासिद हिसार को तोड़ना आसान ना था।

ताहम रियासतो हुकूमत और मजलिसे इंतिज़ामीया की बेहतर कारकर्दगी के लिए उन्हों ने एक ऐलान जारी करके मजलिसे मुशावरत क़ायम की। लेकिन ओहदेदारों ने इस मुशावरती कमेटी को भी एक रस्मी कार्रवाई समझा और अपने मोतक़िद चेलों व मुरीदों को कमेटी में शामिल कर लिया। इस पर सरबराहाने अंजुमन ने सख़्त मुख़ालिफ़त की और कमेटी की तशकील पर एतराज़ात उठाए। उनका मुतालिबा था कि कमेटी में वकीलों की बार और हर म्यूनिस्पल बोर्ड से एक एक रुकन और टोंक म्यूनिस्पल कमेटी से दो रुकन जिस में एक मुस्लमान और एक हिंदू हो इंतिख़ाबात के ज़रीय लिए जाएं। काश्तकारए पसमांदा तबकेए अहले ख़ानदान और रियासत के ओहदेदारों से एक एक रुकन नामज़द किए जाएं और कमेटी के मश्वरों पर अमल आवरी लाज़मी और वाजिबुल तामील हो। उन के ये मुतालिबात तसलीम किए गए। इस सिलसिला में १८ दिसंबर १९४६ ईः को मजलिसे इंतिज़ामीया के नायब सदर क़ादरी

साहिब की तरफ़ से अंग्रेज़ स्यासी नुमाइंदे कोक वेलिस को एक ख़त लिखा गया और इस के बाद सरबराहाने अंजुमन के मुतालिबात के मुताबिक़ यकुम मार्च १९४७ ईः को गज़्ट शाये किया गया।

धीरे धीरे ख़ुफ़या शोबे के अरकान सदमे से बाहर आ गए। नवाब साहिब से दिल वाबस्तगी की कोशिशें की गईं। उन के गिर्द मुहासिरा तंग किया गया और रेशा दवानी का एक नया दौर शुरू हुआ। उन की मुहिम थी कि सरबराहाने अंजुमन किसी तरह भी नवाब साहिब के नज़दीक ना आने पाएं ना उन की मुलाक़ात हो और ना ही तरसीलो मुरासला। दोनों के दरमयान एक ख़ला एक रख़ाना क़ायम रहे। और वो इस कोशिश में कामयाब भी रहे। रियासत के ख़ज़ाने से ओहदेदार अवाम की इमदाद के लिए एक फूटी कोड़ी भी ख़र्च करना नहीं चाहते थे। नवाब साहिब की हिदायत पर जो क़दम उठाए जाते उन की रफ़तार बहुत सुस्त होती। महज़ नुमाइश और दिखावे के लिए काम शुरू होते । अवाम की फ़लाह का ख़वाहां कोई ना था।

जनाब शमसुद्दीन ख़ान साहब रियासत में ट्रेज़रार थे और निहायत मुख़ालिस इंसान थे। रियासत के ख़ज़ाने से किस मक़सद के लिए कितनी रक़म निकाली गई और हक़ीक़त में कहाँ ख़र्च की गई सब कुछ उन के इलम में था। उन्हों ने ये इत्तिलाआत ख़ुफया तरीक़े से सरबराहाने अंजुमन को बज़ात ख़ुद फ़राहम करनी शुरू करदीं। उन की फ़राहम करदा इत्तिलाआत की छानबीन कर सबूत जमा किए जाते और जलसों में अवाम के सामने रखे जाते। और नवाब साहिब से मुतालिबा किया जाता कि वो तहक़ीक़ात कराएं और इस बात का पुख़्ता इंतिज़ाम करें कि ख़ज़ाने से निकाली गई रक़म अवाम की इमदाद पर ही ख़र्च की जाये।
इसी दौरान सरबराहाने अंजुमन ने अजमेर जा कर अंग्रेज़ स्यासी नुमाइंदे से भी मुलाक़ात की। काफ़ी कोशिशों के बावजूद ख़ातिर ख़वाह नतीजा

बरामद ना होने पर एक दिन दोनों रेज़ीडेंट से मिलने जयपुर पहुंच गए। बाईस गोदाम के पास जिस इमारत में आजकल होटल राजमहल पैलेस है इसी में रेज़ीडेंट रहा करता था। उन की आमद की इत्तिला अंदर भिजवा दी गई। दोनों बैठ कर बातें करने लगे। मन्ज़ूर आलम साहिब ने हबीबुद्दीन साहिब से कहा कि कितना लुत्फ़ आए अगर इस वक़्त नवाब साहिब यहां आजाऐं। अभी उन का जुमला ख़त्म ही हुआ था कि नवाब साहिब की कार महल में दाख़िल हुई। क़ुदरत मेहरबान थी और फ़ासिक़ों व नाक़िसों के मंसूबे ख़ुदबख़ुद नाकाम हो गए। नवाब साहिब से सरबराहाने अंजुमन की ये मुलाक़ात बहुत अहम थी । तीनों काफ़ी देर तक बातें करते रहे। नवाब साहिब की आमद की इत्तिला भी अन्दर भेज दी गई। लेकिन रेज़ीडेंट ने पहले सरबराहाने अंजुमन को अंदर बुलवाया। गुफ़तगु का लंबा दौर चला। अवाम की बदहाली और बर्बादी से ले कर उन की तरक़्क़ी और खुशहाली के लिए उठाए जाने वाले इक़दामात पर मुबाहिसा हुआ। मुतालिबात को खूबसूरती के साथ रखा गया। शको शुबहात को रफ़ा किया गया। इस पूरी गुफ़तगु से रेज़ीडेंट ने अंदाज़ा लगा लिया कि सरबराहे अंजुमन बेलौस ईमानदार और दयानतदार इंसान हैं और सिर्फ़ अवाम की फ़लाहो बहबूद के लिए जद्दो जहद कर रहे हैं। और रियासत के चंद हरीस मफ़ाद परस्त ओहदेदार ना तो अपना फ़र्ज़ अदा कर रहे हैं और ना ही अवाम की इमदाद कर रहे हैं बल्कि अंजुमन के कामों में भी रुकावटें डाल रहे हैं।

रेज़ीडेंट ने नवाब साहिब को अंदर बुलवा लिया। हालाँकि बाद में बुलवाया जाना उन्हें गिरां गुज़रा था लेकिन उन्हों ने फ़राख़दिली का सबूत दिया और मुबाहिसा में शामिल हो कर सरबराहाने अंजुमन की तमाम बातों से इत्तिफाक़ किया। और उसूली तौर पर यह तै किया गया कि अवाम की इमदाद की तमाम ज़िम्मेदारी और इख़्तयारात अंजुमन के

सपुर्द किए जाएं। अवाम की तरक़्क़ी और खुशहाली के लिए सरबराहाने अंजुमन को मजलिसे इंतिजामीया में शामिल किया जाये। रियासत के आईन और दस्तूर में ज़रूरी तरमीमात कर ली जाएं। बुनियादी तौर पर ये भी तै किया गया कि मजलिसे इंतिजामीया के नायब सदर और होम मैंबर का ओहदा सरबराहाने अंजुमन को दिया जाये । सरबराहाने अंजुमन के वहमो गुमान में भी ना था कि रेज़ीडेंट अवाम के हक़ में इतने अहम फ़ैसले कर देगा। रेज़ीडेंट के लिए इस तरह का फ़ैसला करना अब नागुज़ीर ही था । मुलक के हालात तेज़ी से करवट बदल रहे थे। अंग्रेज़ अपना असासा समेट कर रफूचक्कर हो रहा था। मुलक आज़ादी के कगार पर खड़ा था। अंग्रेज़ हुकूमत हिंदूस्तानी अवाम के हक़ में मुंतक़िल होने वाली थी।

सरबराहाने अंजुमन फ़तह और कामरानी के पर्चम लिए हुए टोंक पहुंचे। अवाम की खुशी का ठिकाना ना था । हर शख़्स मसरूरो शादमान था। लेकिन ये शादमानी दायम ना हो सकी। नवाब सआदत अली ख़ां बीमार हो गए और मई १९४७ ईः में उन का इंतिक़ाल हो गया। नवाब की गद्दी के लिए फारूक़ अली ख़ां और इस्माईल अली ख़ां में तनाज़ा हो गया। और अंजुमन को मजलिसे इंतिजामीया में शामिल करनेए रियासत के आईन और दस्तूर में तरमीम का काम बस्ता ए ख़ामोशी की नज़र हो गया। मन्ज़ूर आलम साहिब की क़ाबिलीयत को देख कर फारूक़ अली ख़ां ने उन्हें अपना वकील मुक़र्रर किया। उन्हों ने दलायल और सबूतों को अंग्रेज़ हुकूमत के सामने बा असर तरीक़े से रखा। फारूक़ अली खां के हक़ को तस्लीम किया गयाए उन को जाय ज़ हक़दार क़रार दिया गया एजून १९४७ ईः में उन की गद्दी नशीनी का ऐलान कर दिया गया।

हिंदूस्तान आज़ादी के साथ साथ बंटवारे की तरफ़ भी बढ़ रहा था। हिंदू मुस्लिम फ़सादाद शुरू हो गए थे। फ़सादीयों के हाथों बर्बाद जख़्मी लुटे

पिटे हज़ारों लोग शहर टोंक में पनाह गुज़ीं हुए। अंजुमन ने सभी पनाह गज़ीनों की इमदाद की। मुलक के हालात बहुत ख़राब थे। हर तरफ़ बदहवासी और परेशानी थी। मख़लूक़ तज़बज़ब और अदम ताअय्युन का शिकार थी कि उन्हें किस मुलक में रहना होगा। एक तरफ़ सैकड़ों पनाह गुज़ीं रोज़ टोंक पहुंच रहे थे दूसरी तरफ़ सैकड़ों बाशिंदे अपनी इमलाक और जायदाद फ़रोख़त करने में मसरूफ थे। लोगों ने नक़्ल ए मकानी शुरू करदी। अफ़रा तफ़री का आलम था लोग हवासबाख़ता थे।

पूरे मुलक पर अंग्रेज़ दो तरीक़ों से हुक्मरानी कर रहा था। अव्वल मुलक के वो सतरह सूबे जिन का नज़मो नसक़ सीधा हुकूमते बर्तानिया के पास था। दोयम ए मुलक की वो रियास्तें और रजवाड़े जिन का नज़मो नसक़ नवाबों और राजाओं के पास थाए लेकिन इक़तिदार ए आला हुकूमत ए बर्तानिया का था और ये इक़तिदार

एक मुआहिदे के तहत क़ायम किया गया था। शैतानी अंग्रेज़ी ज़हनीयत हुकूमत की मुंतक़ली के बाद भी पूरे मुलक को कमज़ोर व सैकड़ों हिस्सों में मुनक़सिम रखना चाहती थी। हुकूमत ए बर्तानिया ने हिंदूस्तान की आज़ादी के लिए एक क़ानून बनाया एइस क़ानून के मुताबिक़ हिंदूस्तान को दो ख़ुद मुख़तार हुकूमतों इंडिया और पाकिस्तान में तक़सीम किया गया। इस के साथ ही रियास्तों और रजवाड़ों से किए गए मुआहिदों को मंसूख करते हुए उन्हें ये आज़ादी दी गई कि वो पाकिस्तान या इंडिया के साथ इलहाक़ करें या अपनी ख़ुदमुख़तार हुकूमत क़ायम रखें। रियासत और रजवाड़ों की तादाद तक़रीबन पाँच सौ पैंसठ थी जो मुत्तहेदा हिंदूस्तान के एक बहुत बड़े इलाक़े पर क़ायम थीं। सब से पहले जुनूबी हिंद की रियासत तिरेनोकोर ने ख़ुद मुख़तार रहने का ऐलान किया। और इस के बाद हैदराबाद भोपाल जोधपुर और जूनागढ़ भी इसी राह पर चल पड़े।

इस दरमयान कुछ ना तर्जबेकार मुशीरों ने नवाब साहिब को रियासत के पाकिस्तान में इलहाक़ के लिए उकसाया और उस की शराइत तै करने के लिए मुहम्मद अली जिनाह से जाकर मिलने के लिए राजी कर लिया। मन्ज़ूर आलम साहिब ने नवाब साहिब को बहुत समझाया लेकिन वो बाज़ न आए और जिनाह से जाकर मिले। उन्हें गुमान था कि जिनाह उन का ज़बरदस्त ख़ैर मक़दम करेंगे। लेकिन जिनाह न तो अपनी कुर्सी से खड़े हुए ना ही नवाब साहिब से मुसाफ़ा किया। नवाब फारूक़ अली ख़ां साहिब शदीद गुस्से में वापस आए और पाकिस्तान पर लानत भेजी।

१५ अगस्त १९४७ ईः को मुलक आज़ाद हुआ मगर तक़सीम के गहरे सदमे और दाग़ के साथ। रियासत टोंक हिंदूस्तान में मदग़म हो गई। हर तरफ़ ख़ुशीयां और शाद मानियां थीं। सरबराहे अंजुमन और इस के अराकीन की भी ख़ुशी का ठिकाना ना था। अब मुलक पर अवाम की हुकूमत अवाम के ज़रीय अवाम के वास्ते क़ायम हो चुकी थी। लेकिन रियासत के ओहदेदार और नवाब साहिब हैरान व परेशान थे कि रियासत का नज़म व नसक़ और बंदोबस्त व दीगर काम काज किस तरह होंगे। क्योंकि सरकारी ख़ज़ाने से वो अब एक कोड़ी भी नहीं निकाल सकते थे। अवाम के ख़ून पसीना की कमाई से ही रियासत के ख़ज़ाने भरे गए थे। लेकिन इस में से मुसीबत ज़दा अवाम की इमदाद पर कुछ भी ख़र्च ना किया गया। अब इन ख़ज़ानों के मालिक उस दौलत को ख़र्च करने से महरूम हो चुके थे।

आज़ादी के बाद टोंक रियासत पर अंग्रेज़ों का तसल्लुत ख़त्म हो चुका था। उस की जगह हिंदूस्तान की जमहूरी हुकूमत ने ले ली थी। अंग्रेज़ों के ज़माने में हुकूमत का नज़मो नस्क़ जो अफ़सरान सँभाल रहे थे वो बदस्तूर क़ायम रहे। इन में अकसरीयत उन अफ़सरान की थी जो

क़ाबिल होने के साथ साथ अपने दिल में हिंदूस्तान की मुफ़लिस अवाम का दर्द भी रखते थे। लेकिन चंद अफ़्सर क़ाबिल होने के बावजूद गंदी अंग्रेज़ी ज़हनीयत से आलूदा थे। उन्हें हिंदूस्तानियों की फ़लाह व बहबूद की कोई फ़िक्र ना थी। अंग्रेज़ों के ख़ुरूज के बाद भी वो अंग्रेज़ी दौरे हुकूमत की रविष पर ही क़ायम रहे। ऐसे ही एक शख़्स थे राम बाबू सक्सेना जो मुत्तहेदा सिवल सर्विस के मैंबर थे। दोरे हाज़िर में जिन्हें आई०एस०एस० कहते हैं। जनवरी १९४८ ईः में राम बाबू सक्सेना को रियासत टोंक में मोहतमिमे आला के ओहदे पर फ़ाइज़ किया गया। ये शख़्स फ़ासिद व नाक़िसए राशि और मुतअस्सिब था।

ना अहल को हासिल है कभी कुव्वत ओ जबरूत
है ख़वार ज़माने में कभी जौहर ए ज़ाती

नवाब फारूक़ अली ख़ां का अचानक इंक़िताल हो गया। नवाब की गद्दी के लिए फिर तनआज़ा हुआ लेकिन आख़िर कार ११ फ़रवरी १९४८ ईः को इस्माईल अली ख़ां गद्दी नशीं हुए । राम बाबू सक्सेना रियासत के दीवान के साथ मजलिस ए इन्तिज़ामिया के नायब सदर के ओहदे पर भी फ़ाइज़ होगया। नवाब साहिब को एक ख़तीर रक़म की अशद ज़रूरत थी। उन्हों ने सक्सेना से चैदह लाख रुपया सरकारी ख़ज़ाने से दिलवाने की दरख़वास्त की। सक्सेना ने तीन लाख रुपय की रिश्वत के ऐवज़ में सूबाऐ राजस्थान की वज़ारत से मन्ज़ूरी लाकर दी। नवाब साहिब को रक़म क़िस्तों में दी गई। दूसरी क़िस्त मिलने पर सक्सेना को डेढ़ लाख रुपया दिया गया। बाक़ी रक़म मिल जाने पर नवाब साहिब टाल मटोल करने लगे । सक्सेना ने उन्हें धमकाया कि इस के पास वाज़े सबूत हैं कि फारूक़ अली ख़ां की मौत फ़ित्री नहीं थी बल्कि मोहलिक ज़हर दिए जाने का नतीजा थी और इस जुर्म में वो भी मुल्लव्विस थे और ये कि उन के ख़ुफ़ीया ताल्लुक़ात आज़ाद कश्मीर के बाग़ीयों से भी हैं। इस तरह

सक्सेना ने धमका कर एक लाख और फिर पच्चास हज़ार यानी पूरे तीन लाख रुपय वसूल कर लिए।

सक्सेना रियासत पर साँप की तरह कुंडली मार कर बैठ गया था । इस ने दोनों हाथों से रियासत को लूटा। ग़रीब मुफ़लिस अवाम की उसे कोई फ़िक्र कोई परवाह ना थी। जिस ने बिलजब्र रियासत के नवाब को लूटा हो वो अवाम को कहाँ ख़ातिर में लाता।वो सिर्फ सरबराहान ए अंजुमन से ख़ौफ़ज़दा था।

है अगर मुझ को ख़तर कोई तो उस उम्मत से है
जिस की ख़ाकस्तर में है अब तक शरार ए आरज़ू

वह उन से इस क़दर ख़ाइफ़ था कि उस ने टोंक आने के फ़ोरन बाद ही सरदार पटेल को उन के ख़िलाफ़ ख़त लिखने शुरू कर दिए और सिर्फ छः माह में छप्पन ख़ुतूत लिख दिए। इस का मक़सद था कि अवाम के नुमाइंदों बिलख़सूस सरबराहान ए अंजुमन को हुकूमत के नज़म ओ नस्क़ से दूर रखा जाये ताकि उस की बद दयानती और फ़रेब कारी के राज़ फ़ाश ना हो सकें। उस ने अपने मातेहत अफ़सरान को भी ये हिदायत दे रखी थी कि जहां तहां जा बजा अंजुमन के सरबराहों और नुमाइंदों की हौसला शिकनी और दिल शिकस्तगी की जाये।

दरीं अस्ना एक साहिब की लापरवाही से एक बंदर हलाक हो गया। तहक़ीक़ात शुरू हुई। वो साहिब बहुत घबराए। उन की तरफ़ से सफ़ाई पेश करने के लिए सरबराहान.ए.अंजुमन ने एक सरकारी अफ़्सर से जो ग़ालेबन एस०डी०ऐम० जैसे किसी ओहदे पर फ़ाइज़ थे मुलाक़ात करनी चाही लेकिन उस ने कई दिन तक उन्हें वक़्त ना दिया। बड़ी मुश्किल से उस अफ़्सर के एक मुसाहिब के तवस्सुल.ओ.तवस्सुत से मुलाक़ात हो पाई। अफ़्सर ने सरबराहान.ए.अंजुमन को बैठने के लिए भी नहीं कहा और सरसरी तौर पर उन की बात सुन कर दूसरे काम में मशग़ूल हो गया।

चूँकि दिल में आज़ादी और जमहूरीयत की इज़्ज़त.ओ.वक़अत थी इस लिए उन्हों ने सब्र व तहम्मुल से काम लिया। अगर चाहते तो सैकड़ों हजारों लोगों के वफ़द के साथ पहुंच कर उस अफ़्सर की सरज़निश.ओ. सरकोबी कर सकते थेए लेकिन अपने ही मुलकए अपनी ही हुकूमत में खेले जा रहे पस.ए.पर्दा खेल को वो बख़ूबी समझ रहे थे।

हम ने ख़ुद शाही को पहनाया है जमहूरी लिबास
जब ज़रा आदम हुआ है ख़ुद शनास.ओ.ख़ुद निगर
कारोबार ए शहर यारी की हक़ीक़त और है
ये वजूद.ए.मीर.ओ.सुलतां पर नहीं है मुनहसिर

सक्सेना अंजुमन के ख़िलाफ़ सफ़ आरा था। हुकूमत.ए.राजिस्थान और मर्कज़ी काबीना बिलख़सूस सरदार पटेल को बहकाने और वरग़लाने में मुसलसल मशगूल रहता था । दरअसल वो अहसास.ए.कमतरी का भी शिकार था। वो बस मौक़े की तलाश में सरगरदां था कि किसी बहाना सरबराह.ए.अंजुमन को गिरफ़तार करके जेल में डाल दे। लेकिन वो इस फ़ासिद.ओ.नाक़िस शख़्स के कहाँ क़ाबू में आने वाले थे।

बातिल से दबने वाले ए आसमां नहीं हम
सौ बार कर चुका है तु इम्तिहां हमारा

यकुम मई १९४८ ईः को टोंक और इस के परगने निमाहेड़ाए छबड़ाए पिड़ावा और अलीगड़ का इलहाक़ राजस्थान में और सिरोंज का इलहाक़ मध्य प्रदेश में कर लिया गया। हुकूमत.ए.राजस्थान ने सक्सेना को टोंक की इन्तिज़ामिया का ओहदेदार ए अला बना दिया और इस ओहदे पर वो ३१ जुलाई तक फ़ाइज़ रहा। लेकिन रिश्वत की बात छिपी ना रह सकी । ना सिर्फ उस को पूरी रक़म वापिस करनी पड़ी बल्कि इस पर इस्तिहसाल यानी डरा धमका कर बिलजब्र वसूली धोके बाज़ी और फ़रेब कारी का

मुफ़दमा दर्ज हुआ जिस में वो गिरफ़तार हुआ। सरदार पटेल ने अपने तरीक़े से भी तहक़ीक़ात कराई और सक्सेना को ही गुनहगार पाया।

मन्ज़ूर आलम साहिब और हबीबुद्दीन साहिब हिंदूस्तान की जंग ए आज़ादी के सिपाही थे। उन्होंने अंग्रेज़ हुकूमत और उस की मातेहत रियासत से जमहूरीयत के लिए दो साल तक जो जंग लड़ी वो अपनी हिम्मत और सलाहीयत से क़ायम करदा एक जमहूरी जमात अंजुमन राया टोंक के बलबूते पर लड़ी। इन का मक़सद अवाम की फ़लाह.ओ. बहबूद के सिवा कुछ ना था। अगर चाहते तो अवाम की बड़ी तादाद जमा करके कोई भी मर्तबा हासिल कर सकते थे। वह अवाम के बेलौस और मुख़लिस ख़ादिम थे। अवाम की तरक़्क़ी और ख़ुशहाली के ख़वाहिशमंद। और जंग आज़ादी के सिपाह यानी स्वतंत्रता सेनानी के एज़ाज़ के मुस्तहिक़ थै।

अवाम को तवक़्क़ो थी कि रियासत के आख़िरी दिनों में सरबराहान. ए.अंजुमन को मजलिस.ए.इंतिजामीया में शामिल करने का जो फ़ैसला किया गया था उस पर आज़ाद हिंदूस्तान में जल्द अमल दरामद हो जाएगा। लेकिन जो हो रहा था वो इस के बरअक्स था। अवाम इंतेज़ार करते रहे और उस की मुद्दत तवील होती चली गई

ये अनासिर का पुराना खेल ये दुनियाऐ दूँ
साकिनान.ए.अर्श.ए.आज़म की तमन्नाओं का ख़ूँ !

कुदरत सरबराहान–ए–अंजुमन के
सब्र–ओ–तहम्मुल, हिम्मत–ओ–जफ़ा कशी का मज़ीद इमतिहान
लेना चाह रही थी।

सबक़ फिर पढ़ सदाक़त का ए अदालत का ए शुजाअत का
लिया जायेगा तुझ से काम दुनिया की इमामत का

मिल्लत.ओ.क़ौम की इमामत का मंसब बहुत अहम और अज़ीम है । इस मंसब को किसी ख़ास क़ौम क़बीले तबक़े मुआशरे फ़िर्क़े और नसल से ना तो मख़सूस किया जा सकता है ना ही मंसूब और ना ही उस को किसी की मीरास बनाया जा सकता है। अल्लाह के हुज़ूर में किसी अरबी को अजमी पर किसी गोरे को काले पर रंग.ओ.नसल की वजह से कोई फ़ज़ीलत.ओ.मर्तबत हासिल नहीं ।

इस ओहदा पर फ़ाइज़ करने और इस मर्तबे से सरफ़राज़ करने से पहले अल्लाह उस शख़्स को बेशुमार आज़माईशों में डालता है और हज़ार हा इमतिहान लेता है। इस मंसब को वो शख़्स हासिल करता है जो रोशन ख़्याल और रोशन ज़मीर हो जिसे हक़ायक़ से आगही हो जिस के अक़ाइद दुरुस्त.ओ.मज़बूत होंए और आमाल पाकीज़ा होंए जिस के इलम.ओ.फहम ज़हद ओ तक़वा और मेहनत.ओ.मशक़क़त का मयार बुलंद और आला होए जो सेहतमंद.ओ.तंदुरुस्त होए और पूरी मिल्लत जिस की मुक़तदी हो जो आफ़त.ओ.मुसीबत के मौक़े पर इमदाद के लिए पेश क़दमी करे मरहलों पर बागडोर सँभाले और मिल्लत की फ़लाह.ओ.बहबूद तरक़्क़ी.ओ. ख़ुशहाली के लिए कोशां रहे। अल्लाह मिल्लत.ओ.क़ौम की इमामत की ये अहम और अज़ीम ज़िम्मेदारी उस शख़्स के सुपुर्द करता है जो दीनदार हो परहेज़गार हो ख़ुदा परसत हो मुख़लिस हो सादिक़ हो और अमीन भी हो। आलिम भी हो फ़ाज़िल भी हो। जो अपने दिल में ग़रीब मुफ़लिस अवाम का दर्द रखता हो। जिस की ज़ात मिल्लत.ओ.क़ौम की ख़िदमत के लिए मौक़ूफ़ हो। जो हरकत.ओ.अमलए मेहनत.ओ.मशक़क़त में यक़ीं रखता हो। और जो रिवायती ज़हद.ओ.तक़वा और रियाज़त.ओ.इबादत तक महदूद ना रह कर अपने नेक मक़ासिद की हुसूलयाबी के लिए जद्द.ओ.जहद और मुदाफ़अत करे। जिस के दिल में खुदा का ख़ौफ़ सीने में तौहीद की अमानत हो और जिस को अल्लाह की ज़ात पर कामिल यक़ीन हो। क़ौम

की इमामत का मुस्तहिक़ वो शख़्स होगा जिस ने इन ख़ूबीयों के साथ लंबी उम्र गुज़ारी हो और जो बख़ूबी समझता है कि जिस क़ौम की वो पेशवाई कर रहा है इस का वो तन्हा ज़ामिन और मंसबी ज़िम्मेदारी के लिए तन्हा जवाब देह है। जो शख़्स इस ज़िम्मेदारी को बख़ूबी बेहतर तरीक़े से निभाता है उस को तमाम मुक़तदियों के मजमूई सवाब के बराबर अज्र मिलता है जब्कि मुक़तदियों के सवाब में कोई कमी नहीं होती। इस लिए मिल्लत.ओ.क़ौम की इमामत को इमामत कुबरा कहा गया है।

जनाब मन्ज़ूर आलम साहिब में यह सभी ख़साइस मौजूद थीं और उन्हों ने अपनी पूरी ज़िंदगी इन्हीं सिफ़ात के साथ गुज़ारी। सेलाब हो या क़हत उन्हों ने हमेशा ख़ुद पेश क़दमी कर मुसीबत ज़दगान की मदद के इंतिज़ामात बाक़ायदगी और मुनज़्ज़म तरीक़े से अपनी निगरानी में कराए। फ़िर्क़ावाराना फ़साद हो या मिल्लत के किसी तबक़े की अंदरूनी ख़ानाजंगी उन्हों ने आगे बढ़ कर मुआमलात की बागडोर सँभाली । ज़ालिमों की सरकोबी और मज़लूमों की इमदाद कीए मुशकिल और दुशवार मसाइल को अपनी ज़हानत और सूझबूझ से बेहतर तौर पर हल किया। उन्हों ने क़ौम को मुत्तहिद और मुस्तहकम रखा और एक दूसरे के लिए ईसार.ओ.क़ुर्बानी की तबलीग़ की।

मन्ज़ूर आलम साहिब ने १९५५ ईः में टोंक में जदीद तालीम के मराकज़ लड़कों के लिए दारुलमुतआला और लड़कीयों के लिए बनातुलमुस्लमीन क़ायम किए। १९६१ ईः में जबलपुर और सागर में हुए फ़सादाद पर वहां जाकर कई हफ्ते क़याम किया और ग़रीब मुफ़लिस अवाम की माली और क़ानूनी इमदाद की। १९६४ ईः में लखनऊ में हिंदू मुस्लिम इत्तिहाद और मुस्लमानों की तालीमी मुआशरती और इक़तिसादी तरक़्क़ी के लिए क़ायम की गई मुस्लिम मजलिस मुशावरत को

राजिस्थान में क़ायम किया और कई अज़ला में सैमीनार और इजलास मुनक़्क़द किए।

१९६५ ईः अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी के अक़लीयती किरदार की बहाली के लिए चलाई गई तहरीक में जोश.ओ.ख़रोश से शिरकत की और पूरे राजस्थान का दौरा करके मिल्लत.ओ.क़ौम को इस मसले से रोषनास कराया।

१९६६ ईः टोंक में एक अज़ीम दीनी तालीमी कान्फ्रेंस का इनक़ाद किया जिस में पूरे हिंदूस्तान से तक़रीबन तीन सौ आलिम.ओ.फ़ाज़िल दानिश्वर उलेमा ने शिरकत की जिस की सदारत जनाब मौलाना सय्यद अबुलहसन अली साहिब ने फ़रमाई ।

उन्हों ने ऑल इंडिया मिल्ली कौन्सिल और मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड में राजस्थान की नुमाइन्दगी की।

१९७५ ईः में इमरजेंसी के नफ़ाज़ के बाद ग़रीब अवाम पर जुलम व ज़यादती के ख़िलाफ़ एहतिजाज करने पर वो और हबीबुद्दीन ख़ान साहब गिरफ़तार हो कर जेल भी गए। जेल में उन के बहुत से मुअक्किल थे और वहां के मुलाज़िमान उन के मद्दाह.ओ.मोतक़िद । जेल में उन का ज़बरदस्त इस्तिक़बाल और पज़ीराई की गई। जब तक वहां रहे एक जश्न एक तहवार का माहौल बना रहा। जेल इंतिज़ामीया के अफ़सरान हैरान.ओ.परेशान थे। और शहर में हर मज़हब.ओ.मिल्लत और हर सियासी जमात के अरकान शदीद ग़ुस्से में। ग़ालबा उस की रिपोर्ट आला हुक्काम को पहुंची तो उन्हें कुछ दिन बाद ही रिहा कर दिया गया।

इस तरह मन्ज़ूर आलम साहिब मिल्लत.ओ.क़ौम की फ़लाह.ओ.बहबूद तरक़्क़ी और ख़ुशहाली से मुतआल्लिक़ हिन्दूस्तान की हर तहरीक और हर तन्ज़ीम में सरगर्म.ए.अमल रह कर मुलक.ओ.अवाम की ख़िदमत करते रहे।

वह अक्सर इक़बाल के ये अशआर हमें सुनाते थे.

अन्दाज़.ए.बयां गरचे बहुत शोख़ नहीं है
शायद के उतर जाये तेरे दिल में मरी बात
या वुसअत.ए.अफ़्लाक में तकबीर.ए.मुसलसल
या ख़ाक के आग़ोश में तस्बीह.ओ.मुनाजात
वो मज़हब–ए मर्दान–ए .ख़ुद आगाह–ओ ख़ुदा मस्त
ये मज़हब–ए मुल्ला–ओ जमादात–ओ नबातात

इन अशआर का फ़लसफ़ा उन की रूह और उन की फ़िक्र.ओ.सोच का जुज़ थै जो हक़ीक़ी मानी में उन की शख़्सियत की अक्कासी करता है।

मौलाना सय्यद अबुलहसन अली नदवी ने अल्लामा हज़रत अहमद शहीद र.अ. की शख़्सियत के बारे में लिखा है कि.उस दौर में ऐसे शख़्स और जमात की ज़रूरत थी जो दीन ओ इलम और सलाहीयत के इस सरमाये से वक़्त पर काम ले ले और उस को ठिकाने लगाए ए जो ख़ानक़ाहों का हालए और दरसगाहों का क़ालए वहां की हरारतए और यहां की रोशनी सारे मुलक में आम कर देए जिस के जलु में चलती फिर्ती ख़ानक़ाहें होंए और दौड़ते भागते मदरसेए घोड़ों की पीठ पर आलिम होंए और महराबों में मुजाहिद जो दिलों में बुझती हुई अंगीठियां दुबारा दहका देए अफ़्सुर्दा दिलों को एक बार फिर गर्मा देए और मुलक में एक सिरे से दूसरे सिरे तक तलब और दीन की तड़प की आग लगा देए जो मुस्लमानों की ख़ुदादाद सलाहीयतों को ठिकाने लगाए जिस की निगाह दूर रस और जिस की ज़ात मसीहा नफ़सए किसी बेकार चीज़ को बेकार ना समझे ए जो उम्मत के ज़ख़ीरे के हर दाना और ख़याबां के हर तिनके से पूरा पूरा काम लेए जो शख़्स इन औसाफ़ का जामे हो ए उस को इस्लाम की इसतिलाह में इमाम कहते हैंए और ये मुक़ाम तेरहवीं सदी हि० के तमाम

अहल ओ कमाल और मशाहीर ओ रज्जाल की मौजूदगी में सय्यद साहिब को हासिल था

अल्लामा हज़रत अहमद शहीद र.अ. की शख़्सियत पर मौलाना साहिब की ये तहरीर जनबा मन्ज़ूर आलम साहिब की शख़्सियत की भी अक्कासी करती है। वो तवानाई और अमल से भरपूर एक ऐसी मुतहर्रिक शख़्सियत के मालिक थे जिस के जलु में ख़ानक़ाहों का हाल भी था और दरस गाहों का क़ाल भीए उन की निगाह दूर रस और ज़ात मसीहा नफ़स थीए वो दरवेश भी थे और दूर अंदेश भी एमदरसेएमकतब और कुतुब ख़ाने इस मुबारक एपाक हस्ती और उन के वजूद का जुज़ थे। अल्लाह ने उन्हें अवाम और क़ौम की रहबरी के साथ साथ मिल्लत की इमामत की ज़िम्मेदारी भी सपुर्द की थी।

तूने पूछी है इमामत की हक़ीक़त मुझ से
हक़ तुझे मेरी तरह साहब.ए.असरार करे
है वही तेरे ज़माने का इमाम.ए.बरहक़
जो तुझे हाज़िर.ओ.मौजूद से बेज़ार करे
दे के एहसास.ए.ज़ियां तेरा लहू गर्मा दे
फ़िक्र की सान चढा कर तुझे तलवार करे

रहबर ए मिल्लत

जनाब मन्ज़ूर आलम साहिब

अपनी ज़िन्दगी के अगले साठ साल यानी १९४८ ईः से २००८ ईः तक लगातार सब्र–ओ–तहम्मुल के साथ पूरे इसतेहकाम और यकसूई से अपने माथे पर शिकन लाए बगैर मिल्लत–ओ–क़ौम की तालीम–ओ–तरक़्क़ी और ख़ुशहाली के लिए सरगर्म–ए–अमल रहे और २२ अक्तूबर २००८ ईः की शाम अस्र व मग़रिब के दरमियां निहायत ख़ामोशी से इस दुनिया को ख़ैरबाद कह कर अपने मालिक.ए.हक़ीक़ी से जा मिले

इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजाउन

सर शक.ए.चश्म.ए.मुस्लिम में है नीसां का असर पैदा
ख़लीलुल्लाह के दरिया में होंगे फिर गुहर पैदा
किताब.ए. मिल्लत.ए.बैज़ा की फिर शीराज़ा बंदी है
ये शाख़.ए.हाश्मी करने को है फिर बर्ग.ओ.बर पैदा

ब्रिटिश लाइब्रेरी लन्दन में महफ़ूज़ दस्तावेज़

आज़ादी के बाद हिन्दूस्तान की हर रियासत और रजवाड़े के लिए ब्रिटिश लाइब्रेरी लंदन में अलग अलग सैक्शन क़ायम करके उन से मुताल्लिक़ दस्तावेज़ों को महफ़ूज़ कर दिया गया। रियासत टोंक के लिए भी एक सैक्शन क़ायम किया गया। जनाब मन्ज़ूर आलम साहिब के सब से बड़े फ़र्ज़ेन्द डाक्टर मसरूर आलम सुहेल साहिब की छोटी दुख़तर ऐमन आलम हैं। उन की इबतिदाई तालीम मस्क़त में हुई इस के बाद उन्हों ने स्टेट यूनीवर्सिटी अमरीका से कैमीकल इंजीनीयरिंग में ग्रैजूएशन किया। डाक्टर तौसीफ़ नाज़की साहिब से शादी के बाद वो उन के साथ लन्दन से सत्तर मील के फ़ासले पर वाक़य कोल चैसटर शहर में रहती हैं। उन के दादा अबू ने उन्हें भी रियासत के दौर की तहरीक के बारे में बहुत कुछ बताया था। अपने दादा अबू की तहरीक से मुताल्लिक़ दस्तावेज़ों की तलाश में वो कई बार लन्दन गईं और लाइब्रेरी के टोंक सैक्शन में हजारों सफ़हात पर मुश्तमिल सैकड़ों फ़ाइलों को पढ़ा । कई महीनों की लगातार मेहनत.ओ.मशक़्क़त के बाद उनहें अपने दादा अब्बु व उन की तहरीक से मुताल्लिक़ बहुत से दस्तावेज़ मिले जिन से बहुत अहम और मुफ़ीद मालूमात हासिल हुईं।

इन में से चंद दस्तावेज़ मेरी इस किताब की ज़ीनत बन रहे हैं। ऐमन आलम नाज़की कहती हैं कि दस्तावेज़ात मिलने पर उन्हें बेईनतिहा ख़ुशी हुई और जब वो इन दस्तावेज़ों को पढ़ रही थीं तो उन्हें यूं महसूस हुआ जैसे दादा अबू उन के पास लाइब्रेरी में मौजूद हैं।

मज़हब–ए–इस्लाम और फ़ौजदारी मुआमलात

भाई मियां को फ़ौजदारी और दीवानी दोनों ही मुआमलात पर महारत हासिल थी । लेकिनफ़ौजदारी मुआमलात में इन का कोई सानी ना था उन के तक़ाबुल और हमसरी के लायक दूर दूर तक कोई वकील ना था। दीवानी मुआमलात इक़तिसादी नौईयत के होते हैं यानी ज़मीन–ओ–जायदाद तिजारत–ओ–ज़राअत से मुताल्लिक़। जबकि फ़ौजदारी मुआमलात इंसान के वजूद उस की ज़िंदगी और आज़ादी से ताल्लुक़ रखते हैं। टोंक में हर संगीन जुर्म का मुल्ज़िम और हर पेचीदा मसला में मुबतला इंसान अदालत में पैरवी के लिए उन्हीं की ख़िदमात हासिल करने को फ़ौक़ियत देता था। मुल्ज़िम के लवाहिक़ पुलिस में मुक़द्दमा दर्ज होते ही उन्हें अपना वकील मुकर्रर कर लेते थे। उन की मकबूलियत का आलम ये था कि पुलिस में मुक़द्दमा दर्ज कराते ही मुस्तग़ीस उन्हें सिर्फ़ इस लिए अपना वकील मुकर्रर कर लेते ताकि वो मुल्ज़िम के वकील ना बन सकें। इस तरह मुल्ज़िम को उन की ख़िदमात हासिल करने से महरूम कर दिया जाता था। देही इलाक़ों में वो आलम मंजूर के नाम से मशहूर–ओ–मक़बूल थे।

एक मौका पर मैंने उन से पूछा कि ये जानते हुए भी कि एक शख़्स मुजरिम है आप अदालत में उस की पैरवी क्योंकर करते हैं। उन का जवाब था कि जब तक किसी शख़्स पर अदालत में जुर्म साबित ना हो

जाये तब तक वो सिर्फ़ मुल्ज़िम है मुजरिम नहीं । वह मुल्ज़िम से कभी ये दरयाफ़त नहीं करते थे कि इस से कोई जुर्म सरज़द हुआ भी है या नहीं वैसे भी उन को वकील तो मुल्ज़िम के लवाहिक़ ही मुकर्रर करते थे क्योंकि मुल्ज़िम या तो फ़रार होता था या पुलिस की गिरिफ़त में । इस तरह मुल्ज़िम से कुछ भी दरयाफ़त करने का सवाल ही पैदा नहीं होता था। वह थाने पर दर्ज की गई रिपोर्ट और पुलिस के ज़रीय अदालत में पैश इस्तिग़ासे की हक़ायिक़ की बुनियाद पर और मुरव्वजा क़वानीन की रोशनी में ही मुल्ज़िम की पैरवी करते थे।

मेरी एल.एल.बी. की तालीम के दौरान कानूनी दफआत की वज़ाहत और पेचीदा क़ानूनी मसाइल का हल छुट्टीयों में भाई मियां ही किया करते थे और ये सिलसिला पुलिस की नौकरी में आने के बाद भी जारी रहा। बैन.उल.अक़वामी क़ानून में मुल्ज़िम की तहवील एक मुलक से दूसरे मुलक में करने से मुताल्लिक़ भी एक मज़मून होता है। इस मज़मून में रियासत टोंक में मुहतमिम आला के ओहदा पर फ़ाइज़ किए गए राम बाबू सक्सेना को बहैसीयत मुल्ज़िम रियासत नैनीताल से रियासत टोंक की तहवील में दिए जाने से मुताल्लिक़ मुक़द्दमे का भी हवाला था। तब मेरे इस्तिफ़सार पर भाई मियां ने राम बाबू सक्सेना के बारे में तफ़सील से बताया था।

भाई मियां क़ानून के हर नुक्ते को बहुत बारीकी से समझाते थे। और क़ानूनी नुक्ते से मुताल्लिक़ हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट की नजीरें भी पढ़ने के लिए देते थे। दीवानी और फ़ौजदारी दोनों ही तरह के क़वानीन पर इन का मुतआला बहुत वसी था। मुक़द्दमों से मुताल्लिक़ सभी मिसलें उर्दु ज़बान में तैय्यार की जाती थीं। अदालत में पुलिस के ज़रीय पैश इस्तगासे का हिन्दी से उर्दू में तर्जुमा किया जाता था। मरहूम अमीन

साहिब जो बहुत लायक़ और शरीफ़ इंसान थे भाई मियां के पास मुंशी थे। हमारे घर में उन की हैसियत ख़ानदान के रुकन के मुसावी थी।

मेरी एल.एल.बी. की तालीम के दौरान ही जनाब डाक्टर सय्यद जफ़र महमूद साहिब का तक़र्रुर अलीगढ़ में बहैसीयत अस्सिटैंट कमिशनर इनकम टैक्स हुआ। तब उन्हों ने मुझे मुक़ाबले के इमतिहानात में शिरकत करने की तरग़ीब दी और हौसला अफ़्ज़ाई भी की। तालीम मुकम्मल करके मैंने कुछ अर्सा तक भाई मियां के पास रह कर वकालत सीखी । वकील.ए.दिफ़ा की हैसियत से मुल्ज़िम को सज़ा से बचाने और अदालत से मुल्ज़िम को बाइज़्ज़त बरी कराने के लिए पुलिस इस्तिग़ासे की बारीकी से छानबीन की जाती और तफ़तीश में रही ख़ामीयों को तलाश किया जाता था। वकालत के साथ साथ में मुक़ाबले के इमतिहानात की तै्य्यारी भी करता रहा ।

बेशक भाई मियां की ख़वाहिश थी कि में वकालत करूं लेकिन मुक़ाबले के इमतिहानात में शिरकत से उन्हों ने मुझे कभी मना नहीं किया बल्कि मेरी कामयाबी के लिए दुआओं के साथ तमाम सहूलतें फ़राहम कीं। मेरे आरण्पीण्एसण में मुंतख़ब होने पर भाई मियां बहुत ख़ुश थे। लेकिन कभी कभी उन की आँखों में ग़म की परछाई भी नज़र आती। में एक दोराहे पर खड़ा था। एक तरफ़ भाई मियां की ख़वाहिश थी तो दूसरी तरफ़ पुलिस की जगमगाती झिलमिलाती शानदार नौकरी। लेकिन भाई मियां ने मुझे पुलिस फोर्स में भेजने का फ़ैसला किया। क्योंकि वो बख़ूबी समझते थे कि अदालत से इंसाफ़ मिलने में इक उम्र गुज़र जाती है जबकि पुलिस फ़िलफ़ौर इंसाफ़ कर सकती है।

पुलिस फोर्स में शामिल होने के बाद मेरा नज़रिया यकसर बदल गया। अब तमाम तवज्जह गहराई से तफ़तीश करके पुख़्ता सबूत जमा करने और मुल्ज़िम के ख़िलाफ़ एक मज़बूत इस्तिग़ासा अदालत में पेश

करके उसे मुजरिम क़रार देने पर रहने लगी। चूँकि अब नुक्ता.ए.नज़र में तज़ाद था इस लिए मुजरिमों के तर्ज़.ए.अमल जुर्म करने के तौर तरीक़े मुजरिमाना वाक़यात से लेकर जुर्म.ओ.सज़ा पर लंबे मुबाहिसे होते। दरीं असना एक दिन हिंदूस्तान में मुर्र्व्वज फ़ौजदारी क़ानून और मज़हब.ए. इस्लाम बेहस का मौज़ू बने और दोनों का मवाज़ना किया गया।

फ़ौजदारी से मुताल्लिक़ तीन अहम क़ानून हैं। अव्वल. ताज़ीरात.ए. हिंद जिस में मुख़्तलिफ़ क़िस्म के जराइम ओर सज़ा की इस्तिलाह और वज़ाहत की गई है उन के मफ़हूम और मानी बताए गए हैं। दोयम. ज़ाबता फ़ौजदारी जिस में जुर्म का इर्तिकाब होने पर पुलिस में रिपोर्ट दर्ज होने से लेकर तफ़तीश और अदालत में समाअत के तरीक़े बताए गए हैं। सोयम. क़ानून.ए.शहादत।

हिंदूस्तान में राइज इन क़वानीन के मुताबिक़ जुर्म तीन तरह के हैं। अव्वल. संगीन जुर्म जैसे क़त्ल डकैती रहज़नी जालसाज़ी वग़ैरा । इस क़िस्म के जराइम के अदालत में साबित होने के बाद कोई माफ़ी नहीं है। यानी ये जुर्म नाक़ाबिल.ए.माफ़ी हैं। दोयम.कुछ कम संगीन जुर्म जैसे धोका फ़रेब ग़बन शदीद चोट चोरी वग़ैरा। इस क़िस्म के जराइम का शिकार मज़लूम अगर मुल्ज़िम से सुलह करता है और इस समझौता से अदालत भी इत्तिफ़ाक़.ए.राय करते हुए रज़ामंदी की मोहर सब्त करती है तो जुर्म को माफ़ किया जा सकता है। सोयम.मामूली नौईयत के जुर्म जैसे मामूली चोट बेजा मुदाख़िलत मुख़्तसर वक़्त के लिए हसब.ए.बेजा वग़ैरा। इस क़िस्म के जराइम फ़रीक़ैन में सुलह होने पर माफ़ किए जा सकते हैं और अदालत की रज़ामंदी की ज़रूरत भी नहीं होती।

इस्लाम में भी गुनाह तीन क़िस्म के हैं। अव्वल.शिर्क यानी अल्लाह की ज़ात में किसी को शरीक करना। ये गुनाह नाक़ाबिल.ए.माफ़ी है। जो शख़्स ख़ुदा की ज़ात से इन्हिराफ़ करे उस की ख़ुदाई एउस की वहदत को

तसलीम ना करे वो किसी माफ़ी के लायक़ भी नहीं है। दोयम.इबादत में कोताही और लापरवाही यानी वक़्त पर पाबंदी से नमाज़ अदा ना करना रोज़े ना रखना वग़ैरा। ये वो गुनाह हैं जिन्हें सिर्फ ख़ुदा ही माफ़ कर सकता है। अल्लाह तो ग़फ़ूरर रहीम है निहायत मेहरबान और रहम करने वाला है। सोयम.ख़ुदा की बनाई हुई मख़लूक़ या बेजान शै के ख़िलाफ़ किए गए गुनाह । इस किस्म के गुनाहों की फ़हरिस्त बहुत लंबी है। रोज़े हश्र तमाम आज़र्दा मजरूह.ओ.मज़लूम चाहे वो ज़ी रूह हो या बेजान शै गुनाहगार इंसान का दामन पकड़ेंगे और इंसाफ़ का तक़ाज़ा करेंगे । उस इंसान के गुनाह तभी माफ़ होंगे जब वो आज़र्दा मजरूह.ओ.मज़लूम ज़ी रूह या बेजान शै उस गुनाहगार इंसान को माफ़ करेगें।

हिंदूस्तान में राइज फ़ौजदारी क़ानून और मज़हब.ए.इस्लाम में बयान किए गए गुनाहों के मवाज़ने से ये नतीजा अख़ज़ किया गया कि गुनाहों की तीन क़िस्में हैं।

अव्वल.ना क़ाबिल.ए.माफ़ी गुनाह। दोयम.वो गुनाह जिन्हें सिर्फ अल्लाह ही माफ़ कर सकता है या जो मज़लूम से सुलह होने पर अदालत की रजामंदी से माफ़ किए जा सकते हैं। सोयम.वो गुनाह जिन्हें मजरूह व मज़लूम या आज़र्दा ही माफ़ कर सकता है।

फिर भाई मियां ने उस की वज़ाहत करते हुए कहा कि इबादत में कोताही और लापरवाही को तो अल्लाहही माफ़ करेगा। लेकिन बाक़ी गुनाहों की माफ़ी तो मजरूह व मज़लूम या आज़र्दा से ही मांगनी होगी। इस किस्म के गुनाहों के हम हर रोज़ मुर्तक़िब होते हैं और उन की फ़हरिस्त बहुत तवील है। हम अपने माँ बाप बहन भाई औलाद रिश्तेदार पड़ोसी और हमवतनों के लिए मुक़र्रर फ़राइज़ को पूरा नहीं करते बल्कि उन की हक़ तलफ़ी करते हैं। झूट फ़रेब बेईमानी जालसाज़ी ग़बन और ख़यानत जैसे गुनाहों का रोज़ इर्तिकाब करते हैं। दिल आज़ारी करना

हमारा मामूल बन चुका है। किसी को हक़ीर समझना और हिक़ारत से देखना भी गुनाह है। खाने पीने की चीजों की बर्बादी हमारी आदत में शुमार हो चुकी है। इस्लाम में उकड़ूं बैठ कर खाना खाने की हिदायत इस लिए की गई ताकि पेट का एक तिहाई हिस्सा ख़ाली रहे। और खाने की जो अशीया बच जाएं वो दूसरों के काम आएं। अगर हम एक बाल्टी पानी से नहा सकते हैं तो इस से ज़ाइद पानी बहाना भी गुनाह है। जितनी ज़रूरत हो इतने ही जानवर जबह किए जाएं। अपने शौक.ए.शिकार की तसकीन के लिए बेशुमार बेज़बान जानवर हलाक करना भी गुनाह है। ये भी गुनाह है कि हम ख़ुदा की बनाए हुए ख़ूबसूरत चरिन्दों परिन्दों को बिला वजह हलाक करके नापैद करदें और आने वाली नसलें उन्हें देखने से महरूम हो जाएं। ये भी गुनाह है के हम जंगलों एपहाड़ों और नदियों को नेस्त.ओ.नाबूद कर दें और आने वाली नसलें कुदरत के इन ख़ूबसूरत मनाज़िर और उन की इफ़ादीयत से महरूम हो जाएं और जिस की वजह से क़हत और ख़ुशक साली का सामना करना पड़े। आब.ओ.हवा को इस तरह नजस व नापाक और आलूदा करना कि सेहत और ज़िंदगी मुतास्सिर हो गुनाह है।

आज हर हुकूमत अवाम से दरख़ास्त करती है कि पानी बचाओ बिजली बचाओ। आज नदियों पहाड़ों और जंगलात को बचाने के लिए कितनी तहरीकात चलाई जा रही हैं। चरिन्दों परिन्दों की हिफ़ाज़त के लिए कई क़ानून बनाए गए हैं। इन का शिकार करनाएउन की खाल ए दाँत और जिस्म के दीगर हिस्सों को फ़रोखत करने के लिए उन्हें हलाक करना उन की तहवील.ओ.तोक़ीफ़ए यहां तक कि उन्हें पालने के शौक की तसकीन के लिए इन बे ज़बानों को कैद कर उन की आज़ादी ख़त्म करना भी जुर्म क़रार दिए गए हैं। लेकिन इस्लाम में तो ये क़वानीन हजारों साल पहले से मौजूद हैं। हमारे मुलक के बहुत से क़ानून इस्लामी क़वाइद.ओ.

ज़वाबित के मुमासिल और क़ुरआन.ओ.हदीस की तालीम के ऐन मुताबिक़ हैं।

लेकिन मज़हब.ए.इस्लाम में जुर्म.ओ.सज़ा से मुताल्लिक़ चंद मुआमलात हमारे मुलक में ही नहीं बल्कि दुनिया में राइज सभी फ़ौजदारी क़वानीन से मुख़्तलिफ़ हैं। इस दुनिया में बेशुमार मुजरिम सज़ा से महज़ इस लिए बच जाते हैं कि मज़लूम.ओ.आज़र्दा किसी जब्रए मजबूरीए दबाओ या मसलेहत की वजह से या मुजरिम के बारसूख़ और बाअसर होने की वजह से ना एहतिजाज करता है और ना ही कहीं शिकायत दर्ज कराता है और ख़ामोशी से जुलम.ओ.ज़्यादती को बर्दाश्त करता रहता है। कभी जुर्म इतनी एहतियात से किया जाता है कि उस का कहीं कोई सुराग नहीं मिलता। कभी मुजरिम झूटी और कमज़ोर शहादत की बिना पर कभी फ़र्ज़ी दस्तावेज़ पेश करके कभी तफतीशी ख़ामीयों और पुलिस इस्तिग़ासा के नुक़्स के बाइस पुलिस की गिरिफ़त से बच जाता है या अदालत से बरी हो जाता है। लेकिन ख़ुदा के हुज़ूर में उस अदालत.ए.आलीया में ना तो एहतिजाज की ज़रूरत होगी ना ही शिकायत दर्ज कराने की किसी का कोई जुर्म कोई गुनाह पोशीदा ना होगा कोई झूटी शहादत कोई फ़र्ज़ी दस्तावेज़ काम ना आएगा ना तफ़तीश होगी और ना इस्तिग़ासा। उस अदालत.ए.आलीया में तो सिर्फ अहकाम.ए.जुर्म सुनाई जाएगी और फिर फ़ैसला सादिर होगा और सज़ा का तअय्युन।

अदालत में जुर्म साबित होने पर मुल्ज़िम को मुजरिम क़रार दिया जाता है । लेकिन सज़ा का तअय्युन करते वक़्त इस पर भी ग़ौर किया जाता है कि वो शख़्स जुर्म का मुर्तक़िब क्योंकर हुआ । इर्तिकाब.ए.जुर्म का मोहर्रिक किया था। इस का इरादा नीयत और मक़सद क्या थे । जुर्म करते वक़्त उस की उम्र उस की ज़हनी कैफ़ीयत क्या थी। उस का माज़ी उस का किरदार और चाल चलन ग़रज़ ये कि उन तमाम हालात और

वजूहात पर जिन में उस से जुर्म सरज़द हुआ था ग़ोर करने के बाद ही सज़ा का तअय्युन किया जाता है। हमारे मुलक में इस के लिए अलयहदा से क़वाइद व ज़वाबित वज़े किए गए हैं जिन के तहत उन तमाम हालात.ओ.वजूहात पर ग़ौर व ख़ोज़ के बाद किसी मुजरिम की सज़ा में कमी या बेशी की जा सकती है। और यह क़वाइद व ज़वाबित भी कम.ओ.बेश इस्लामी क़वानीन के मुमासिल हैं। क्योंकि रोज़े हश्र हर इंसान के गुनाह व सवाब तराज़ू में तोले जाऐंगे। उधर दोज़ख़.ओ.जन्नत में दाख़लि तराज़ू के पलड़े पर मुनहस्सिर होगा। बेशक गुनाह गार इंसान की सज़ा का तअय्युन हमारे मुल्क में वज़ा किए गए क़वाइद व ज़वाबित की तरह ही तमाम हालात और वजूहात की रोशनी में कहीं ज़्यादा बारीक बीनी से किया जाएगा। माफ़ी और सज़ा की बुनियाद इंसान का आमाल नामा होगा और सज़ा की मुद्दत.ओ.शिद्दत के इज़ाफ़े और तख़फ़ीफ़ का भी। रोज़ महशर हमारा दामन पकड़ने वालों की तादाद इतनी कसीर होगी कि दामन ही नहीं दामन के कपड़े के रेशे भी कम पड़ जाऐंगे। अल्लाह भी इबादत में की गई कोताही को तब ही माफ़ करेगा जब इंसान का आमाल नामा नेकियों से भरा हो।

दुनियावी क़वानीन और इलम फ़िक्ह से मुताल्लिक़ ये बारीकियां रहबर मिल्लत ने हमें ख़ूब ख़ूब समझाईं।

रहबर.ए.मिल्लत मन्ज़ूर आलम

अज़ डाक्टर मौहम्मद हाशिम क़िदवाई
साबिक मैंबर पार्लीमैंट ;राज्य सभाद्ध नई दिल्ली

हिंदूस्तानी मुस्लमानों की ये बहुत बड़ी ख़ुशक़िसमती है कि हर दौर में उन्हें ऐसे मुख़लिसए क़ायद मिलते रहे जिन्हों ने अपनी सारी ज़िंदगी और अपनी सारी सलाहीयतें उन की ख़िदमत और फ़लाह.ओ. बहबूद के लिए वक़्फ़ करदीं। ऐसे ही मुख़लिस क़ायदीन में मन्ज़ूर आलम साहिब थे जिन के नाक़ाबिले फ़रामोश कारनामे हमेशा याद रखे जाएँगे। राक़िम उलसतूर की ये बड़ी ख़ुशनसीबी है कि उन से क़राबत हो गई यानी मेरी छोटी बेटी सारा का अक़्द उन के लख़त.ए.जिगर अज़ीज़ी महमूद आलम तारिक़ से हो गया। इस क़राबत के कायम होने से पहले ही मिल्ली तहरीकों में उन की ख़िदमात की बिना पर उन से ना सिर्फ वाक़फ़ीयत थी बल्कि उन से शरफ़.ए.मुलाक़ात भी हासिल था। उन के आबा.ओ.अज्दाद मुजाहिद आज़म हज़रत सय्यद अहमद शहीद के जानिसार साथीयों में थे। इन में से बाज़ ने जाम.ए.शहादत नोश फ़रमाया। इन हज़रात की मुजाहिदाना स्परिट मन्ज़ूर आलम साहिब में कूट कूट कर भरी हुई थी। वो ज़बरदस्त क़ुव्वत.ए.इरादी के मालिक थेए हमीयत दीनी आग के पुतले थे और इस के साथ ही साथ इन का इलमी ज़ौक़ बहुत बुलंद था। बचपन ही से उन्हें जुनून की हद तक इलम हासिल करने का शौक था। उन के इस शौक को देख कर उन के वालिद ने जो उस ज़माना में अपने अहल.ओ.अयाल के साथ निम्हैड़ा में रहते थेए उन्हें टोंक भेज दिया जहां उन्हों ने अपनी नानी के यहां रह कर मैट्रिक का इमतिहान पास किया। इस के बाद गर्वनमैंट कॉलिज अजमेर से बीण्एण और अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी से 1942 में एलण्एलण्बीण किया और

टोंक में वकालत शुरू की। उस ज़माने में रियासत टोंक का अपना हाईकोर्ट था। मन्ज़ूर आलम साहिब पहले ला ग्रेजुएट वकील थे। उन को वकालत शुरू किए हुए चंद महीने ही हुए थे कि जज ने उन से मजसट्रेसी की जगह पर दरखास्त देने को कहाए लेकिन उन्हों ने इस से इनकार किया और अपनी ख़ुदादाद सलाहीयतों और क़ाबिलीयत से अपनी वकालत का लोहा मनवा लिया और उन का शुमार लायक़ और क़ाबिल वकीलों में होने लगा। वो इलमी ज़ौक़ के मालिक थे। उन्हों ने क़ुरआन मजीदए तफ़सीरए अहादीसए इस्लामी तारीखए ख़ुलफ़ाए राशिदीन की सवानेह हयात और अल्लामा इक़बाल की शायरी का बड़ा गहरा मुताला किया था। और साथ ही साथ अपने मिलने वालों से हमेशा उस की तलक़ीन करते थे कि इस्लाम की तालीमात पर अमल करें और अपने हुक़ूक़ के हुसूल के लिए जद्द.ओ.जहद करें।

1945 में उन के वालिद का इंतिक़ाल होगया और उन के कंधों पर दो छोटे भाईयों और तीन बहनों की किफ़ालत और तालीम की भारी ज़िम्मेदारी पड़ी। उन्हों ने बड़ी ख़ुशअसलूबी से उन ज़िम्मेदारीयों को पूरा किया। छोटे भाईयों को तालीम दिलवाई और बहनों की शादीयां से सुबुकदोश हुए। रियासत के अवाम की फ़लाह और बहबूद के लिए अपने को वक़्फ कर दिया। 1945 की बरसात में टोंक में ज़बरदस्त तूफ़ानी बारिश हुई और सैंकड़ों मकान ज़मीं बोस हो गए। यही हाल दुकानों का भी हुआ। मकानों और दुकानों का सारा सामान गलीयों और सड़कों पर आगया। मन्ज़ूर आलम साहिब ने अपने दोस्त और साथी हबीबुद्दीन खां जो उन के साथ वकालत करते थेए पूरे शहर टोंक का जायज़ा लिया। लोगों का सामान जो उन को सड़कों और गलीयों में मिलाए मालिकों के हवाले किया और बारिश से मुतास्सिर अफ़राद के मसाइल को हल करने के लिए एक मुफ़स्सिल स्कीम तैय्यार की और उन के साथ नौजवानों की

एक टीम भी उन का हाथ बटाने के लिए मैदान में आ गई। बारिश के बाद बीमारीयों का सिलसिला शुरू हुआ। मकानों की तामीरए लोगों का ईलाज.ओ.मुआलिजाए उन के खाने पीने और ज़रीया.ए.मआश का इंतिज़ाम बड़े अहम मसाइल थे जिन को मन्ज़ूर आलम साहिब और उन की टीम अपने महदूद वसाइल की वजह से हल नहीं कर सकते थेए उन्हों ने और उन के रफ़क़ा ने रियासत के ओहदेदारों से ज़बानी और अर्जदाशतों के ज़रीया उन मसाइल को हल करने के लिए ज़ोर दिया और कोशिश की कि रियासत के हुक्काम लोगों के मसाइल को हल करने के लिए ज़रूरी इक़दामात करें। लेकिन बदक़िस्मती से उन की कोशिशों का कोई नतीजा नहीं निकला। मन्ज़ूर आलम साहिब ने लोगों को ख़ासतौर से अपने साथीयों को तलक़ीन की कि वो मसाइल को हल करने के लिए जद्द.ओ. जहद करें और मैदान.ए.अमल में आएं। उन की क़यादत में टोंक की मुतलक़ उल.अनान हुकूमत के इस्तिबदाद के ख़िलाफ़ जद्द.ओ.जहद शुरू हुईए उस ज़माने में रियासत के नज़म.ओ.नस्क़ के लिए एक मजलिस इंतिज़ामीया थी जिस के सदर ख़ुद नवाब थे और नायब सदर जिस का तक़र्रुर रेज़ीडेन्ट करते थे और दूसरे वुज़रा भी थे जो नवाब साहिब के मोतमिद और रिश्तेदार थे। लेकिन असल में रियासत के जुमला इख़्तयारात नायब सदर के हाथ में थे। ख़ुफ़िया पुलिस का महकमा भी उस के हाथ में था। इस तरह से अमलन रियासत का सारा नज़म.ओ. नस्क़ नायब सदर के हाथ में था। हुकूमत के इस्तिबदाद का ये आलम था कि लोगों को पुख़्ता मकान तक बनाने की इजाज़त ना थी। उस वक़्त एक बड़ा ही ना एहल और साज़िशी ज़हन का मालिक नायब सदर था। इस ने चापलूस मिनिस्टरों और ओहदेदारों का एक पूरा गिरोह तैय्यार कर लिया था। इस गिरोह के ज़रीये नवाब साहिब को मन्ज़ूर आलम साहिब और हबीबुद्दीन खां साहिब के ख़िलाफ़ वरग़लाया और इन दोनों पर ये

इल्ज़ाम लगाया कि वो रियासत टोंक के अवाम को बग़ावत के लिए आमादा कर रहे हैं। चुनांचे हबीबुद्दीन साहिब को गिरफ़तार किया गया। इस के ख़िलाफ़ मन्ज़ूर आलम साहिब की क़यादत में बड़ा ज़बरदस्त एहतेजाजी जलूस निकला और इस वजह से हबीबुद्दीन खां साहिब को रिहा किया गया। रेज़डेन्ट ने इन दोनों हज़रात से जयपुर में मुलाक़ात की और उन के सारे मुतालिबात तस्लीम किए और ये सब नवाब साहिब की मौजूदगी में हुआ। टोंक में पहली बार म्यूंसिपल्टी क़ायम हुई और मंज़ूर आलम साहिब इस के चेयरमैन हुए। नायब सदर को बर्ख़ास्त किया गया और उन के चापलूसों को जो टोंक के अवाम की लीडर होने का दावा करते थे की ज़बरदस्त शिकस्त हुई।

इस तरह से मंज़ूर आलम साहिब ने मुतलक़ अनानी को ख़त्म किया और टोंक में जमहूरीयत की फ़तह हुई जिस के क़ाइद मन्ज़ूर आलम साहिब थे। अवाम की तालीम.ओ.तरक़्क़ी और ख़ुशहाली मन्ज़ूर आलम साहिब की ज़िंदगी का मक़सद था। उन्हों ने लड़कों के लिए दारुल मुतआला और लड़कीयों के लिए बनातुल मुस्लिमीन जो जदीद तालीम के मर्कज़ थेए कायम किए। उन्हों ने अपनी औलाद को क़ाबिल रशक तालीम.ओ.तर्बीयत दी। वो हर एक की मदद के लिए हरवक़्त तैय्यार रहते थे।

वो अपने कारनामों की वजह से हमेशा याद किए जाऐंगे। इस मर्द–ए–हक़ आगाह–ओ–बतजलील की क़ाबिल रशक ज़िंदगी इक़बाल के इस शेअर का मुकम्मल नमूना थी .

यक़ीं मुहकम अमल पैहम मुहब्बत फ़ातिह–ए–आलम
जिहाद–ए–ज़िंदगी में हैं ये मर्दों की शमशीरें

वालिदा की सरपरस्ती
और
बहन भाईयों की ख़िदमात

अमतुस्सलाम

हमारे वालिद जिन्हें हम दादा भाई कहते थे रियासत टोंक में कस्टम ऑफीसर थे। भाई मियां हम बहन भाईयों में सब से बड़े थे। दादा भाई ने भाई मियां का नाम मन्ज़ूर आलम किसी बुजुर्ग से पूछ कर रखा थाए और ये तारीख़ी नाम है। यानी मन्ज़ूर आलम के हुरूफ़ के हिंदसों को जमा करने पर कुल मीज़ान उन की सन.ए.पैदाइश १३३७ हि० होता है। हमारी मरहूमा वालिदा जिन्हें हम बी कहते थे बताती थीं कि जब दादा भाई ने पहली बार भाई मियां को अपनी गोद में लिया तो ख़ुदा जाने उन की रोशन जबीं पर क्या देखा कि उन का तारीख़ी नाम रखने का फ़ैसला किया था। बाद अज़ां दो छोटे भाईयों की पैदाइश पर उन के नाम भी आलम के साथ महबूब आलम और सईद आलम रखे गए। और अब सभी बच्चों के नाम आलम के साथ ही रखे जाते हैं। इस लिए हम आलम ख़ानदान के नाम से जाने जाते हैं। इस तरह भाई मियां आलम ख़ानदान के बानी हैं।

१९३१ ईः में भाई मियां मज़ीद तालीम हासिल करने टोंक चले गए। उस वक़्त मेरी उम्र ग़ालिबन चार साल थी। उन दिनों दादा भाई नीमाहीड़ा में तय्नात थे जो टोंक रियासत का ही परगना था। हम बहन भाई हमारे

वालिदा और वालिद के साथ ही रहा करते थे। भाई मियां के जाने के बाद हमें बहुत अकेलापन महसूस हुआ।

ज़हीन और होशयार होने की वजह से भाई मियां को जल्द ही वज़ीफ़ा मिलना शुरू हो गया। तालीम और दीगर मसारिफ़ के लिए दादा भाई उनहें जो रक़म भेजते वह उसे बचा कर हमारे लिए तोहफ़े लाते थे और तोहफ़ों में ज़्यादा तर किताबें होती थीं। वह बी के लिए जदीद क़िस्म के बर्तन भी लाया करते थे। उन के छुट्टीयों में आने का हम सब बड़ी बेसबरी से इंतिज़ार करता थे।

१९४२ ईः में भाई मियां ने अपनी तालीम मुकम्मल करके टोंक में वकालत शुरू की। इसी साल मेरी बड़ी बहन मौहतरमा तय्यबा ख़ातून की शादी हुई थी। १९४४ ईः में हम बहन भाई और बी टोंक आ कर भाई मियां के साथ रहने लगे। इन दिनों हम अबदुल क़य्यूम खां की हवेली के बालाई मंज़िल पर रहा करते थे। अपनी तालीम की वजह से भाई मियां तक़रीबन तेरह साल हम सब से दूर रहे। उन के साथ आकर रहने से हम सब बहुत खुश थे। दो छोटे भाईयों के अलावा मेरी दो छोटी बहनें अमतुलबाक़ी और ज़हरा थीं।

३ मई १९४५ ईः को भाई मियां एक मुक़द्दमा के सिलसिला में सिरोंज गए जहां उन्हें एक हफ़्ता क़याम करना था। दादा भाई उन दिनों लटीरी में थे । भाई मियां ने ज़रीय तार अपने प्रोग्राम की इत्तिला दादा भाई को भेज दी थी। ६ मई की शाम भाई मियां को ख़बर मिली कि दादा भाई की तबीयत नासाज़ है । दादा भाई २८ अप्रैल से ही सख़्त बीमार चल रहे थे । लेकिन उन्हों ने अपनी बीमारी की इत्तिला हमें नहीं दी। ७ मई को सुबह चार बजे भाई मियां सिरोंज से लटीरी रवाना हो गए लेकिन उन के लटीरी पहुंचने से कुछ देर पहले दादा भाई इंतिक़ाल फ़र्मा गए थे। भाई मियां जब वापिस आए तो उन का चेहरा और आँखें लाल सुर्ख़ हो रही थीं।

इस से पहले कि बी कुछ पूछतीं वह उन से लिपट कर ज़ारो क़तार रोने लगे। उन्हें रोता देख हम सब बहन भाई भी रोने लगे। बी दिलासा दे दे कर पूछती रहें कि क्या हुआ । बहुत देर तक भाई मियां के मुँह से कोई अलफ़ाज़ ना निकले फिर बस इतना कहा दादा भाई नहीं रहे। ये सुन कर हम सब पर क़ियामत टूट पड़ी

बी ने आँखें बंद करलीं। ऐसा लगा जैसे बेहोश हो कर गिर जाऐंगी। लेकिन उन्हों ने एक हाथ से भाई मियां को सँभाला और दूसरे हाथ से हम सब को लिपटा लिया। फिर हम से अलग हो कर वुज़ू किया और मुसल्ले पर बैठ गईंए नमाज अदा करके बहुत देर तक क़ुरआन शरीफ की तिलावत की और सजदे में रो रो कर अल्लाह से दुआ करती रहीं।

उस दिन भाई मियां ने हम सब को अपनी बाँहों में इस तरह समेट लिया कि उन की ज़िंदगी के आख़िरी लम्हों तक हमें बाप की कमी महसूस नहीं हुई। उन के सीने से लग कर हमें यतीम होने का एहसास जाता रहा। हक़ीक़त में तो हम भाई मियां के इंतिक़ाल पर ही यतीम हुए। उस साल टोंक में बहुत सख़्त बारिश हुई सेलाब आगया। भाई मियां ग़रीब अवाम की इमदाद में जुट गए। वह बी को सारे हालात बतातेए उन के काम से बी बहुत ख़ुश थीं। उन्हों ने रियासत के ओहदेदारों को फ़र्ज़ की अदायगी का एहसास दिलाया तो वो उन के दुश्मन हो गए। रियासत से झगड़ा मोल लेना बहुत ख़तरनाक था। भाई मियां ने बी को सारे हालात बताए और उन की रज़ामंदी जान्नी चाही। बी ने चंद लम्हा सोचा और कहा कि राह.ए.ख़ुदा में मुफ़लिसों की हिमायत बेख़ौफ़.ओ.ख़तर होकर करो। और सर पर हाथ रख कर दुआएं दीं।

भाई मियां हर काम बी की इजाज़त और ख़ुशनुदी के साथ ही करते थे। इस के बाद तो भाई मियां ने ग़रीबों की ख़िदमत.ओ.हिमायत में जी जान एक कर दिए। सुबह जल्दी उठ कर मुक़द्दमों की पैरवी की तय्यारी

करते और अदालत के बाद अवाम के इमदादी काम एजो देर रात तक जारी रहते। भाई मियां जब तक घर ना आ जाते बी खाना नहीं खाती थीं और मुसल्ले पर क़ुरआन की तिलावत करतीं या तस्बीह लेकर वज़ीफ़े पढ़ती रहतीं। उन के आने पर बी उन्हें हमेशा गर्म चपाती ख़िलातीं। भाई मियां कहते थे आब.ए.ख़ुन्क नान गर्म।

मुफ़लिस अवाम की इमदाद के बहाने रियासत के ख़ज़ाने से ख़र्च की जा रही दौलत और दीगर मालूमात शमशुद्दीन साहिब फ़राहम किया करते थे जो बहीर में रहते थे। चूँकि वह रियासत में ट्रेज़रार थे इस लिए भाई मियां से मुलाक़ात ख़ुफ़ीया तौर पर किया करते थे। भाई मियां अक्सर उन से मिलने रात में पुरानी टोंक से क़ब्रिस्तान के पीछे वाले रास्ता से हो कर जाते थे। वापसी पर जब बहुत देर हो जाती तो मेंए महबूब मियांए सईद मियांए अम्मतुलबाक़ी और ज़हरा बी छत पर जाकर सुनसान अंधेरे रास्तों को तकते रहते। और जब भाई मियां आते हुए नज़र आ जाते तो भाग कर नीचे आकर बी को बताते। अंजुमन रिआया टोंक की तशकील इसी छत पर हुई थी। शहर के सैकड़ों अफ़राद जमा हुए जिन्हों ने भाई मियां को अपना क़ायद मुन्तख़ब किया था।

भाई मियां टोंक से मुताल्लिक़ ख़बरें हम से या अंजुमन के अराकीन से लिखवा कर हादी अख़बार के लिए अलीगढ़ दस्ती भिजवाते थे और वहां से अख़बार आने पर महबूब मियां शहर की मुख़्तलिफ़ मसाजिद के बाहर खड़े हो कर ख़ामोशी से नमाज़ियों में अख़बार तक़सीम कर आते क्योंकि इस तरह की ख़बरों के अख़बार तक़सीम करने पर गिरफ़तार होने का ख़तरा था। पैग़ाम रसानी के भी सारे काम महबूब मियां ही अंजाम देते थे। महबूब मियां की उम्र उस वक़्त सिर्फ तेरह साल थी। हालाँकि अंजुमन के अराकीन उन की निगरानी पर मामूर रहते थे । लेकिन जब

तक वो जवाब लेकर या अख़बार तक़सीम करके वापस ना आजाते भाई मियां फ़िक्रमंद रहते थे।

अंजुमन का एक जलसा पुरानी टोंक में मियां जी के चैक में मुनक़्क़िदहुआ था। सईद मियां जिन की उम्र उस वक़्त ग़ालिबन सात साल और ज़हरा बी जो उस वक़्त चार साल की थीं ने इस जलसा में इक़बाल की नज़म उठो मरी दुनिया के गरीबों को जगा दो पढ़ी थी। मैंने और बी ने कई रोज़ तक दोनों को मश्क़.ओ.रियाज़त कराई और नज़म याद करवाई थी। दोनों ने जलसे में वो नज़म बहुत अच्छी तरह पढ़ी थी। जब हबीबुद्दीन साहिब को गिरफ़तार किया गया तो भाई मियां ने बी को बताया और सलाह.ओ.मश्वरा किया। बी ने कुछ दुआएं पढ़ कर फूंकीं सर पर हाथ रखा इस के बाद भाई मियां घर से निकल पड़े। बी ने महबूब मियां को भी उन के पीछे भेजा। और ख़ुद क़ुरआन की तिलावत करती रहीं देर रात हबीबुद्दीन साहिब की रिहाई की इत्तिला मिली तो बी ने नमाज़ शुक्राना अदा की।

शहर में तरह तरह की अफ़्वाहें फैलतीं। कभी ये कि नवाब ने तोपख़ाने को हुक्म दे दिया है कि अगर भाई मियां कोई जलसा मुनक़्क़िदकरें तो उन्हें जलसे में ही तोप से उड़ा दिया जाये। कभी ये कि घर की ख़ादिमा को नवाब ने भाई मियां को ज़हर देने के लिए रखवाया है। महीनों इस ख़ादिमा की हरकात.ओ.सकनात की निगरानी हम सब बारी बारी करते। लेकिन बी ने उस ख़ादिमा को कुछ भी कहने के लिए सख़्ती से मना किया था। वो नहीं चाहती थीं कि ग़लत और झूटी अफ़वाहों के बाइस उस की दिल आज़ारी हो। ख़ादिमा के बनाए खानों की परख करने के लिए हम घरेलू चिड़ियों और बिल्लीयों को को खाना खिला कर घंटों उन की निगरानी करते रहते।

इन अफ्वाहों की वजह से हम डरे सहमे रहते। लेकिन बी की हिदायत के मुताबिक़ भाई मियां पर अपने ख़ौफ़ का इज़हार न होने देते ताकि भाई मियां को कोई ज़हनी परेशानी ना हो और अवाम के इमदादी कामों में ख़लल ना पड़े। लेकिन जाबजा जब शहर के बाशिंदे मन्ज़ूर आलम और हबीबुद्दीन ज़िन्दा बाद के नारे बुलन्द करते तो हमारे दिल को क़रार आता और ऐसा लगता जैसे पूरा शहर हमारी पहरेदारी पर मामूर है और हिफ़ाज़त के लिए मुस्तअद है।

मुल्क आज़ाद हुआ ए रियासत का दौर ख़त्म हुआ। जब हर तरफ़ अमन.ओ.अमान क़ायम हो गया तब बी ने ७ अप्रैल १९४८ ईः को भाई मियां की शादी जनाब नसीर मौहम्मद ख़ां की दुख़तर बेगम बदरुननिसां से की। शादी पर मुबारक बाद देने वालों का तांता थमता ना थाए पूरा शहर उमड कर आ गया था। आख़िर ये उन के हर दिल अज़ीज़ क़ायदए उन के रहनुमा और उन के रहबर की शादी थी।

लाऊड स्पीकर साहिब

सय्यद लियाक़त अली

मेरे वालिद मरहूम जनाब सय्यद मज़हर अली साहब बचपन से ही बेख़ौफ बे झिजक और साफ़ गो इंसान थे। हक़ बात कहने में क़तई गुरेज़ नहीं करते थे। मन्ज़ूर आलम साहब और हबीबुद्दीन साहिब ने रियासत के दौर में अवाम की तरक़्क़ी और ख़ुशहाली के लिए जो तहरीक चलाई थी इस के बहुत से वाक़यात वो हम बहन भाईयों को बड़े जोश.ओ. ख़ुरोश से ख़ुश हो कर सुनाते थे।

इस तहरीक की एक मजलिस मौहल्ला बाउड़ी पर हुई थी जो ग़ालेबन उस तहरीक की पहली मजलिस थी। मौहल्ले के सौ पच्चास बाशिंदगान के साथ मेरे वालिद साहिब ने भी शिरकत की थी। मन्ज़ूर आलम साहिब और हबीबुद्दीन साहब की त क़रीरें सुन कर वो इतने मुतास्सिर हुए कि शहर में तहरीक की होने वाली मजलिस का इलम होने पर उस में शिरकत ज़रूर करते थे। तहरीक से मुतास्सिर होने वाले अफ़राद का हलक़ा बढ़ने पर अंजुमन रिआया टोंक क़ायम की गई। मेरे वालिद इस अंजुमन के सरगर्म कारकुन थे। जब हबीबुद्दीन साहब को गिरफ़तार किया गया तो मेरे वालिद साहिब सैकड़ों लोगों के साथ उन के घर पहुंचे जहां मन्ज़ूर आलम साहब ने हजारों अफ़राद के एक अज़ीम जलसे को ख़िताब किया । मन्ज़ूर आलम साहब की पुरजोश त क़रीर से वहां मौजूद मजमा इतना बरअंगेख़्ता था कि जेल तोड़ कर हबीबुद्दीन साहब को आज़ाद कराने पर त्ैय्यार था। अवाम के ग़म व ग़ुस्से को देखते हुए हुकूमत को हबीबुद्दीन साहब को देर रात जेल से रिहा करना पड़ा।

हबीबुद्दीन साहब की रिहाई के बाद से अंजुमन के हौसले बहुत बुलन्द हो गए थे। मन्ज़ूर आलम साहब और हबीबुद्दीन साहब जयपुर के अंग्रेज़ अफ़सरों से राबिता क़ायम करने की कोशिश में थे। अंजुमन के जलसे भी अब खुले आम मुनक़्क़िद होने लगे थे। इन जलसों में अवाम की तादाद इतनी ज़्यादा होती थी कि मुक़र्ररीन की आवाज़ सब लोगों तक नहीं पहुंच पाती थी। मेरे वालिद साहिब लाऊड स्पीकर के इंतिज़ाम के लिए जयपुर गए। रियासत के उस दौर में सभी काम बड़ी ख़ामोशी और राज़दारी से किए जाते थे क्योंकि अंजुमन के कामों में रियासत के अफ़सरान रख़ाना डालते और पाबंदीयां आयद करते रहते थे। जयपुर के अंग्रेज़ रेज़ीडेन्ट से राबिता क़ायम करने की कोशिश की जा रही थी और साथ साथ एक बड़ा अवामी जलसा मुनक़्क़िद करने की त्य्यारी चल रही थी जिस के लिए लाऊडस्पीकर का इंतज़ाम किया जा रहा था। इंतिहाई राज़दारी के बावजूद ये दोनों बातें ख़िल्लत मिल्लत हो कर नवाब साहिब तक इस तरह पहुंची कि अंजुमन एक बहुत बड़ा जलसा मुनक़्क़िद कर रही है जिस में लाऊड स्पीकर नाम के किसी अंग्रेज़ को मदऊ किया गया है। फ़ोरन रियासत के अफ़सरान को अहकामात जारी किए गए कि लाऊड स्पीकर साहिब को अंजुमन के जलसे में नहीं पहुंचने दिया जाये और उन्हें इज़्ज़त.ओ.एहतिराम के साथ महल नज़रबाग़ में लाया जाये । जलसे के दिन सुबह से ही बनास नदी के पुल पर पुलिस के साथ चंद मातेहत अफ़सरान तैयनात हो गए। उस दौर में कारों में या तो नवाब साहब सफ़र करते थे या अंग्रेज़। उस दिन जयपुर की तरफ़ से कोई कार आई ही नहीं। पुलिस और मातेहत अफ़्सर सारा दिन अंग्रेज़ लाऊड स्पीकर साहब की बाट जोते रहे। टोंक में एक बड़ा जल्सा.ए.आम मुनक़्क़िद हुआ और इस में पहली बार लाऊड स्पीकर का इस्तिमाल हुआ। शाम को नवाब साहिब को बताया गया कि अंजुमन के जलसा में बड़ी तादाद में लोग जमा हुए

और इस में लाऊड स्पीकर साहिब ने भी शिरकत फ़रमाई। इस पर नवाब साहिब बहुत बरहम हुए और अपने अफ़सरान को सख़्त सुस्तए ना अहल और नाकारा कहा। इस वाक़य में हो सकता है मुबालग़े से काम लिया गया हो लेकिन इस से ज़ाहिर होता है कि टोंक के नवाब और मख़लूक़ किस क़दर मासूम और सादा लूह थे।

वालिद साहिब बताते थे कि उन्हें जब ये ख़बर मिली कि रेज़ीडेंट टोंक आने वाला है तो वो बहुत ख़ुश थे। मन्ज़ूर आलम साहब और हबीबुद्दीन साहब बारिश से तबाह व बरबाद ग़रीब अवाम की फ़हरिस्त बनाने ओर उन की तरक़्क़ी और ख़ुशहाली के लिए उठाए जाने वाले इक़दामात को क़लमबंद करने में दिन रात मसरूफ़ रहते थे। वालिद साहिब और अंजुमन के दीगर अराकीन बस्ती बस्तीए घर घर जाकर बर्बाद हुए लोगों के नाम पता और उन्हें हुए नुक़्सान का तख़मीना बना कर लाते। जिस दिन रेज़ीडेंट की आमद टोंक में होनी थी उस रोज़ वालिद साहिब सुबह जल्दी ही घर से निकल पड़े और शहर में अंजुमन के अराकीन से राबिता क़ायम क्या । सभी ने तै किया कि उन्हें भी मेहंदी बाग़ की पहाड़ी पर वाक़य कोठी नंबर तीन पर चल कर देखना चाहीए कि वहां क्या होता है। शहर में पुलिस के बड़े सख़्त इंतिज़ामात थे। इस लिए ये प्रोग्राम बनाया कि आम रास्तों को छोड़कर गलीयों से छुपते छुपाते पहाड़ी के नज़दीक पहुंचा जाये।

हालाँकि मन्ज़ूर आलम साहब और हबीबुद्दीन साहब की तरफ़ से उन्हें इस क़िस्म की कोई हिदायत नहीं थी। ये तो ख़ुद उन का इश्तियाक़.ओ.तजस्सुस था जो उन्हें उस मनज़र को अपनी आँख से देखने के लिए पहाड़ी की तरफ़ खींच रहा था।अ ौर जब अंजुमन के अराकीन अपनी बस्तीयों से निकल कर छुपते छुपाते पहाड़ी की तरफ़ बढ़े तो उन की तक़लीद में सैकड़ों हजारों लोग भी उन के पीछे चल पड़े। उन के वहम.ओ.

गुमान में भी ना था कि इतनी बड़ी तादाद में लोग अपने घरों से निकल पड़ेंगे। दरअसल ये अवाम का उन के कायद उन के रहनुमाओं के लिए जज़बा ए अक़ीदत था। लोग मुहल्ला शोर गिरान और बाउड़ी की तरफ़ से मेहंदी बाग़ की पहाड़ी के दामन में पहुंच गए और आहिस्ता आहिस्ता पहाड़ी पर चढ़ने लगे। वालिद साहिब अपने कई साथीयों के हमराह सब से आगे थे। और फिर वो तेज़ी से पहाड़ी पर वाक़य कोठी नंबर तीन के बरामदा के पास एक बड़े दरख़्त पर चढ़ गए। इसी बरामदा में उन के क़ायद दूसरे बहुत से लोगों के साथ बैठे हुए हैरत से तेज़ी से बढ़ रहे मजमे को देख रहे थे। जब रेज़ीडेंट ने पूछा कि इन का लीडर कौन है और नवाब साहिब ने मौलवी नन्हे ख़ान साहब और दीगर लोगों को लीडर बता कर पेश करना चाहा तब वालिद साहिब कहते थे कि उस वक़्त उन्हें ऐसा महसूस हुआ जैसे कोई बर्क़ उन के जिस्म में सरायत कर गई हो। उन्हों ने फ़ोरन दरख़्त से छलांग लगाई और दौड़ कर रेज़ीडेंट के सामने पहुंच कर दोनों हज़रात की तरफ़ इशारा करते हुए बुलंद आवाज़ में कहाए ये हैं हमारे लीडर मन्ज़ूर आलम हबीबुद्दीन और जब उन्हों ने दोनों हज़रात के हक़ में जिन्दाबाद का नारा बुलन्द किया तो पूरी पहाड़ी मन्ज़ूर आलम हबीबुद्दीन जिन्दाबाद के नारों से गूंज उठी। वालिद साहिब का ये फ़ैल इंतिहाई ख़तरनाक था । उन्हें गिरफ़तार भी किया जा सकता था। लेकिन वह बाहिम्मत और बेबाक इंसान थे।

मन्ज़ूर आलम साहब और हबीबुद्दीन साहब बेमिसाल बुलंद और अज़ीम शख़्सियत के मालिक थे। साठ साल पहले के इस वाक़य को वह हमेशा याद कर के कहते थे कि मज़हर साहब के हौसले और जुर्रत की बदौलत ही उन्हें अवाम का नुमाइंदा और क़ायद तस्लीम किया गया था।

जमहूरी नवाब

मुहम्मद अहमद ख़ां उर्फ़ प्यारे मियां
जवाईंट सेक्रेट्री अंजुमन ख़ानदान.ए.अमीरिया टोंक

आज़ादी के बाद रियासत टोंक को हिंदूस्तान में शामिल कर लिया गया। रियासत टोंक के पाँच परगनों में से अलीगड़ाए निम्हेड़ाए पिड़ावा और छबड़ा राजस्थान में और सिरोंज मध्य प्रदेश में शामिल किए गए। टोंक और अलीगड़ को ज़िला टोंक में शामिल किया गया। उस वक़्त जनाब इस्माईल अली ख़ां टोंक के नवाब थे। रियासत का प्रीवी पर्स दो लाख अठहत्तर हज़ार रुपय था। हालाँकि रियासत की हुक्मरानी ख़त्म हो चुकी थी लेकिन नवाबी दौर की शान.ओ.शौकत बरक़रार थी। महल नज़र बाग़ के सात दरवाज़ों पर पुलिस के गार्ड रहते थे। नवाब साहब ने रियासत की रिवायतों को बरक़रार रखा था। रमज़ान के माह में इफ़तार और सहरी के वक़्त तोप दाग़ी जाती थी। ईद.उल.फ़ित्र के दिन नवाब साहिब के ग़ुसल करनेए कपड़े बदलनेए सिवईयां खानेए ईदगाह के लिए रवाना होने और पहुंचने ग़र्ज़ ये कि हर मौक़े पर तोप दाग़ी जाती थी। ईद. उल.अज़हा के दिन ईदगाह में ही ऊंट की क़ुर्बानी की जाती थी। बारह वफ़ात पर सात दिन तक महल नज़रबाग़ में ईद.ए.मीलादुन्नबी मुनक़्क़िद की जाती। सात दिन तक महल के सातों दरवाजे हर ख़ास.ओ. आम के लिए ख्ुाले रहते । महल में आने वालों को हर रात मीलाद के ख़त्म होने पर लड्डु तक़सीम किए जाते थे। हुज़ूर सललल्लाहो अलैहे वसल्लम की यौम.ए.पैदाइश की रात बारह तोपों की सलामी दी जाती थी। मेरे वालिद जनाब हामिद अली ख़ान साहब उर्फ़ बुग्गन दादा की जागीर लहन गांव में है और इसी गांव के क़ुर्ब.ओ.ज्वार में मरहूम नवाब जनाब मासूम अली ख़ान साहब और उन के छोटे भाई जनाब याक़ूब अली ख़ान

साहब की भी जागीरें हैं। उन की हवेली का नाम मुबारक महल है। हमारे ख़ानदान के मुबारक महल के मकीनों से बहुत गहरे मरासिम हैं। एक तरह से हम सब अपनी जागीरों पर मुशतर्का ही काशत करवाते चले आरहे हैं। ज़मींदारी की निगहदाशत के लिए वालिद साहिब और जनाब याक़ूब अली ख़ानसाहब के साहिबज़ादे जनबा यूसुफ अली ख़ां ज़्यादा तर लहन में ही रहते हैं। लेकिन जब भी दोनों टोंक आते जनबा मन्ज़ूर आलम साहिब से ज़रूर मिलने जाते थे और हर मुआमले में चाहे वो ज़मींदारी और काशतकारी से मुताल्लिक़ हो या घर और ख़ानदान से ताल्लुक़ रखता हो सिर्फ उन्हीं से मश्वरा लेते और उस पर अमल करते। जनाब मन्ज़ूर आलम साहब के सलाह.ओ.मश्वरे हम सब के लिए हर्फ़.ए. आख़िर होता था।

तारिक़ मियां मेरे क्लास फ़ैलो और गहरे दोस्त रहे हैं। बचपन में उन को और उन के बड़े भाई मसऊद मियां को पहली बार महल नज़रबाग़ में मिलाद शरीफ़ दिखाने मेरे वालिद साहिब ही लेकर गए थे। जब हम उन के घर जाते तो जनाब मन्ज़ूर आलम साहब हम से हमारी तालीम हमारे शौकए हमारे मशाग़ल और शहरो मुलक के हालात ग़र्ज़ ये कि मुख़्तलिफ़ मज़ामीन पर सवाल.ओ.जवाब और तबसरा करते थे। अगर वह किसी काम में मसरूफ़ होते तो हमें पढ़ने के लिए कोई अख़बार दे देते और अख़बार के सफ़हे का हवाला दे कर उस में छपी कुछ ख़ास ख़बरों को पढ़ने की हिदायत भी करते और हमारे रुख़सत होने से पहले उस ख़बर पर ज़रूर तबसरा करते थे। उन की सोहबत में थोड़ा वक़्त गुज़ारने पर ही मालूमात में बेपनाह इज़ाफ़ा हो जाता था।

मन्ज़ूर आलम साहब उन से मिलने आने वालों की तालीम.ओ. तर्बीयत का कोई मौक़ा नहीं गंवाते थे। दुनिया के हर मज़मून पर मालूमात का उन के पास बैश बहा ख़ज़ाना था। उन की गुफ्तगु उन के

बयान में जादू था । हर शख़्स मसहूर हो कर उन को सुनता रहता था। वह क़ौम और अवाम के रहनुमा और बेलौस ख़िदमतगार थै। हर ख़ास.ओ. आम की मदद और रहबरी के लिए हर वक़्त त्य्यार रहते थे। हक़ीक़ी माअनों में वह रहबर.ए.मिल्लत थे।

१९७१ ईः में हुकूमत ने नवाबों के प्रीवी पर्स बंद कर दिए। इस के बाद रियासत टोंक की बहुत सी रिवायतों ने दम तोड़ना शुरू कर दिया। महल नज़र बाग़ से पुलिस गार्ड हटा दीए गएए रमज़ान और ईद पर तोपों की घन गरज ख़ामोश हो गई। बारह वफ़ात पर मीलाद और तोपों की सलामी मौक़ूफ़ हो गई। लेकिन मन्ज़ूर आलम साहब और हबीबुद्दीन साहब ने अवाम के तआव्वुन और हुकूमत की इजाज़त से रमज़ान और ईद पर तोपों को दाग़ना दुबारा शुरू करवाया। दीगर रिवायतों को भी क़ायम रखने की पूरी कोशिश की। १९७४ ईः में नवाब इस्माईल अली ख़ां इंतिकाल फ़र्मा गए। उन की कोई औलाद नरैना ना थी। रियासत टोंक के राजस्थान में मदग़म होने के बाद नवाब का ओहदा और इक़तिदार तो पहले ही ख़त्म हो चुका था। आहिस्ता आहिस्ता नवाब की मुमलेकत और रुतबा भी नज़र बाग़ तक सिमट कर रह गया था। मुल्क की जमहूरी हुकूमत या कोई भी सरकारी ग़ैर सरकारी इदारा अब किसी शख़्स की ताज पोशी टोंक नवाब के ओहदे पर नहीं कर सकता था। हिंदूस्तान के दीगर रियास्तों और मुमलकतों में किसी नवाब या राजा के फ़ौत होने पर उस के ख़ानदान के ही अफ़राद किसी नरैना वारिस की ताजपोशी या राज तिलक कर देते हैं।

मन्ज़ूर आलम साहब और हबीबुद्दीन साहब ने अवाम के तआव्वुन से टोंक नवाब के ओहदे को क़ायम और नवाबी सिलसिला को बरक़रार रखने का फ़ैसला किया। शहर के हजारों लोगों को जमा किया। हर मज़हब.ओ.मिल्लत हर मुहल्ले और बस्ती के बाशिंदगान और ख़ानदान.ए.

अमीरिया के सैकड़ों अफ़राद उन की एक आवाज़ पर जमा हो गए। जिन्हें साथ ले कर वह मुबारक महल पर आए और टोंक नवाब की गद्दी के जायज़ हक़दार जनाब मासूम अली ख़ान साहब की ताजपोशी अवाम के ज़रीय की गई । दोनों हज़रात ने ईद के दिन अवाम के हजारों लोगों को दुबारा मुबारक महल पर जमा किया और नवाब मासूम अली ख़ान साहब को एक बहुत बड़े जलूस के साथ ईदगाह ले जाया गया। नवाब सआदत अली ख़ां की वफ़ात के बाद से हर बार टोंक नवाब की गद्दी नशीनी के लिए तनआज़ा हुआ। लेकिन इस बार कोई तनआज़ा ना हुआ। जिस की ताजपोशी ख़ुद अवाम ने की हो उस की मुख़ालिफ़त कौन कर सकता था। राजस्थान ही नहीं हिंदूस्तान की तारीख़ में भी ऐसी नज़ीर मिलना मुश्किल है जब एक जमहूरी मुल्क में अवाम ने किसी नवाब की ताजपोशी की हो।

मन्ज़ूर आलम साहब और हबीबुद्दीन साहब अवाम के मुख़लिसएमोतबर और मोतमिद नुमाइंदे और क़ायद थे जिन्हों ने जनाब मासूम अली ख़ान साहब को जमहूरी नवाब की हैसियत से रोशनास कराया। और टोंक में नवाबी सिलसिला क़ायम रहा।

ہمارا

آشیانہ

شاخِ گل پر چہک و لیکن

کر اپنی خودی میں آشیانہ!